कुछ सीमा तक फलीभूत हो सकती हैं। हालांकि, ध्यानपूर्वक देखने से स्पष्ट होता है कि यह सीमा निश्चित रूप से सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

फिर, संसार के वैज्ञानिक व तकनीकी उपलब्धियों के परिणाम स्वरूप, एक ही व्यवसाय में संलग्न विभिन्न देशों के लोगों के काम समान तकनीकी प्रक्रिया, मशीनीकरण या स्वचलयंत्रीकरण के स्तर तथा कामगार की निपुणता पर समान मांगों द्वारा वर्णित हैं। चाहे आदमी कहीं पर भी रहे, वैज्ञानिक व तकनीकी प्रक्रिया ने उपलब्ध आवास, सेवाओं व उपभोक्ता माल को अधिकतर बराबरी पर ला दिया है।

और अन्त में, आधुनिक संचार साधन संस्कृति के बाह्य स्वरूपों, व्यवहार व जीवन के तरीके का विस्तृत प्रसारण करते हैं। सिनेमा, टेलीविज़न, समाचारपत्र, संगीत तथा अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के प्रभाव के अन्तर्गत रुचियाँ, व्यवहारिक प्रतिमान व उपभोक्ता स्तर सार्वभौमिक बनने की ओर प्रवृत्त हैं।

वर्तमान परिवार में हो रही कुछ प्रक्रियाएँ भी सार्वभौमिक हैं। संसार के अधिकांश हिस्सों में बच्चों वाली स्त्रियों की बढ़ती हुई संख्या श्रमशक्ति में शामिल है, जन्म-दर गिर रही है और तलाक की संख्या बढ़ रही है।

ये घटनाएँ और विभिन्न देशों में जनता के समक्ष खड़ी अनेक समस्याओं में समानता यह आभास दे सकती है कि उनका जीवन भी समान है। क्या ऐसे निष्कर्ष का औचित्य है?

विभिन्न जीवन-पद्धति की विषय-वस्तु का निर्णय सिर्फ बाह्य रूप से नहीं हो सकता है। इसके लिए एक अति महत्त्वपूर्ण मूल प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है, कि देश की सम्पत्ति, वैज्ञानिक व तकनीकी उपलब्धियों व सामाजिक प्रगति से कौन सबसे पहले लाभ उठाता है? यह या वह कौन सी जीवन-पद्धति जनता को देती है। नौकरी के अवसरों की गारण्टी अथवा भविष्य के प्रति निरंतर अनिश्चितता? समान काम पर समान वेतन अथवा भेदभाव? अपनी शिक्षा और कौशल को निरंतर सुधारने का अवसर अथवा व्यावसायिक तरक्की के मामले पर अनिश्चितता? 'अथवा' की यह सूची बढ़ाई जा सकती है।

दूसरे शब्दों में, लोग कैसे जीते हैं ही जीवन-पद्धति है। क्या पुरुष और स्त्रियाँ अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह से साकार करते हैं, श्रम, राजनीति व सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते हैं। इस गतिविधि की मात्रा पर ही परिवार के मधुर सम्बन्ध और इसलिए उसकी समूची खुशी निर्भर करती है। क्या समाज परिवार को इसकी समस्याओं को सुलझाने में मदद करता है अथवा ये परिवार की, किसी पर निर्भर हुए बिना व्यक्ति की व्यक्तिगत चिन्ता है।

जीवन-पद्धति समूचे परिवार और व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह जैसे परिवार के मध्य सम्बन्धों द्वारा चित्रित होती है या राजनीतिक अर्थशास्त्र के शब्दों में,

सामाजिक-आर्थिक प्रणाली व व्यक्तियों की गतिविधि के मध्य, सम्बन्ध द्वारा वर्णित होती है।

जीवन-पद्धति विविध सामाजिक घटकों, यथा, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक—द्वारा निर्धारित होती है। भौतिक उत्पादन मानव समाज का आधार निर्मित करता है, क्योंकि यह जनता को उनकी जरूरतों की सन्तुष्टि के लिए आवश्यक चीजों को प्रदान करता है और समाज के सामाजिक ढाँचे, इसकी विचारधारा व संस्थाओं को निर्धारित करते हैं। भौतिक उत्पादन में परिवर्तन सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में परिवर्तनों को प्रभावित करता है।

उत्पादन प्रक्रिया में लोग खुद में उत्पादन के सम्बन्ध बनाते हैं। उत्पादन के सम्बन्ध स्वामित्व के स्वरूप से निर्धारित होते हैं, अर्थात्, उत्पादन के साधनों—भूमि, इसकी खनिज सम्पत्ति, जंगल, पानी, कच्चा माल, उत्पादन के संस्थान आदि से लोगों का सम्बन्ध। उत्पादन में और इसलिए समूचे समाज में विभिन्न सामाजिक गुटों की स्थिति स्वामित्व की प्रकृति पर निर्भर करता है। यदि स्वामित्व व्यक्तिगत है (जिसमें उत्पादन के साधन व्यक्तियों के हैं), यह प्रभुता व दासता—शोषण, वर्ग-विरोध के सम्बन्धों का आधार बनता है। यदि स्वामित्व सामाजिक है (जिसमें उत्पादन के साधन जनता के हैं) तब वर्गों के मध्य सम्बन्ध एकता व परस्पर सहयोग का स्वरूप अपना लेता है।

सोवियत संघ में देश की सम्पत्ति राज्य के रूप में श्रम-रत जनता की है।

25 अक्टूबर (7 नवम्बर) 1917 को श्रमिकों ने समस्त सत्ता अपने हाथों में लेकर रूस में एक समाजवादी क्रान्ति की। इसने देश के इतिहास में एक नये युग, समाजवाद के युग का आरम्भ किया। श्रमिकों के स्वप्नों को, समस्त जनों के लिए *न्याय के बारे में वैज्ञानिक सिद्धान्तों को वास्तविकता में बदलने में सोवियत* राज्य पहला राज्य था।

एक बार सत्ता पाकर, श्रमिक जनों ने बड़े उद्योगों, रेलरोडों, बैंकों, भूमि, फैक्टरियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को, दमन के हर स्वरूप को समाप्त कर दिया। सोवियत सत्ता के पहले ही दिन शान्ति पर आज्ञापत्र पारित करके जनता व राष्ट्रों के मध्य शान्ति के लिए एक अपील रखी।

1977 में हंगरी के लेखक गबोर तारोस्के ने टिप्पणी की, "मानव इतिहास में पिछले 60 वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण रहे, रेडियो व अन्तरिक्ष को जाने वाले यानों के आविष्कार, सापेक्षता के सिद्धांत व आणविक ऊर्जा के कारण नहीं, बल्कि सबसे अधिक इस तथ्य में कि अक्टूबर क्रान्ति के विजय के साथ स्वतन्त्रता के लिए, शान्ति व एकता में रहते हुए अपने भविष्य को नियोजित करने में मानवता के लिए एक ठोस नींव प्रथम समाजवादी देश में रखी गई।" समाजवादी आधार पर जीवन का पुनः निर्माण एक आसान कार्य न था। समाजवाद के निर्माण में व्यस्त

रहते हुए लाखों श्रमरत जनों को, पुरुष व स्त्रियों को अतीत की निष्क्रियता को पराजित करना था तथा अव्यवहार्य नियमों, परम्पराओं व प्रथाओं के विरुद्ध संघर्ष करना था। श्रम से, रचनात्मक खोज से नवीन को स्थापित करना था।

युवा सोवियत गणतंत्र सैनिक हस्तक्षेप व गृहयुद्ध, पराजित वर्गों के अवशेषों के प्रतिरोध, पूँजीवादी देशों की आर्थिक नाकेबन्दी तथा आर्थिक अव्यवस्था में ग्रसित था। सामाजिक निर्माण देश की सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी व सांस्कृतिक पिछड़ेपन से रुका हुआ था। समाजवाद के निर्माण में परेशानियाँ इस बात से भी गम्भीर थी कि लगभग 30 वर्षों के लिए सोवियत संघ संसार का एकमात्र समाजवादी देश था और उसे अकेले साम्राज्यवादी शक्तियों की आक्रामक कार्यवाहियों से जूझना था। यह साम्राज्यवादियों की राजनीतिक व आर्थिक नाकेबन्दी से होकर गुजरा। लगभग दो दशकों के अपने संक्षिप्त इतिहास में सोवियत जनों को *साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध देश की सुरक्षा करने का और युद्धोपरान्त* आर्थिक रूप में पूर्वस्थिति लाने के लिए अपनी शक्तियों को मोड़ने को बाध्य होना पड़ा।

नाजी जर्मनी के विरुद्ध 1941-45 के महान देशभक्ति के युद्ध के कठिन परीक्षण में सोवियत जनों को विशेष क्षति उठानी पड़ी। दो करोड़ से अधिक लोग मरे, 70,000 से अधिक शहर व गाँव बर्बाद हो गये, लगभग 32 हज़ार औद्योगिक संस्थान नष्ट हो गये, दसियों हज़ार अस्पतालों, स्कूलों, तकनीकी स्कूलों, उच्चतर विद्यालयों व पुस्तकालयों के साथ 65 हज़ार किलोमीटर रेल लाइन नष्ट हो गयी। और 100,000 सामूहिक व राजकीय फार्म लूट लिये गये—यह उस भयावह युद्ध का परिणाम था। आज भी अपने प्रिय के शोक में डूबे माँओं व पत्नियों को देखा जा सकता है।

इतिहास में ज्ञात अत्यन्त विनाशकारी युद्ध में सोवियत जन की विजय समाजवादी जीवन-पद्धति की जीवष्णुता को स्पष्टतः दर्शाती है। यह युद्धोपरांत देश के पुनः *निर्माण से भी सिद्ध हो जाता है, जो अभूतपूर्व संक्षिप्त काल में पूरा हो गया।* 1918-21 के गृहयुद्ध के पश्चात् देश की अर्थव्यवस्था को पुनः स्थापित करने में 6 वर्ष लगे। महान देशभक्ति के युद्ध में अतुलनीय क्षति के पश्चात् औद्योगिक रूप में पूर्वस्थिति को पूरी तरह से 2½ वर्षों में प्राप्त कर लिया गया।

सोवियत आर्थिक प्रणाली का आधार, जैसा सोवियत संघ के संविधान में कहा गया है, समाजवादी आर्थिक प्रणाली व उत्पादन के साधनों पर समाजवादी स्वामित्व है। समाजवादी राज्य के समस्त नागरिक इसके समान स्वामी हैं। भूमि, इसकी खनिज सम्पत्ति, पानी, जंगल, फैक्टरियाँ, खदानें, खान, बैंक, रेलवोर्ड, जल, वायु व स्थल परिवहन, संचार साधन, शैक्षणिक व सांस्कृतिक संस्थाएँ, सेवा संस्थान, आधारभूत आवासीय कोष—ये सब जनता की सम्पत्ति हैं।

सामूहिक फार्म व सहकारी सम्पत्ति सामाजिक स्वामित्व का एक प्रकार है। इस प्रकार की सम्पत्ति की स्थापना दूसरे दशक के अन्त में तथा तीसरे दशक के आरम्भ में हुई जब किसान स्वेच्छा से कृषि सहकारी समितियों (सामूहिक फार्मों) में सगठित हुए। सामूहिक फार्म की सम्पत्ति में उत्पादन के साधन तथा फार्म के सामूहिक कार्य में आवश्यक अन्य साधन भी आते हैं। भूमि राज्य की है परन्तु यह सामूहिक फार्म को अनवरत नि:शुल्क उपयोग के लिए दी गयी है।

सामूहिक फार्म के एक किसान को सहायक छोटे क्षेत्र रखने की इजाजत है, जिसके लिए उसे भूमि का एक भाग दिया जाता है। सिर्फ परिवार के सदस्य ही सहायक भूमि पर काम करते हैं। भाड़े पर श्रम का उपयोग कानूनी रूप में निषिद्ध है, क्योंकि उसका अर्थ होगा शोषण जो समाजवाद के साथ असम्बद्ध है। सामूहिक फार्म के एक किसान को पशु, कुक्कुट व आवश्यक कृषि उपकरणों को रखने का अधिकार है।

प्रत्येक परिवार को, प्रत्येक सोवियत नागरिक को व्यक्तिगत सम्पत्ति रखने का अधिकार है जिसमें दैनिक उपयोग, व्यक्तिगत उपभोज्य व सुविधा की वस्तुएँ हैं। इसमें काम से उसकी आय, बचत, घर, बगीचा, सहायक भूमि, गाड़ी, नाव आदि आते हैं।

दैनिक उपयोग की वस्तुओं में व्यक्तिगत सम्पत्ति व्यक्तिगत स्वामित्व से मूलत भिन्न है। व्यक्तिगत स्वामित्व का अर्थ होता है उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व। और सोवियत संघ में, हम फिर से कहेंगे, ये सम्पूर्ण जन की सम्पत्ति हैं। सामाजिक अर्थव्यवस्था में व्यक्ति का काम व्यक्तिगत सम्पत्ति का प्रमुख स्रोत है। व्यक्तिगत सम्पत्ति को प्राप्त करने का अवसर प्रत्येक श्रमिक के कौशल व योग्यता, श्रम के निवेश पर निर्भर है। एक अधिक प्रवीण तथा अधिक समर्थवान श्रमिक सामाजिक उत्पादन के बड़े भाग का योगदान करता है और इसलिए समाज से अधिक पाता है।

समाजवादी प्रणाली के विरोधी कम्युनिस्टों पर समस्त सम्पत्ति को निरस्त करने का आरोप लगाते हैं। ऐसा नहीं है। समाजवाद प्रत्येक को सामाजिक उत्पाद के एक भाग को पाने का तथा जैसा चाहे उपभोग करने का अवसर देता है। यह सिर्फ अन्य व्यक्ति के श्रम पर ऐसा करने के अवसर को निषिद्ध करता है।

उत्पादन के साधनों के व्यक्तिगत स्वामित्व की समाप्ति तथा सम्पत्ति के समाजवादी रूप की स्थापना ने परिवार की आर्थिक विषय-वस्तु को बदल दिया है। समाजवाद के अन्तर्गत परिवार समाज का अब सैल नहीं है जिसमें व्यक्तिगत-सम्पत्ति के सम्बन्ध पुनः स्थापित होते हों और उत्पादन के साधन इकट्ठा होते और उत्तराधिकारी को सौंपे जाते हों। साथ ही परिवार अपनी गृहस्थी चलाता है, अपनी आय व व्यय का बजट बनाता है; परिवार के आर्थिक क्रियाकलाप इसके सदस्यों

मनुष्य की भलाई के लिए आधारित अपनी नीति की निरतरता को सुनिश्चित किया। पार्टी ने आगे के दशको के लिए, जनता की समृद्धि को आगे बढाने के लिए एक विराट कार्यक्रम प्रस्तावित किया है, जिसमे खाद्य सामग्री व तैयारशुदा वस्तुओं के उपभोग मे वृद्धि, घरेलू आवश्यकताओ की अधिकतम सन्तुष्टि, अधिक सुमरक्षन बनने, काम व विश्राम की परिस्थितियों मे सुधार आते हैं।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वी काग्रेस के मच से एक बार फिर शान्ति को सुरक्षित करने की, आणविक ज्वाला को निषेध करने की, अविवेकी तथा भयानक शस्त्र दौड को सीमित करने की जोरदार अपील गूंजी। सोवियत जनो को उनके समक्ष रचनात्मक कार्यों को सुलझाने, मनुष्य के लायक भविष्य का निर्माण करने के लिए शान्ति की आवश्यकता है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वी काग्रेस की केन्द्रीय समिति मे लियोनिद ब्रेझनेव ने टिप्पणी की "सोवियत जन भविष्य को विश्वास के साथ देखते हैं। परन्तु यह आशावादिता नियति के कृपापात्र का आत्म-विश्वास नही है। हमारे लोग जानते हैं कि वे हर चीज को स्वय के श्रम से निर्मित कर रहे है और अपने स्वय के खून से सुरक्षित कर रहे हैं। फिर, हम आशावादी हैं क्योंकि हमे श्रम की शक्ति पर विश्वास है, क्योंकि हमे अपने देश पर, अपनी जनता पर विश्वास है। हम आशावादी है क्योकि हमे अपनी पार्टी पर विश्वास है और हम जानते हैं कि जिस मार्ग की ओर यह हमे ले जा रही है वही निश्चित है।"[1]

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की मई 1982 की प्लेनरी बैठक ने सोवियत सघ के खाद्य कार्यक्रम को 1990 तक के काल के लिए स्वीकारा, जिसे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं काग्रेस के निर्णयो के अनुरूप विस्तृत किया है। दसवें पचवर्षीय समय (1976-80) के दौरान प्रमुख कृषि उत्पादो के उत्पादन मे सातवें पचवर्षीय समय (1961-65) की तुलना मे पर्याप्त वृद्धि हुई। अन्न का औसत वार्षिक उत्पादन 13 करोड 3 लाख टन से 20 करोड 50 लाख टन बढ गया, चुकन्दर का उत्पादन 5 करोड 92 लाख से 8 करोड 87 लाख टन अधिक हुआ। अन्य कृषि उत्पादों के उत्पादन मे भी समपूल्य वृद्धि हुई। 15 वर्षों मे प्रति व्यक्ति गोश्त तथा गोश्त के उत्पादो के उपभोज्य मे 41% वृद्धि हुई, दूध व दूध के उत्पादो मे 25%, अण्डो मे लगभग 100%, सब्जियों मे 35%, वनस्पति तेल मे 24% और चीनी मे 34% वृद्धि हुई। हालाँकि, अभी भी यह जनसख्या की माँग से कम है। इसीलिए, श्रमिक जन के

जीवन-स्तर को सुधारने की चिन्ता के सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए पार्टी ने खा... कार्यक्रम को स्वीकारा है, जो कृषि उत्पादों के उत्पादन की वृद्धि हेतु तथा गोश्त, दूध, फल आदि की समान पूर्ति की गारंटी देने के काम को कम समय में सुलझाने हेतु बनाया गया है।

गाँव के पुनः निर्माण के लिए उपाय कार्यक्रम का मुख्य अंग है। इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत सहयोगी कृषि के लिए खाद्य इमारत के साथ आधुनिक सुविधाओं वाले मकानों का निर्माण, अधिक स्कूलों, स्कूल-पूर्व संस्थाओं व क्लबों का निर्माण और ग्रामीणों के लिए चिकित्सा-परिचर्या, व्यापार व दैनिक सुविधाओं में सुधार आते हैं। इस उद्देश्य के लिए आठवें दशक में करीबन 1600 अरब रूबल रखे जाएँगे। यह महज एक बड़ी संख्या नहीं है, यह नगर व ग्रामीण क्षेत्रों के मध्य सामाजिक अन्तर को खत्म करने के लक्ष्य में एक बड़ी नीति है।

खाद्य कार्यक्रम के साथ, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की प्लेनरी बैठक ने उन उपायों की प्रणाली को स्वीकृति दी, जो कृषि-औद्योगिक संस्थान की व्यवस्था को सुधारने, आर्थिक मशीनरी, इसकी कार्यवाहियों व विकास को पूर्णता देने के लिए निर्मित किए गये हैं।

देश के आर्थिक जीवन का मूल लक्ष्य सामाजिक सम्पत्ति की वृद्धि करना, श्रमिक जन की भौतिक व सांस्कृतिक स्तर में समान वृद्धि को प्राप्त करना है। हालांकि, समृद्धि व कल्याण खुद-ब-खुद नहीं आते हैं, उन्हें लाना पड़ता है, अपने खुद के हाथों से निर्मित करना पड़ता है। सोवियत जन जानते हैं कि सिर्फ कार्य द्वारा ही जीवन सुधारा जा सकता है और खुशनुमा बनाया जा सकता है।

समाजवादी जीवन-पद्धति प्रत्येक को काम के अवसर की गारंटी देती है। फिर, सोवियत संघ का संविधान कहता है कि काम के अधिकार के अन्तर्गत रुचि, सामर्थ्य, व्यवसायिक प्रशिक्षण व शिक्षा के अनुरूप व्यवसाय, उद्यम व काम का निष्पक्ष चुनाव आता है। काम के अधिकार के अन्तर्गत अपनी विशेषता के अनुरूप वेतन पाने का अधिकार भी है।

व्यवसायिक व तकनीकी स्कूलों व संस्थाओं के स्नातक को विशिष्टता प्राप्त करने के तुरन्त बाद काम की गारंटी है। इसमें सामाजिक उत्पत्ति, लिंग, राष्ट्रीयता व धार्मिक दृष्टिकोण की कोई भूमिका नहीं है। गर्भवती स्त्री को काम देने से मनाही करना कानूनन दण्डनीय है।

सोवियत नागरिक के लिए काम का अधिकार स्वतः प्रमाणित है। 50 वर्षों से अधिक समय तक सोवियत संघ में कोई भी बेरोजगार नहीं है।

सोवियत जन महसूस करते हैं कि प्रत्येक परिवार का कल्याण व आनन्द सार्वजनिक सम्पत्ति की वृद्धि पर निर्भर रहता है। क्योंकि समाजवादी समाज सार्वजनिक सम्पत्ति पर आधारित है, जो समाज के समस्त सदस्यों को समान

स्थिति पर रखता है (प्रत्येक व्यक्ति के श्रम-निवेश पर निर्भर होते हुए) और, इसलिए, यह सम्पत्ति जितनी समृद्ध होगी उतने ही अच्छी तरह से समूची जनता और विशेषतया, प्रत्येक परिवार रहेगा। देश की सम्पूर्ण सम्पत्ति का तार्किक व पूर्ण उपयोग तथा इसका आर्थिक विकास प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक पहल व श्रम-निवेश पर निर्भर करता है।

काम के प्रति प्रेम के बिना, उच्च कौशल के बिना कोई भी अपने काम को अच्छी प्रकार से नहीं कर सकता है। और यह प्रेम वह है जो व्यक्ति में बचपन से ही पोषित किया जाता है।

जनता के मध्य प्रमुख, निपुण शिल्पी, निर्माणकर्त्ता का नाम सदैव काफी आदर से लिया जाता है। समाजवाद के अन्तर्गत सार्वजनिक व व्यक्तिगत हितों के मज़ान ने लाखों लोगों के लिए रचनात्मक अवसर को अतुलनीय बढ़ा दिया है। श्रम सामूहिक सामाजिक उत्पादन की कार्यक्षमता को बढाने के लिए, गुण को सुधारने के लिए तथा कच्चे माल के किफायती उपयोग के लिए उपयोगी पहल के स्रोत हैं। उन्नत श्रमिक व प्रवर्तक, वे सब जो विवेकपूर्वक काम करते हैं समाज व परिवार में आदर पाते हैं।

अपने काम के स्थान पर श्रमिकों के दृष्टिकोण के बारे में फ्रांस में हुए सर्वेक्षण के समान सोवियत समाजशास्त्रियों ने मास्को में कुईवाईशेव विद्युत उपकरण प्लांट पर एक सर्वेक्षण किया। यह पाया गया कि मत देने वाले 60% फ्रांसीसी पुरुष व स्त्री 'अपने काम को पसंद नहीं करते हैं' जबकि सोवियत श्रमिकों में सिर्फ 9% ने ऐसा उत्तर दिया। "अपने संस्थान में आप सबसे अधिक क्या नापसंद करते हैं ?" प्रश्न के उत्तर में अधिकांश फ्रांसीसी पुरुषों व स्त्रियों ने निर्भरता व आधीनता की भावना का उल्लेख किया। सोवियत श्रमिक जो नापसंद करते हैं वह है श्रम की लय सदैव सन्तोषजनक नहीं है, अर्थात उन्होंने श्रम के प्रबन्ध पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण दिखलाया।

अन्य प्रश्न "क्या आप विश्राम के समय पर अपने काम के बारे में सोचते हैं ?"
भी पर्दाफाश करने वाली है। पूंजीवादी संस्थानों के 60%
...त्मक उत्तर दिया और अन्य 20 ने कहा कि वे घर पर फैक्टरी
...ने की धमकी के मामले पर करते हैं।
गए उत्तर बिलकुल भिन्न थे। 75% अपने
'अच्छी भावना' के साथ बात करते हैं और
में बात करते हैं। परन्तु परेशानियाँ
... के प्रमुख के साथ श्रम के प्रबन्ध के
। भिन्नता, या व्यवसाय के दुःखद चुनाव के
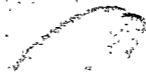
सोवियत पारिवारिक जीवन प्लाट, फैक्टरी के श्रम सामूहिक में, सामूहिक या राजकीय फार्म से, जहाँ इसके सदस्य काम करते है, निकट रूप में जुड़ा है। और यह महज एक आर्थिक सम्पर्क नही है। खुद श्रम सामूहिक को चिंता होती है अध्ययन, व्यवसायिक तरक्की, उत्पादन के प्रबन्ध में सक्रिय भागेदारी, रुचिकर पारिवारिक अवकाश व श्रमिकों के बच्चों के लालन-पालन हेतु अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण की।

सार्वजनिक सम्पत्ति समस्त श्रमरत जनों को जो समाज व स्वयं के लिए काम करते हैं, उत्पादन के समान स्वामी व भागीदार के रूप में जोड़ती है। समाजवादी समाज में सिवा श्रमरत जन के कोई *भी स्वामी नहीं है।*

सोवियत संघ में ऐसा एक भी परिवार नहीं है जिसके सदस्य किसी-न-किसी प्रकार की सार्वजनिक गतिविधि में भाग न लेते हों। श्रम सामूहिकों द्वारा उत्पादन की योजनाओं व संस्थानों के सामाजिक-आर्थिक विकास पर विस्तारपूर्वक बहस होती है। आर्थिक सूचांकों की वृद्धि के साथ सामाजिक विकास की योजनाएँ, काम करने की परिस्थितियों को सुधारने, श्रमिकों के सामान्य शैक्षणिक व सांस्कृतिक स्तर को उठाने, आवास, बच्चों की संस्थाओं व सांस्कृतिक व मनोरंजन की सुविधाओं के निर्माण करने, संक्षेप में, जनता के जीवन के भौतिक व आध्यात्मिक आधार को सुधारने के लक्ष्य से उपायों की परिकल्पना की जाती है। श्रमरत जनों द्वारा विस्तृत बहस हुए बिना कोई भी दीर्घकालीन आर्थिक विकास योजना प्रमुख संस्थाओं द्वारा स्वीकारी नहीं जाती है। इसी पर प्रत्येक परिवार रुचि रखता है, क्योंकि प्रत्येक के जीवन में सुधार इस योजना के सफलतापूर्वक पूरे होने पर निर्भर करता है।

26वीं पार्टी कांग्रेस के पहले, "1981-85 के लिए तथा 1990 में समाप्त होने वाले समय के लिए सोवियत संघ के आर्थिक व सामाजिक विकास की रूप-रेखा" के प्रारूप पर समस्त जनता ने बहस की। श्रमरत जनता ने अनेक प्रस्ताव पेश किए। एक उदाहरण है उजबेक सोवियत समाजवादी गणतन्त्र के सायर-दर्या क्षेत्र के गुलिस्तान जिले के अक्टूबर सामूहिक फार्म से मुनिस्योन अब्सेदोवा का पत्र। सबसे पहले उसने उन परिस्थितियों का वर्णन किया जिसमें उसका परिवार रह रहा है। मैं हंगरी स्तेपी से लिख रही हूँ, जिसे प्राचीन काल में खामोशी व मौत की जमीन के रूप में जाना जाता था। अब यह गुलिस्तां कहलाता है। गर्म रेगिस्तान, जिसकी गर्मी उड़ती हुई चिड़िया के पंखों तक को जला देती थी, अब लोगों को बर्फ के समान सफेद कपास और फलों व अंगूरों की अनेक किस्मों का उपहार देती है। पिछले वर्ष सिर्फ हमारे सामूहिक फार्म ने ही लगभग 4000 टन 'श्वेत स्वर्ण' (जैसा सोवियत संघ में कपास को अलंकारिक रूप में कहा जाता है—सम्पादक), तीन टन प्रति हैक्टर से अधिक के हिसाब से
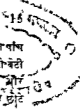
पैदा की। श्रमिकों का औसत मासिक वेतन 250 से 300 रूबल है। पिछले पाँच वर्षों के दौरान 400 परिवार बढ़िया मकानों में बसने चले गये हैं। मेरी बेटी उम्गुल्सन सामूहिक फार्म स्कूल में रूसी पढ़ाती है। मेरे बेटे अब्दुमन्नूर और अब्दुलगफ्फार दोनों मशीन ऑपरेटर है, अबुखाशिम ड्राइवर बन गया है। मेरे छोटे बच्चे अभी भी स्कूल जाते हैं, परन्तु वे भी खाली समय पर काम करते हैं। लड़के फ़ार्म के वर्कशॉप में और लड़कियाँ डेयरी फार्म में काम करती हैं। हम खुश हैं कि हमारे बच्चे अपनी आजीविका को अपने ही गाँव में पा रहे हैं।

उज़बेक महिला लिखती रही "इन दिनों हर घर में रूपरेखा के प्रारूप की बातें होती हैं, भविष्य के बारे में हम एक-सा सोच रहे हैं। हम आभारी हैं कि प्रारूप की प्रमुख चिन्ता हमारे लिए, सामान्य श्रमिक जनों के लिए, जनता की खुशहाली व काम की बेहतर परिस्थितियों को निर्मित करने के लिए है। प्रारूप के आठवें परिच्छेद "बच्चे वाले परिवारों और नवविवाहितों की राजकीय सहायता में वृद्धि", "श्रमरत स्त्रियों की काम करने की परिस्थितियों में, दैनिक जीवन की *सुख-सुविधाओं तथा अवकाश व आराम में अधिक सुधार को सुरक्षित* करना", "ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा-सुविधाएँ व सार्वजनिक सुख-सुविधाओं में अधिक वृद्धि-दर प्रदान करना", से स्त्रियाँ विशेष रूप से खुश हैं। और यह भी जोड़ा गया है कि 1981 से श्रमिक माँओं के लिए एक आंशिक देय अवकाश लागू किया जाएगा ताकि वे अपने बच्चों की देख भाल कर सकें जब तक कि वे एक वर्ष के न हो जाएँ। हम इन उपायों को तहे-दिल से स्वीकार करते हैं।

मैं दस बच्चों की माँ हूँ। मुझे 'हीरोइन माँ' की सम्मानजनक पदवी दी गयी है। सिर्फ हमारे सामूहिक फार्म में ही ऐसी स्त्रियाँ 30 से अधिक हैं। और इससे 3-4 गुना अधिक स्त्रियाँ वे हैं जो सात से नौ बच्चों को पाल रही हैं।

"इस सम्बन्ध में मैं बच्चों वाले परिवारों को सहायता वाले अंश में, विशेष रूप से अधिक बच्चों वालों को" शब्द जोड़ने का प्रस्ताव रखती हूँ। जहाँ पर यह आवास-निर्माण की बात करता है, वहाँ पर मैं "गाँवों में, विशेषकर अछूती भूमि वाले क्षेत्रों में गृह-निर्माण को आरम्भ करना" जोड़ने का प्रस्ताव रखती हूँ। और जहाँ पर प्रारूप अतिरिक्त-मुराल अध्ययन के विकास के बारे में कहता है, वहाँ मैं जोड़ना चाहूँगी "उच्चतर विद्यालयों पर अतिरिक्त-मुराल के पाठ्यक्रम में प्रवेश देने में ग्रामीण युवाओं के लिए विशेषाधिकार स्थितियों को ——।"

[illegible], जिस कानून को बाद स्वीकार किया गया, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं कांग्रेस के निर्णयों में और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी व केन्द्रीय समिति व सोवियत संघ व मंत्रि परिषद के निर्णयों में प्रतिबिम्बित होता है।

सोवियत नागरिक अनुभव करता है कि वह एक राजकीय कर्मचारी है जो देश की समस्याओं का समाधान में भाग लेता है। यह समाजवादी जीवन-पद्धति का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

सामाजिक श्रम में प्रत्येक व्यक्ति की भागेदारी और सार्वजनिक भौतिक सम्पत्ति के वितरण के मध्य अटूट सम्बन्ध समाजवादी जीवन-पद्धति का सार है। यह समाजवाद के मूल सिद्धान्त में प्रतिबिम्बित है "प्रत्येक को उसकी क्षमता के अनुरूप, प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुरूप।"

भौतिक सम्पत्ति का वितरण प्रमुख रूप में मजदूरी व वेतन से होता है। समाजवाद के अन्तर्गत यह परिवार के भौतिक कल्याण का मुख्य स्रोत है।

सोवियत जन यह निश्चित रूप से जानते हैं कि समान काम के लिए उन्हें समान वेतन की गारंटी है। यह पुरुषों व स्त्रियों दोनों पर, उम्र व राष्ट्रीयता के बावजूद समान रूप से लागू होता है। सोवियत संघ में न्यूनतम वेतन कानून द्वारा निश्चित है और किसी भी प्रकार से कम नहीं किया जा सकता है। मजदूरी व वेतन देने के लिए आवश्यक कोष की मात्रा की योजना राज्य बनाता है। और फिर ट्रेड यूनियनें काम के हिस्से तथा वेतन दरों को सुनिश्चित करने में सफलता-पूर्वक भाग लेती हैं। मजदूरी व वेतन को श्रम-निवेश की मात्रा व गुण से निश्चित किया जाता है। इससे यह पक्का हो जाता है कि व्यक्ति अपने काम के परिणाम में, उत्पादकता को बढ़ाने में भौतिक रूप से रुचि लें, यह श्रमिकों को अपने कौशल को निरंतर बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हुए अनुशासित करता है। प्रत्येक संस्थान में प्रोत्साहन के रूप में अतिरिक्त भौतिक प्रोत्साहन-बोनस का उपयोग किया जाता है। श्रमिक जो अपने काम में तथा अपनी सामाजिक गतिविधियों में अच्छे परिणामों को दर्शाते हैं उन्हें राजकीय पुरस्कार दिया जाता है।

अधिक व अपेक्षाकृत कम आय के मध्य के अन्तर को निरंतर कम किया जा रहा है। सातवें दशक में 100 रूबल प्रति व्यक्ति से अधिक मासिक आय वाले श्रमिकों, अन्य कामगारों व सामूहिक कृषकों के परिवारों की संख्या लगभग तिगुनी हो गयी। ऐसे परिवारों की संख्या, जिनकी आय प्रति व्यक्ति 50 रूबल प्रति माह से कम है, भी लगभग इसी मात्रा में कम हो गयी है। इस प्रकार, न सिर्फ आय बढ़ रही है बल्कि श्रमिक जन के सभी समूह के जीवन स्तर में अन्तर भी समाप्त हो रहा है।

किए गये काम के अनुरूप वेत
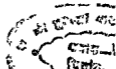
परन्तु सिर्फ एकमात्र स्रोत नहीं है। भौतिक व सांस्कृतिक सम्पत्ति की रा
जिसे नागरिक सामाजिक उपभोग कोष में पाते हैं, निरंतर बढ़ रही है। ये कू
समाजवादी राज्य द्वारा नि शुल्क शिक्षा, स्वास्थ्य परिचर्या, वजीफे, पेन्शन, स
वार्षिक अवकाश, स्कूल-पूर्व संस्थाओं के रख-रखाव आदि के भुगतान हेतु काय
किए गये हैं। इन कोषों के वितरण से राज्य तीव्र अभिसरण के हित में और
समाजवादी समाज के सदस्यो की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बराबर करने मे
राज्य जनसख्या के व्यय व उपभोग के स्वरूप पर एक प्रभाव डालता है।

प्रत्येक सोवियत नागरिक को, जैसा सोवियत सघ के सविधान मे निर्दिष्ट है, वृद्धावस्था मे, बीमारी और पूर्ण या आंशिक अपगता की घटना पर निर्वाह का अधिकार है। यदि कोई परिवार अपने कमाने वाले को खो देते हैं तब राज्य उसे निरतर भौतिक सहायता देता है। सोवियत सघ मे सामाजिक बीमा का एक पहलू यह है कि न ही श्रमिक और न उसके परिवार के सदस्य भविष्य के पेंशन कोष मे कोई वित्तीय योगदान देते हैं।

सोवियत सविधान ने इतिहास मे पहली बार व्यक्ति के आवास के अधिकार को निरूपित किया है। " 'यह अधिकार राज्य व समाज के स्वामित्वयुक्त मकानो के विकास व रखरखाव द्वारा, सहकारी व व्यक्तिगत गृहो के निर्माण हेतु सहायता द्वारा, सार्वजनिक नियत्रण के अन्तर्गत उन मकानो के सही वितरण द्वारा, जो अच्छे मकानो के निर्माण के कार्यक्रम को पूरा करने से उपलब्ध हुए हैं, और कम किराए एव सुविधाओं व सेवाओ के लिए कम खर्च द्वारा सुरक्षित है' " नागरिको को नि शुल्क आवास दिए जाते हैं। सोवियत सघ मे किराया ससार मे सबसे कम है, इसका औसत परिवार की आय के 3% से अधिक नहीं है।

श्रमरत जनता के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने तथा चिकित्सा सेवा के विकास व सुधार को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

स्वास्थ्य सुरक्षा के अधिकार को, जो सोवियत सघ के सविधान द्वारा निरूपित है, राज्य द्वारा चिकित्सा विज्ञान व स्वास्थ्य-निर्माण संस्थाओ के जाल के विस्तार से, उपलब्ध नि शुल्क व प्रामाणिक चिकित्सा परिचर्या, सुरक्षा व सफाई के विकास और सुधार, विस्तृत प्रतिरोधक उपायों के प्रसार; युवा पीढ़ी के स्वास्थ्य के लिए विशेष ध्यान, नागरिकों के दीर्घ सक्रिय जीवन को निश्चित करने हेतु बीमारी की रोकथाम व कमी हेतु शोध द्वारा सुरक्षित किया जाता है।

दसवें पंचवर्षीय काल (1976-80) के दौरान डॉक्टरों की सख्या 8 लाख 34 हजार से 10 लाख हो गयी। अब प्रति लाख लोगों मे 334 डॉक्टर हैं। यह सख्या ब्रिटेन, फ्रास, अमेरिका व जापान जैसे अनेक देशों से दुगुनी है। औसतन

अनेक देशो मे चिकित्सा उपचार पर व्यय परिवार के बजट का बड़ा हिस्सा
ता है। जैसे, एक औसत अमेरिकी श्रमिक कमाने वाले प्रति 90 डालर मे से
) डालर चिकित्सा उपचार पर खर्च करता है। समृद्ध अमेरिकी परिवारों मे ये
वें 4 से 5 गुने अधिक हैं, हालांकि गठिया, जोडो मे सूजन, उच्च रक्तचाप, दिल
रक्त-प्रवाह सम्बन्धी विकार जैसी बीमारियाँ निम्न आय वर्ग के परिवारो मे
से 8 गुना अधिक होती हैं। परिवार के बजट पर यह बड़ा खर्च इस तथ्य के
रण है कि अमेरिका मे चिकित्सा पर व्यय काफी ज्यादा है। कुछ उदाहरण लें,
ने के एक्स-रे का दाम $15, टॉन्सिल के आपरेशन का दाम $500, प्रसूति का
चं $1,150 है। एक सोवियत परिवार इन पर कुछ नहीं खर्च करता है। फिर,
तिरोधक उद्देश्य हेतु बच्चो, नवयुवको तथा कुछ श्रेणी के श्रमिको की वार्षिक
किरसा जाँच आवश्यक होती है। जरूरत होने पर तुरत ही उपचार आरम्भ कर
या जाना है।

स्वास्थ्य परिचर्या के विकास के लिए व्यवस्था सामाजिक उपभोग कोष से भी
ती है। इस प्रकार सामाजिक उपभोग कोष श्रमिक जन के पारिवारिक बजट का
क भारी हिस्सा है।

सत्ता के स्थानीय अग, यथा जनता के डिप्टी के सोवियत सामाजिक उपभोग
ष के उपभोग का निरीक्षण करते हैं। सामाजिक-आर्थिक विकास की योजनाओ
प्रारूप के निर्माण के दौरान श्रम सामूहिक आवास, किन्डरगार्टन व नर्सरी,
स्कृतिक-शैक्षणिक सस्थाओ, अस्पतालो, स्वास्थ्य-सुधारगृहो के निर्माण को और
ता के सर्वांगिक विश्राम हेतु परिस्थितियो के निर्माण को तेजी से आरम्भ करने
चिन्तित होते हैं।

सोवियत सघ के नागरिक जन्म, सामाजिक या सम्पत्ति के स्तर, नस्ल या
राष्ट्रीयता, लिंग, शिक्षा, भाषा, धर्म के प्रति दृष्टिकोण, व्यवसाय, अधिवास के
वजूद कानून के समक्ष समान हैं।

अक्टूबर क्रान्ति के तुरत बाद स्वीकारी गयी 'जागीर व नागरिक पदो की
माप्ति पर' अधिघोषणा ने समस्त पदवियों व उपाधियो को समाप्त कर दिया।
भी नागरिक, समाज मे अपने पूर्ववर्ती स्तर के बावजूद अब समान घोषित किए
ये और समस्त विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया। सोवियत नागरिकों
ो सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों मे समानता की
ारटी प्रदान की गयी है। अनिवार्य व्यक्तिगत गुणों व व्यावसायिक प्रशिक्षण
ाला कोई भी अपनी पसद के क्षेत्र मे काम करने के विस्तृत अवसरो को पाता

है। और कोई भी तरक्की पा सकता है, कार्य-सचालक बन सकता है, देश की प्रमुख सस्थाओं में चुना जा सकता है।

सोवियत सघ मे श्रमिकों, कृषकों व बुद्धिजीवियों के जीवन-पद्धति के एक-से पहलू यानी सोवियत पहलू बन रहे हैं। पूरी तरह से श्रमिक, पूरी तरह से किसान या पूरी तरह से बुद्धिजीवी परिवारों की सख्या निरतर घट रही है। जैसे, अकसर ऐसे परिवार मिलते हैं जिनमें माँ-बाप खेती का काम करते हैं जबकि बड़े बच्चे शहरों मे औद्योगिक सस्थानों पर हैं। या परिवार में पिता श्रमिक है, माँ डॉक्टर और बेटा या बेटी वैज्ञानिक। कुछ ही परिवार हैं जिसमें माँ-बाप बुद्धिजीवी हैं परन्तु उनके बच्चे ऑफिस में कर्मचारी। खुद 'बुद्धिजीवी' शब्द, जिससे अब अकसर आशय समझा जाता है सास्कृतिक व आध्यात्मिक परिष्कृति के एक विशेष स्तर का, आजकल न सिर्फ विज्ञान व कला मे एक कामगार के लिए बल्कि सभी प्रकार के श्रमिकों और कृषकों के लिए भी अधिकतर उपयोग में लाया जा रहा है।

अपने अस्तित्व के प्रथम दिन से ही सोवियत सत्ता ने पुरुषों व स्त्रियों को समान अधिकार दिए। स्त्रियों की समस्या को सुलझाने में राज्य इस तथ्य को स्वीकार करते हुए आगे अग्रसर हुआ कि समाज में पूर्ण स्वतन्त्रता तब तक नही आ सकती है जब तक स्त्रियाँ न सिर्फ कानूनी रूप में बल्कि आर्थिक रूप में भी पूर्णतया स्वतन्त्र न हों 'पुरुषों व स्त्रियों के लिए समान काम पर समान वेतन को निश्चित करने' पर अधिघोषणा इसके अधिनियमों में एक था।

'नागरिक विवाह, बच्चों तथा नागरिक पद के कार्यों के पजीकरण के आरम्भ पर' तथा 'तलाक पर' अधिघोषणाओं ने, जो सोवियत सत्ता की स्थापना के तुरत बाद लागू की गयी थी, विवाह व परिवार के सम्बन्ध मे राज्य की नीति के मूल सिद्धातों की वैधानिकता को निरूपित किया। यदि कोई चर्च में विवाह करना चाहता है, कर सकता है परन्तु अब चर्च परिवार पर पूर्ण अधिकार नही रखता है जैसा क्रान्ति-पूर्व था।

अपना उपनाम—पति का या पत्नी का या एक सम्मान्य उपनाम—चुनने

तथ्य पर भी ध्यान रखा जाता है कि समाज के लिए माँ के रूप में स्त्री की भूमिका अति महत्वपूर्ण है।

सोवियत संघ के संविधान में सोवियत समाज में स्त्रियों की समानता को सुरक्षित रखा गया है

35वाँ अनुच्छेद कहता है, "सोवियत संघ में स्त्रियों व पुरुषों को समान अधिकार है। इन अधिकारों के पालन को शिक्षा व व्यावसायिक एवं रोजगारी प्रशिक्षण में पुरुष के समान पहुँच, नौकरी, पारिश्रमिक व तरक्की में और सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक गतिविधि में समान अवसर द्वारा तथा स्त्रियों के लिए विशेष श्रम व स्वास्थ्य सुरक्षा उपायों द्वारा, माँओं के काम के लिए परिस्थितियों को बनाने के द्वारा, माँओं व बच्चों के लिए भौतिक व नैतिक सहायता और कानूनी सुरक्षा के द्वारा, साथ में प्रसूता व बच्चों वाली स्त्रियों को सवेतनिक अवकाश व अन्य लाभ के द्वारा, और छोटे बच्चे वाली स्त्रियों के श्रम के समय में क्रमश अवनति द्वारा सुरक्षित किया जाता है।"

राज्य ने परिवार की सु क्षा का उत्तरदायित्व ले रखा है।

"परिवार जीवन को पूर्णता प्रदान करता है, परिवार खुशियाँ लाता है, परन्तु प्रत्येक परिवार, विशेष रूप से समाजवादी समाज के जीवन में, राज्य के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटक है," प्रसिद्ध बाल-शिक्षक और लेखक ए० एस० मकरेन्को ने कहा। इसका अर्थ हुआ सोवियत राज्य परिवार के लोगों के सब में रुचि रखता है, जो समाज के द्वारा सुरक्षित है, उन लक्ष्यों व आदर्शों को निर्मित करता है जिसके लिए ये समाज का निर्माण हुआ है।

स्त्रियों की परिवर्तित सामाजिक स्थिति, उनकी स्वतन्त्रता व पुरुषों के बराबर समान अधिकार परिवार में मनोवैज्ञानिक वातावरण को सुधारने की एक प्रमुख शर्त है। समाजवाद के अन्तर्गत पारिवारिक रिश्तों के विकास में गृहस्थी के कामकाज का परिवार के सदस्यों के मध्य तार्किक वितरण एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। स्त्री की सामाजिक व श्रम गतिविधि, उसकी भौतिक स्वतन्त्रता परिवार में, समाज में उसकी समानता को सुरक्षित करती है और उसकी मानवीय गरिमा को बढ़ाती है।

सोवियत संघ की जनसंख्या 26 करोड़ से अधिक है। चाहे कोई बाल्टिक समुद्रतट के छोटी मछुवारी बस्ती में या काकेशस में दाघेस्तान के पहाड़ी गाँव में या खारकोव जैसे एक बड़े औद्योगिक शहर में जन्म ले, चाहे उसने अपने माँ के ममता भरे पहले शब्दों को इस्टोनियाई, लिथुआनियाई या युक्रेनी भाषा में सुना हो— वह सोवियत समाजवादी गणतन्त्र के बहुराष्ट्रीय संघ का एक नागरिक है, जहाँ लोगों के मध्य कोई राष्ट्रीय झगड़ा नहीं है। रूसी और आर्मेनियाई, नेनेट और तातार, बेलोरूसी और अवेरियन—ये सभी एक बड़े परिवार के भाई हैं। विभिन्न

लोग, राष्ट्रीयताएँ, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक हर बात पर एक-दूसरे की मदद करते हुए मिल-जुल कर रहते हैं।

स्पष्ट है, देश में मिश्रित विवाह होते हैं, पति एक राष्ट्रीयता का है और पत्नी दूसर।

अनेक राष्ट्रों व राष्ट्रीयताओं को संगठित व एकत्रित करके, समाजवाद श्रेष्ठ राष्ट्रीय परम्पराओं व नागरिक जीवन के स्वरूपों के लिए विकास के विस्तृत पहलुओं को स्पष्ट करता है। शताब्दियों से निर्मित हर चीज हरेक द्वारा सुरक्षित है।

चाहे कहीं पर कोई व्यक्ति रहे, चाहे कहीं पर वह स्वयं को पाए, वह अपने पैतृक घर को ही याद रखता है।

और साथ ही एक सोवियत नागरिक, उसकी राष्ट्रीयता चाहे जो हो, जहाँ कहीं भी वह जाए—मास्को, मिन्स्क, बाकू या कहीं भी, वह कभी भी अजनबी नहीं महसूस करता है, हर जगह वह घर पर है—देश का स्वामी है। एक बड़े परिवार का, बहुराष्ट्रीय गृहभूमि के होने की भावना प्रत्येक सोवियत नागरिक को शक्ति प्रदान करता है, और वह अपने देश के योग्य बने इस हेतु जीने व काम करने का उद्यम करता है।

सोवियत संघ में फलने-फूलने वाली संस्कृति अपनी विषय-वस्तु में समाजवादी, राष्ट्रीय स्वरूप में भिन्न और भावना व चरित्र में अन्तर्राष्ट्रीय है। यह संस्कृति समस्त सोवियत नागरिक की पैतृक सम्पत्ति है।

इसके अन्तर्गत अग्रगामी रूसी संस्कृति की महान उपलब्धियाँ हैं, जिसने संसार को लोमोनोसोव, पुश्किन, टाल्स्टाय, गोर्की, चैकोव्स्की, मेन्डेलेयेव, रेपिन और अन्य विख्यात विद्वान, कवि, लेखक, संगीतकार व चित्रकार दिए हैं। इसके साथ ही समाजवादी समाज के निर्माण की प्रक्रिया में प्रत्येक राष्ट्र की जो कुछ भी श्रेष्ठ व अत्यन्त बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है उसे सावधानीपूर्वक सुरक्षित रखा

: करोड 40 लाख प्रतियाँ, ज्यूल वर्न की 1 करोड 90 लाख प्रतियाँ, थियोडार
'गेर की पुस्तकों की 1 करोड 80 लाख प्रतियाँ आदि है। 200 जिल्द में
विश्व साहित्य का पुस्तकालय' तथा 'बच्चों के लिए विश्व-साहित्य का
पुस्तकालय' व अन्य अनेक जिल्दों के संस्करणों, जिनमें विदेशी लेखकों के श्रेष्ठ
यन हैं, की छपाई देश की पुस्तक-छपाई की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। प्रति वर्ष
समाजवादी देशों से कोई 60-70 फिल्में और पूँजीवादी देशों से 50-60 फिल्में
खरीदी जाती हैं। सिनेमा कला के क्षेत्र में 100 देशों से और थियेटर व संगीत
की गतिविधियों में 120 देशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं। सोवियत संघ में विदेशी
कलाकार प्रतिवर्ष औसतन 6000 संगीत महफिल व नाटकों का प्रदर्शन
करते हैं।

सारे सोवियत जनों में दया व न्याय के उच्च मानववादी आदर्श कूट कूट कर
भरे हैं। यह जनता के हितों व आवश्यकताओं के विकास पर एक लाभदायक
प्रभाव डालते हैं, स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को उन्नत करते हैं और उनके प्रेम को
समृद्ध करते हैं।

समाजवादी सांस्कृतिक क्रान्ति ने विभिन्न राष्ट्रों के सांस्कृतिक विकास में
राष्ट्रीय महत्व में पूर्ववर्ती असमानता को समाप्त कर दिया है। इसे सुदूर
उत्तर पूर्व में रह रहे चोकोटी लोगों, जिनके पास क्रान्ति-पूर्व वर्णमाला भी न थी,
के एक प्रतिनिधि, पेशे से लेखक यूरी रित्थेउ ने सही ढंग से कहा है : 'अपने
[illegible] से बाहर आकर और स्कूल को जाते हुए मेरे बचपन के छोटे कदमों ने बिना
[illegible] सदियों सालों-वर्षों को सुरत पार कर ली।"

ऐसे समाज में रह रहे व्यक्ति के लिए, जहाँ हर कोई इसके प्रशासन में भाग
ले सकता है, क्या हो रहा है इसका स्पष्ट विचार रखना विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण
है, जो बिना वैज्ञानिक ज्ञान के सोचा नहीं जा सकता है। 1978 में
सोवियत संघ में सामान्य माध्यमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी। जो ऐसा करना
चाहते हैं वे व्यावसायिक माध्यमिक व उच्चतर स्कूलों में अपना अध्ययन को जारी रख
सकते हैं जहाँ शिक्षण शुल्क निःशुल्क है और छात्रों को वजीफा भी मिलता है।
माध्यमिक व उच्चतर स्कूल दोनों के पाठ्यक्रमों में प्रकृति व समाज के विकास
नियमों व सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध विषय हैं। विभिन्न सामाजिक व
[illegible] पाठ्यक्रम, [illegible] और कौशल बढ़ाने वाले पाठ्यक्रम आदि
लोगों को विज्ञान की किसी भी शाखा में अपनी शिक्षा को जारी रखने का अवसर
प्रदान करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] की [illegible] भी बढ़ती जा रही है।
[illegible] विभिन्न [illegible] व [illegible] किए गए हैं जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय [illegible],
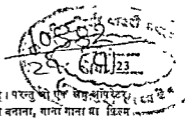
नर्तक या चित्रकार बनने की शिक्षा दी जाती है। परन्तु जो एक लेथ-ऑपरेटर, बैंकर, मुनीम या ट्रैक्टर ड्राइवर बने रहते हुए चित्र बनाना, गाने गाना या फ़िल्म बनाना चाहते हैं, उनके लिए भी काफी अवसर हैं। शहरों, प्रान्तीय केन्द्रों, बस्तियों व बड़े संस्थानों में संस्कृति के महल व गृह, क्लब, विज्ञान व तकनीक के गृह और भाषण-कक्ष खोले गये हैं। अपने अवकाश के समय में 1 करोड़ सोवियत जन कला क्षेत्रों, स्टूडियो में अध्ययन करते हैं और जन थियेटरों में अभिनय दिखाते हैं, जो कलात्मक रचनात्मकता में उनकी आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु इन सांस्कृतिक-शैक्षणिक संस्थाओं पर निर्मित हैं।

समाज व परिवार के आध्यात्मिक जीवन में प्रचार साधन एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। पाठकों व दर्शकों की आध्यात्मिक आवश्यकताओं को विकसित व सन्तुष्ट करने को, आध्यात्मिक मूल्यों के प्रसारण के लिए और उन पर प्रत्येक की पहुँच के लिए समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो व टेलीविज़न का काम करते हैं।

सोवियत संघ में विवेक की स्वतन्त्रता कानून द्वारा स्थापित है। सोवियत संघ का संविधान नागरिक के विवेक की स्वतन्त्रता की गारंटी देता है, अर्थात कोई भी धर्म का प्रचार करने या नहीं करने और धार्मिक पूजा-पाठ करने या नास्तिकता का प्रचार करने का अधिकार देता है। चर्च राज्य से पृथक है और स्कूल चर्च से। इसका अर्थ हुआ कि राज्य व इसके अंग आस्तिकों या उनके संगठनों की धार्मिक गतिविधि में हस्तक्षेप नहीं करते हैं और धार्मिक संगठन राजकीय मामलों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। सोवियत संघ में कोई भी आस्तिकों के विरुद्ध नहीं है,

औचित्य स्थापन के प्रस्तावों को पेश करता है। वनेरी सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत का एक डिप्टी है और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं कांग्रेस का एक प्रतिनिधि था। वह खेलकूद में और शौकिया रचनात्मक गतिविधि में भाग लेता है। वह अध्ययन करता है, काफी पढ़ता है, समाचार पत्र के लिए लिखता है और फिल्में देखना पसंद करता है। उसका अच्छा व संगठित परिवार है और उसके कई मित्र हैं। ये सभी सम्बन्ध एक-दूसरे के पूरक बनकर परस्पर गुंथे हुए व्यक्ति के विभिन्न गुणों को स्पष्ट करते हैं। क्योंकि तुम जितना अपने आसपास के लोगों को दोगे, उतना ही समृद्ध तुम होगे।

जब कोई व्यक्ति यह अनुभव करता है कि दूसरों को उसकी जरूरत है तब उसमें ताकत आ जाती है, वह श्रेष्ठ बन जाता है। वह स्वार्थी नहीं बना रहता है बल्कि दूसरों के प्रति, अपने नजदीक के लोगों और अपने से दूर दोनों के प्रति आतुरता दर्शाता है, वह अपने परिवार की और समूचे लोगों की खुशियों के प्रति चिंतित होता है।

सोवियत जन का जीवन ऐसे कार्यों व उपलब्धियों से भरा हुआ है जो इस बात को रोज सिद्ध करता है। युवा सैनिक अलेक्जेन्डर मत्रोसोव के अमर कृत्य को याद किया जा सकता है जिसने 1941-45 के महान देशभक्ति के युद्ध के दौरान अपने शरीर से शत्रु के तोपों को रोका ताकि अपने साथियों को मृत्यु से बचाया जाए और सोवियत क्षेत्र के एक भाग को पुनः प्राप्त करने का उन्हें अवसर मिल सके। बेलोरूसी ट्रैक्टर-ड्राइवर मिखाइल मोरोज की मृत्यु शान्तिकाल में हुई, युद्ध के दौरान जमीन में दबी रह गयी बारूद उसके हाथों में फटी, जब उसने पास में काम कर रहे लोगों को बचाने के लिए उसे दूर फेंकने का प्रयास किया।

ये घटनाएँ विभिन्न समय पर हुईं, परन्तु इनमें से प्रत्येक सोवियत चरित्र के सार, उच्चतम साहसिक काम को दर्शाती है।

व्यक्ति के श्रेष्ठ गुण दुरूह, संकटमय स्थितियों में अत्यन्त प्रभावपूर्ण रूप में व्यक्त होते हैं। परन्तु सोवियत दैनिक जीवन में भी सहोदर की श्रेष्ठ भावना को दर्शाते हैं। अनेक सोवियत जनों के लिए यह एक निर्विवाद तथ्य है कि अपने आसपास के लोगों के प्रति दृष्टिकोण ही व्यक्ति की नैतिकता का प्रमुख मानदण्ड होता है। सोवियत जन का सामूहिकवाद, मानववाद, आशावाद परिवार के सदस्यों तथा सहयोगी-कामगारों के साथ उनके सम्बन्धों में व्यक्त होता है।

औद्योगिक संस्थान में प्रमुख श्रमिक अपनी छत्रछाया में उन्हें ले लेते हैं जो पिछड़ रहे हैं और उन्हें निपुणता प्राप्त करने में सहयोग देते हैं।

समान भलाई के लिए जो अपनी सारी शक्ति व सृजनात्मक उत्साह लगा देते हैं उन्हें अत्यन्त आदर मिलता है। श्रम सामूहिक का उन लोगों के लिए जो कामचोर हैं, नशाखोरी करते हैं, समाज के मामलों पर उदासीन रहते हैं, समाज की

कीमत पर जीना चाहते हैं, नकारात्मक दृष्टिकोण भी स्वाभाविक है। ऐसे लोग अभी भी हैं। समाज मुफ्तखोर, धोखेबाज, अनुशासनहीन व्यक्ति के प्रति असहनशील रहता है। आरम्भ मे पिछड जाने वालो को मदद का हाथ दिया जाता है, सम्भवत उस व्यक्ति ने अभी भी काम करना न सीखा हो, इच्छा-शक्ति क्षीण हो, या उत्तरदायित्व की भावना उसमे पोषित न हो''' परन्तु जानबूझ कर आलसीपन, दुर्व्यवहार, मुफ्तखोरी की भर्त्सना होती है। श्रम सामूहिक के समान सोवियत समाज व्यक्ति को उसके देश से प्राप्त ईमानदार श्रम देने का हरसम्भव प्रयास करता है।

यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि समाजवादी समाज में व्यक्तियो के मध्य सम्बन्धो मे कोई भी मतभेद या विवाद नही उठते हैं जो झगड़े मे बढ जाएँ, कि यहाँ सभी लोग अच्छे हैं और कि बुराई हमेशा दण्ड पाती है। वास्तव मे ऐसा नही है। कुछ व्यक्तियो व परिवारो के जीवन समाज द्वारा मान्य सिद्धान्तो के अनुरूप कभी-कभी असफल होते हैं और व्यवहारिक जीवन अभी भी अक्सर समाजवादी आदर्श से नीचे रहता है।

समाजवादी जीवन-पद्धति समाज की प्रदत्त अवस्था पर सामाजिक व सास्कृतिक अन्तरो को प्रतिबिम्बित करती है। यह समझने योग्य है, क्योंकि समाजवाद एक निरतर विकसित समाज है।

समाज के प्रयास उन सबको हटाने मे निर्दिष्ट हैं जो योग्य जीवन जीने मे लोगो को रोकते हैं। सोवियत जन के हित ऊँचे उठ रहे हैं, उनका सामान्य शैक्षणिक व सास्कृतिक स्तर उठ रहा है, और श्रम सामूहिक मे एक नैतिक व मनोविज्ञानी वातावरण निर्मित हो रहा है जो अनचाहे झगडो को निषेध करता है. काम और घर पर कम्युनिस्ट नैतिक मूल्यों पर जोर देने से और लालफीतेशाही

चुनाव का समय . चुनाव की स्वतंत्रता

रिवार के निर्माण की प्रक्रिया समझने हेतु विवाह के लिए प्रेरणा का, रिवार की रचना के साथ जुड़ी आशाओं व व्यवस्थाओं का सही विचार होना चाहिए। महत्त्वपूर्ण तो यह है कि ये प्रेरणाएँ व व्यवस्थाएँ समाज के नैतिक वातारण और व्यक्ति विशेष के आध्यात्मिक विकास की मात्रा दोनों को प्रतिबिम्बित करती हैं।

अनेक अध्ययनों से स्पष्ट है कि सोवियत समाज में विवाह के लिए प्रेरणा, न व सम्पत्ति के प्रभुत्व से और आर्थिक विचार से मनुष्य की मुक्ति की प्रक्रिया ो प्रतिबिम्बित करते हैं।

लेनिनग्राद में किए जनमत में 65% पुरुषों व 78% स्त्रियों ने और ओरेनर्ग प्रान्त के ग्रामीण क्षेत्रों में किए गये जनमत में 80.5 % पुरुषों व 77.4% त्रियों ने वैवाहिक सम्बन्ध आरम्भ करने में मुख्य उद्देश्य प्रेम, समान हितों व ष्टिकोणों और परस्पर आकर्षण को माना।

जीवन साथी के चुनाव में एक उद्देश्य के रूप में प्रेम को सन्तोषजनक विवाह लिए एक अटल शर्त माना गया है। मिन्स्क में किए गये जनमत ने दर्शाया कि खी परिवार के 75% स्त्रियों और 63% पुरुषों ने विवाह के लिए उद्देश्य में प्रेम ा उल्लेख किया। दुखद विवाहों के मामले में 27.6% स्त्रियों व 17.7% पुरुषों प्रेम को अपना उद्देश्य बतलाया।

पर्म में जनसंख्या के विभिन्न हिस्सों में किए गये अध्ययनों ने दर्शाया है कि धिकांश लोगों ने व्यक्तित्व की आध्यात्मिक समृद्धि की एक अभिव्यक्ति के रूप प्रेम को अत्यधिक महत्त्व दिया है (देखें सारणी, पृष्ठ 27 पर)।

जैसा सारणी से स्पष्ट है, विवाह में प्रेम के कम महत्त्व या इसे महत्त्वहीन नने वालों का प्रतिशत कम है।

सोवियत जन का विशाल बहुमत प्रेम को विवाह का आधार मानता है। र वह परिवार सुखी है जहाँ प्रेम की तीव्र इच्छा व प्रेम का आदान-प्रदान इसमें दयों के जीवन को दिव्य बनाता है। परन्तु प्रेम एक बहुआयामी विचार है। , प्रेम भरे उपहार व प्रेम के प्रतिदान के बारे में समाचार पत्रों, रेडियो व

सारणी

	विवाह मे प्रेम आवश्यक है	इसकी भूमिका अतिरंजित है	विवाह मे प्रेम महत्वपूर्ण नही	अन्य विचार
श्रमिक	75 2	14.3	6.2	4 3
दफ्तर के कर्मचारी	63 2	19 2	9 6	8 1
इंजीनियरिंग व तकनीकी कर्मचारी	78.1	12.0	2 1	7 8
छात्र (प्रथम पाठ्यक्रम)	82 9	6.8	1 5	8 8
छात्र (द्वितीय पाठ्यक्रम)	70.5	16 2	1.5	11.8

टेलीविज़न के कार्यक्रमो मे गर्मागर्म बहस चल रही है। इस खुले विवाद मे युवा व परिपक्व दोनो ही स्वेच्छा से भाग ले रहे हैं। पुराने, स्त्री-पुरुष के असमान सम्बन्ध अब अपना प्रभाव नहीं रखते हैं, जबकि नये सम्बन्ध अभी भी निर्माण की अवस्था मे हैं।

हालांकि अनेक सोवियत जन परिवार को बनाने व इसके स्थायित्व के लिए प्रेम को अत्यन्त आवश्यक मानते है, तथापि प्रत्येक अपने ही तरीके मे इस भावना को व्यक्त करते हैं—*कुछ अत्यन्त दुरूह दृष्टिकोण अपनाते हैं जबकि अन्य सरल* विचार की ओर प्रवृत्त हैं।

हम कुछ राय के उदाहरण देंगे

थे:

माँगो को निर्धारित करता है। ऐसे सम्बन्ध भावना की गहन गहराई से लोगों को सम्पन्न करते हैं।"

प्रेम की क्षमता सर्वप्रथम व्यक्ति के आध्यात्मिक जगत् द्वारा निर्धारित होती है। और स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों की विषय-वस्तु मुख्य रूप से उनके आध्यात्मिक विकास के स्तर पर निर्भर करती है।

'प्रेम' के उस प्रकार में जहाँ 'विचार की दरिद्रता व भावना-शून्यता' हों वहाँ आज कुछ को ही 'क्षुद्र आवश्यकताओं' का दर्शन आरोपित करता है। वे सुखी हैं जो प्रेम को शारीरिक व आध्यात्मिक आनन्द के एक स्रोत के रूप में देखते हैं।

रोमा रोलां ने लिखा "प्रेम उतना ही लायक होता है जितना लोग इसका अनुभव करते हैं। निष्कलंक के लिए सब कुछ निष्कलंक है। एक दृढ़ व स्वस्थ" प्रेम ' के साथ सब कुछ निष्कलंक लगता है, प्रेम ' महान आत्मा में छुपे श्रेष्ठ को बाहर लाता है। प्रिय को सिर्फ वह जो योग्य है बताने में प्रेमी विचारों व कृत्यों में आनन्द प्राप्त करता है, जो प्रेम द्वारा निर्मित खूबसूरत बिम्ब के समरूप है। यौवन का स्रोत, जिसमें आत्मा पुनः जीवित होती है, जो शक्ति व आनन्द की जगमगाहट—अर्थात् जो अद्भुत व हितकारी है, जो हृदय में प्रसारित होता है।"[1]

सोवियत जनों के सम्बन्धों में मानवीय विश्वसनीयता पर विश्वास और इस तथ्य पर विश्वास कि एक सौम्य विकसित व्यक्ति स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की उन्नत भावनाओं का गान करता है, निरंतर मजबूत हो रहा है। भावना, बुद्धि, दया और संस्कृति के उच्च स्तर की सम्पन्नता व बहु-आयाम—ये वे हैं जो परिवार को बसाने की चाह वाले अपने साथी में देखना चाहेंगे। न सिर्फ शारीरिक सौंदर्य से कोई प्रभावित होता है बल्कि विचारों, कर्मों, आवेगों के सौंदर्य से कोई प्रभावित होता है। परन्तु हमें मामले को इतना सरल नहीं करना चाहिए। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध अत्यन्त दुरूह होते हैं। यहाँ भ्रम, आरम्भ-पंच, आशाओं में टूटन, दुःख, गम्भीर मानवीय नाटक होते हैं। हालाँकि प्रेम न सिर्फ प्रेमियों के समान हितों व अनुभवों का, बल्कि अपने सम्बन्धों के स्थायित्व के लिए उत्तरदायित्व वहन करने में प्रत्येक साथी की सजग इच्छा का पूर्वानुमान करता है।

विवाह करने वाले प्रेम के अलावा अन्य उद्देश्यों का भी उल्लेख करते हैं। कुछ इसलिए विवाह करते हैं क्योंकि वे अकेले नहीं रहना चाहते या करुणा की भावना से निर्देशित होते हैं, और कुछ विवाह इसलिए करते हैं क्योंकि 'ऐसा करने का समय आ गया है।' फिर कुछ भौतिक विचारों से प्रेरित हैं। लेनिनग्राद

---

1. रोमा रोलां, ज्याँ-क्रिस्तोफ, एडीशन्स एल्बिन मिचेल, पेरिस, 1948, पृ॰ 339
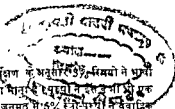
के समाजशास्त्रियो द्वारा किए गये एक सर्वेक्षण के अनुसार 5% स्त्रियो ने भावी पति के भौतिक सुखो को विवाह का कारण माना है। पुरुषों ने इसे कभी भी एक उद्देश्य नही बतलाया। ओरेन बर्ग क्षेत्र मे जनमत में 5% स्त्री-पुरुषों ने वैवाहिक सम्बन्ध के लिए भौतिक विचार को कारण माना है।

इस प्रकार, अधिकांश सोवियत जनो के लिए प्रेम-विवाह का प्रमुख उद्देश्य है। साथ ही, जाँच-पड़ताल से यह भी स्पष्ट होता है कि इस 'आदर्श' दृष्टिकोण से अकसर पति-पत्नी के मध्य सम्बन्धो मे दृढ़ता आ जाती है : पारिवारिक जीवन की एकसारता कभी-कभी इसके साथ संघर्ष की स्थिति ला देती है। रोज की जिन्दगी व्यक्ति के अनेक पहलुओ को प्रदर्शित कर सकती हो, जो दूसरे को अस्वीकार्य हो, परन्तु समझ व धैर्य दिखाते हुए इन्हे विचारना होगा ताकि विवाह को बचाया जा सके। इसलिए प्रेम के लिए विवाह को भी एक तार्किक सिद्धात पर आधारित करना चाहिए। तब निराश होने की कम सम्भावना होती है ऐसे लोग जो अपने सम्बन्धो को गम्भीरतापूर्वक लेते हैं, वे पारिवारिक जीवन के पक्ष-विपक्ष पर अपने निष्कर्ष मे अधिक दृढ़ रहते हैं। यहाँ रुचियो व आशाओ के प्रति अभिमान कम है और तार्किक दृष्टिकोण अधिक है, कम वादें हैं और जो कुछ भी परेशानियाँ आती हैं उनसे जूझने की अधिक इच्छा है।

दूसरा महत्त्वपूर्ण विचार है कि क्या जीवन-साथी का आसपास के लोगो के प्रति दृष्टिकोण गरिमा, शालीनता, विवेक की भावना के अनुरूप है? यह विशेष रूप से उन मामलों मे है जहाँ दो व्यक्तियो का प्रेम बच्चों व नजदीकी रिश्तेदारो से सम्बन्धित हो।

सोवियत समाज स्वार्थ के उद्देश्य हेतु विवाह को स्वीकार नहीं करता है, जहाँ भौतिक विचारो को प्राथमिकता दी जाती हो, परन्तु नैतिक विचार स्वीकारे जाते हैं, जैसे जब व्यक्ति अकेलेपन के कारण विवाह करता है, क्योंकि उसने अनेक लोगों मे से एक को चुना जिस पर वह आकर्षित है।

जीवन-साथी के चुनाव मे एक मुख्य उद्देश्य के रूप मे प्रेम को प्रेरित करने की दो महत्त्वपूर्ण परिस्थितियाँ होती हैं। समाजवादी समाज मे युवा जोड़ो को काम की गारटी है और परिणामत परिवार के प्रत्येक सदस्य को व्यवसायिक जीवन अपनाने का एक अवसर मिलता है। इसलिए परिवार का भौतिक सुख खुद जीवन-साथी पर, उसके श्रम की गतिविधि पर निर्भर है। और फिर, अनेक नवविवाहित आवश्यकता होने पर अपने माँ-बाप की सहायता पर भरोसा रख सकते हैं।

अनेक युवजन अपने माँ-बाप से विवाह करने की इजाजत लेते हैं और पाते हैं। परन्तु वर या वधू के चुनाव मे माँ-बाप की भागेदारी का चरित्र व्यक्तिगत सम्पत्ति के सिद्धात पर आधारित एक समाज से भिन्न होता है। वहाँ रिश्तेदार अक्सर सावधानीपूर्वक यह सोचते हैं कि किस प्रकार से—पैसे, वास्तविक भू-सम्पत्ति,

पदवी या श्रम शक्ति से—विवाह परिवार को समृद्ध कर सकता है। सोवियत परिवार में अमूमन माँ-बाप की सलाह लेने का विचार भौतिक वस्तुओं के सम्भाविक संग्रह या कमी के कारण नहीं ली जाती है बल्कि परिवार के भावी सदस्य के व्यक्तिगत गुणो व दोषो के कारण। उनकी राय को आदर देते हुए यह माँ-बाप की नैतिक सत्ता को एक भेंट है। सर्वेक्षण के अनुसार अपने बेटे या बेटी के पसंद को अस्वीकारने वालो का प्रतिशत नगण्य है, जो यह दर्शाता है कि अधिकतर मामलों मे अपनी ओर से माँ-बाप अपने बच्चो की राय व भावना पर आदर व विश्वास करते हैं।

परिवार के हितो को सुरक्षित करने मे, सोवियत कानून उन उदाहरणो की कल्पना करता है जब वैवाहिक,जीवन मे प्रवेश करने का निर्णय काफी जल्दी में ले लिया गया हो। इसीलिए सम्बद्ध गणराज्यों के विवाह व परिवार पर कानून विवाह करने के पूर्व इतजार का समय रखता है ताकि युवाजन अपने निर्णय की जाँच कर सकें। जैसे, रूसी फेडरेशन मे नागरिक पजीकरण ऑफिस मे प्रार्थना-पत्र पेश करने के एक माह के बाद विवाह सम्पन्न होता है।

स्त्री व पुरुष के मध्य सम्बन्ध का निर्धारण उनके व्यक्तिगत गुणो द्वारा होता है। जीवन-साथी के रूप मे कौन उसे पसंद आता है इसका निर्णय व्यक्ति स्वयं लेता है। इसका आशय हुआ जो परिवार बसाने चले हैं उनमे एक-दूसरे को समझने मे, एक-दूसरे की मदद करने मे, एक-दूसरे की चिंता करने मे, परस्पर वचनबद्धता। पति-पत्नी द्वारा एक-दूसरे के दृष्टिकोणो, रुचियो व आदतो का आदर करना समाजवादी समाज की एक मुख्य नैतिक माँग है।

व्यक्तियो के समरूप, सर्वांगिक विकास, उनकी क्षमताओ के लिए स्थितियो का निर्माण करना, व्यक्ति को एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप मे देखना, श्रम सामूहिको व परिवारो मे आध्यात्मिक रूप मे स्वस्थ वातावरण के लिए चिंतित रहना —यह सब समाजवादी जीवन-पद्धति का लक्षण है और सोवियत परिवार के जीवन पर सीधे प्रभाव डालता है।

व्यक्तिगत गरिमा की भावना और शराबखोरी, अनैतिकता, क्रूरता, अज्ञानता जैसे हानिकारक घटनाओ के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखना सोवियत जनो की एक विशेषता है और यह लोगो को अपने तरीकों को बदलने के लिए प्रेरित करता है।

सहयोग, एक-दूसरे की समझ की संस्कृति व्यक्ति में पैदायशी गुण नहीं है, यह वह है जिसे विकसित करना चाहिए। समाजवादी जीवन-पद्धति व्यक्ति व समाज के हितो के मध्य, सामाजिक नैतिकता व व्यक्ति की नैतिकता के मध्य, जो दोनों लिंग के मध्य सम्बन्धो से सम्बद्ध है, अन्तर्विरोधों पर विजय पाने के लिए अवसर प्रदान करती है। यह उनके द्वारा जो विवाह-वेदी पर चढ़ रहे हैं, मित्र

होता है। अपने भावी साथी में वे कौन से पहलू हैं जिन्हे वह अधिक महत्त्व देते हैं?

उदाहरण के लिए, लेनिनग्राद के एक नवविवाहित युगल की राय लें। लड़कियो में वे गुण जो युवा पुरुषों को आकर्षित करते हैं, विशेष रूप से हैं बुद्धि, परिश्रमशीलता और लोगों में उनकी स्थिति। पुरुष लड़कियो में दयालु, संवेदनशीलता व शील जैसे गुणो पर जोर देते हैं।

क्रीमिया मे सिम्फेरोपोल शहर से दोनों लिंग के छात्र पति या पत्नी में परिवार के प्रति दृष्टिकोण, बच्चो के प्रति प्रेम, गृहस्थी चलाने की योग्यता को अधिक मूल्य देते हैं। नैतिक गुणो में वे शील, संवेदनशीलता, निष्कपटता, सूझ-बूझ, दया, आज्ञाकारिता पर जोर देते हैं। हर तीसरा युवक व हर दूसरी लड़की वैचारिक विकास तथा अपने भावी जीवन-साथी मे अच्छी शिक्षा को प्राथमिकता देता है।

हमारे समय पर जोशीला जीवन जीने के लिए ज्ञानवान और अनेक चीजें करने योग्य होना चाहिए। यह विज्ञान व तकनीक, कला के विकास के वर्तमान स्तर, उत्पादन प्रक्रिया की दुरूहता और समाज मे सम्बन्धो के परिवर्तन क्षमता के कारण आवश्यक है।

शिक्षा के बिना व्यक्ति घटित होने वाली घटनाओ का सही निरूपण करने मे असमर्थ है। जीवन की नब्ज जानने और साथियो, सहयोगियो व अपने प्रियजनों के समान चलने के लिए उसे अपने ज्ञान व कौशल को निरंतर विकसित करना चाहिए। समाजवादी समाज मे युवा जन के लिए माध्यमिक स्कूली शिक्षा अनिवार्य है, जो कानून द्वारा निरूपित है। सिर्फ आवश्यक ज्ञान की प्राप्ति द्वारा ही वे जीवन मे उनके समक्ष कार्यों से जूझ सकते हैं, अपनी योजनाओ को प्राप्त कर सकते हैं, अपने देश के सही नागरिक और ऐसे व्यक्ति बन सकते है जो अपने परिवार व समाज में काफी आदर पाते हैं।

इसलिए लड़के-लड़कियाँ दोनो अपने भावी जीवन-साथी को न सिर्फ दयालु, अनुरागी, सुदर्शन बल्कि अच्छी शिक्षा प्राप्त, अच्छे व्यवसाय मे और बुद्धिमान चाहते हैं। आजकल बुद्धिमान से आशय होता है उच्च नैतिक स्तर, चातुर्य, अच्छा लालन-पालन, साहित्य का अच्छा ज्ञान और एक शिक्षित, सौम्य व्यक्ति का आध्यात्मिक व वैचारिक पहलू। समाजवादी जीवन-पद्धति वर्तमान मे स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों मे व्यक्ति के वैचारिक विकास द्वारा स्पष्ट रूप मे उत्पन्न हुए गुणो को, जो मानवीय सम्बन्धों को संवेदनशीलता प्रदान करते हैं, प्राथमिकता देते हैं।

जो विवाह सम्बन्ध करने जा रहे हैं उनके शैक्षणिक स्तर के विश्लेषण में समाजशास्त्रियो ने इसमे समानता मानने की प्रवृत्ति को निश्चित किया है, जो सोवियत जन के सांस्कृतिक विकास की एक विशेषता है। सभी परिवार के

और रूसी पढ़ने की इच्छा काफी अधिक है। यह सोवियत राज्य की 'सरकारी' या 'राजकीय' भाषा नही है, परन्तु विभिन्न राष्ट्रीयता के लोग इसे संवाद के साधन के रूप में लेते हैं, सोवियत संघ मे रह रहे सभी लोगो की संस्कृति से स्वयं को परिचित कराने का, और अन्य किसी भी क्षेत्र मे अपने पसंद के व्यवसाय को अपनाने का एक अवसर मानते हैं। 1979 की जनगणना मे गैर रूसी राष्ट्रीयता के प्रत्येक 8 सोवियत नागरिकों मे से एक ने रूसी भाषा को अपनी स्थानीय भाषा माना है। और गैर रूसी राष्ट्रीयता के प्रत्येक पाँच व्यक्तियो मे से दो के लिए यह दूसरी स्थानीय भाषा है।

समाजवादी समाज सभी राष्ट्रीय भाषाओ व संस्कृतियो के विकास हेतु, उनके परस्पर नजदीक आने और परस्पर समृद्ध होने हेतु अनुकूल स्थितियाँ प्रदान करता है। विभिन्न राष्ट्रीयता के लोग देश के चारो ओर घूमने-फिरते हैं, पढ़ने व काम करने के लिए अन्य गणराज्यो को जाते हैं। समूचे देश के कम्युनिज्म के प्रमुख निर्माण स्थलो पर काम मे युवजन भाग लेते हैं। जन-संचार भी भाषाओ व संस्कृतियों के मिलन मे सहायक होते हैं, गणराज्यो के रेडियो व टेलीविज़न कार्यक्रमो का आदान-प्रदान करते हैं। थियेटर सम्बद्ध गणराज्यो का दौरा करते हैं, सोवियत संघ के अनेक लोगों द्वारा विभिन्न शहरो मे नियमित रूप में दस दिवसीय राष्ट्रीय कला समारोह होते हैं। विभिन्न राष्ट्रीयताओं के लेखकों के श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो, अनुवाद के कारण, सोवियत संघ की समूची जनसंख्या की पहुँच मे हैं। सम्बद्ध गणराज्यों से चित्रकारो की कृतियाँ पूरे देश मे अनेक शहरो मे प्रदर्शित होती हैं।

समान हितो, आकर्षण और व्यक्तिगत मित्रता से उत्पन्न विभिन्न राष्ट्रीयता के लोगों द्वारा प्राय नियमित संवाद अन्तर्राष्ट्रीय विवाहों को सम्पन्न कराता है। सोवियत संघ में प्रत्येक दसवाँ विवाहित युगल दो भिन्न राष्ट्रीयता के प्रतिनिधियों का एक सम्बन्धी है।

अधिकतर अन्तर्राष्ट्रीय विवाह समान संस्कृति व भाषा के राष्ट्रो के सदस्यों के मध्य होते हैं। मे विवाह के प्रति बढ़ती हुई एक प्रवृत्ति के चिह्न दिखाई

अन्तर्राष्ट्रीय विवाहों की सबसे अधिक संख्या इन स्थानों में देखी गई है। यहाँ राष्ट्रीयताओं के लोग अन्तर सीधे आदान प्रदान होते हैं, जैसे कि दरबन्द (दागिस्तान), मखेतुर्निन के बेन्दरी (मोल्दाविया), केरागन्दा (कज़ाखस्तान) में हुआ करता था जहाँ 50 भिन्न राष्ट्रीयताओं के युवा युगल व लिये अनेक नये निर्माण-स्थलों पर काम कर रहे हैं।

नबेरेज्निये चेल्नी नगर के नागरिक पंजीकरण ऑफिस¹ की प्रमुख गालिना पेत्रोवा कहती हैं "यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय विवाह कोई असाधारण बात नहीं है। जितने एक ही राष्ट्रीयता के लोगों के साथ विवाह होते हैं भिन्न राष्ट्रीयताओं के लोगों के मध्य उससे कम नहीं होते हैं। 70 विभिन्न राष्ट्रीयताओं के लोग अब कमाज़ आटोमोबाइल प्लांट (कामाज़) में काम कर रहे हैं।" उन्होंने मेन्डेलसोन के वैडिंग मार्च धुन के साथ विवाह-ग्रहण को आ रहे युग्म की ओर इशारा किया। दूल्हा ब्लादीमीर स्मिर्नोव एक रूसी है जो कामाज़ प्लांट पर एक इलेक्ट्रिशियन है। दुल्हन ऐसुम अनातोलीवा उसी प्लांट पर एक तातार कर्मचारी है।

हर गुजरते वर्ष में अन्तर्राष्ट्रीय विवाह बढ़ रहे हैं। यह परिवार में गुणात्मक रूप में नये सम्बन्धों का चिह्न है, सोवियत जन की अन्तर्राष्ट्रीयता, सोवियत मत में जनता की मैत्री पारिवारिक सम्बन्धों में नस्लवादी व राष्ट्रीय पूर्वाग्रहों से उबरने में मदद करती है इस तथ्य का भी प्रतीक है।

सोवियत सत्ता के वर्षों के दौरान स्त्री-पुरुष के विवाह की आयु का अनुपात भी बदल गया है। क्रान्तिपूर्व दूल्हा व दुल्हन के मध्य 10 से 15 वर्ष का अन्तर होना एक आम बात थी। अधिकांश लड़कियों में कोई विशेषता न थी, परिवार पर निर्भर रहते हुए वे सामाजिक उत्पादन से सम्बद्ध न थीं। ऐसी परिस्थिति में पति व कमाने वाले को पत्नी से अधिक अनुभवी व बड़े उम्र का सोचना सामान्य था। विवाह होने वाली एक-तिहाई से अधिक लड़कियाँ 16 से 20 वर्ष की होती थीं।

अब ऐसे विवाह जिसमें आयु का अन्तर 10 या अधिक वर्षों का है 3% से कम हैं और जिसमें पत्नी पति से 5 से 9 वर्ष छोटी है ऐसे विवाह 10% से कम हैं। समस्त विवाहों के करीबन 9% में पत्नी पति से बड़ी हैं।

वास्तव में, ये सूचक भिन्न गणराज्यों में भिन्न हैं। समान आयु के लोगों के मध्य विवाह का बढ़ता हुआ प्रतिशत ही एकमात्र प्रवृत्ति है, शहरों में अपने से कम आयु के पुरुष से विवाह करने वाली स्त्रियाँ अधिक हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसा

---

1. नागरिक पंजीकरण ऑफिस स्थानीय सोवियत कार्यकारिणी कमेटी का एक विभाग है।—सम्पादक

अक्सर कम होता है। विवाह व परिवार पर सोवियत संघ व संघीय गणराज्यों के अधिनियम के आधारभूत 18 वर्ष की आयु में विवाह के पंजीकरण की इजाजत देता है, और विवाह की उम्र को दो वर्ष कम करने की सम्भावना की कल्पना करता है। सम्बद्ध गणराज्य विवाह व परिवार के कानून पर इस संशोधन को गणराज्य की विशिष्टताओं एवं विवाह की आयु को कम करने की युवाजनों की प्रार्थनाओं को आधार करके अलग-अलग रूप में लागू करने की कल्पना करते हैं। परिणामत, उदाहरण के लिए, यूक्रेनियन, तुर्कमैन व अजरबैजान गणराज्यों में स्त्री व पुरुष दोनों 17 वर्ष की उम्र पर विवाह कर सकते हैं। कजाख, अर्मेनियन, मोल्डेवियन व किरघिज गणराज्यों ने विवाह की उम्र सिर्फ स्त्रियों की कम की है।

वास्तव में, पहली बार विवाह कर रहे पुरुषों की औसत राष्ट्रव्यापी आयु 25 वर्ष है, और स्त्रियों की 23 वर्ष। दूसरी बार विवाह की औसत आयु पुरुषों के लिए 27 वर्ष और स्त्रियों के लिए 25 वर्ष है।

युवजनों का अपेक्षाकृत उच्च प्रतिशत 16-19 वर्ष की आयु पर विवाह करता है (17 3%)। हालाँकि, विशेष रूप में मध्य एशियाई गणतन्त्रों में जल्दी विवाह करने वाली लड़कियों का प्रतिशत घट रहा है। क्रान्ति-पूर्व मध्य एशिया में अनेक लड़कियों का विवाह वयस्कता के पूर्व, अक्सर 10-14 वर्ष की उम्र में होता था। कसीम याने वधू का भुगतान विवाह के सम्पन्न होने की प्रमुख शर्त थी। वधू की राय या इच्छा पर कभी भी विचार नहीं होता था। महत्त्वपूर्ण होता था वर-वधू के परिवार के बड़े-बूढ़े या माँ-बाप के मध्य समझौता। अब इन गणराज्यों में विवाह सम्पन्न करने के उद्देश्य वही हैं जो पूरे देश में हैं। कॉकेशस व मध्य एशिया में रह रही लड़कियाँ कम आयु में विवाह करने में कम इच्छुक हैं इस कारण से कि यह उनकी अग्रिम पढ़ाई में, जो एक बढ़ती हुई प्रवृत्ति है बाधा देगा। इन क्षेत्रों में रह रही विभिन्न राष्ट्रीयताओं की लड़कियों का शैक्षणिक स्तर अब बीस साल पहले से अधिक उच्च है। अब नैतिक वातावरण भी बदल गया है इसलिए विवाह [illegible] अपने बुजुर्गों से कोई विरोध न पाकर उच्च-स्तर [illegible] न पर जा सकते हैं।

[illegible] ाह योग्य उच्च आयु इस तथ्य के कारण है कि [illegible] व स्वतन्त्र जीवन आरम्भ करना चाहते हैं, ताकि

लिए 2 से 4 माह का अवकाश मिलता है। वे श्रमिक व अन्य कर्मचारी जो अच्छे श्रक पाते हैं उन्हे उनके अवकाश के दौरान औसत वेतन मिलता है।

शिक्षा प्राप्त करने व व्यवसाय पाने में राजकीय सहायता उन सभी को, जो परिवार बसा रहे हैं, गृहस्थी चलाने मे आने वाली समस्याओ के साथ जूझने मे अच्छे अवसर प्रदान करती है।

सोवियत वास्तविकता ने विवाह व परिवार के निर्माण व बच्चे के जन्म से सम्बद्ध नवीन प्रथाओ व रीतियो को जन्म दिया है। नयी परम्पराएँ श्रमरत व्यक्ति के लिए आदर, उसके गुणो की स्वीकृति और युवा लोगो के प्रति एक लाभदायक दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करते हैं।

अतीत के अवशेषों के विरुद्ध संघर्ष मे नये रीति-रिवाजो का जन्म हुआ है। उदाहरण के लिए, तुर्कमेनियन, कजाख और किरघिज बस्तियो मे ये रिवाज लोगो को पुरानी परम्पराओं, जैसे, वधू की कीमत देना या उसे पैतृक घर से अपहृत करना, मे मुक्त कर एक लाभदायक प्रभाव डालने के बावजूद प्रतिदिन के जीवन मे शीघ्र नहीं अपनाए गये हैं।

यह याद रखना चाहिए कि प्रतिक्रियावादी राष्ट्रीय अवशेष, जो स्त्रियो के लिए अपमानजनक है और परिवार में उनकी बराबर की स्थिति पर अतिक्रमण करते है, के विरुद्ध संघर्ष कानूनन भी किए जा रहे है। गणराज्यो की दण्ड-संहिताएँ स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह करने पर जोर देने पर, उसकी कीमत अदा करने पर, [illegible] पर तथा पुरानी प्रथाओ के साथ जुडी अन्य [illegible] है विचार करते हैं।

परिवार में संबंध

सोवियत संघ में 20 लाख से अधिक विवाह प्रति वर्ष सम्पन्न होते हैं। कुल मिलाकर देश में 6 करोड़ 60 लाख से अधिक परिवार हैं।

समाजशास्त्री या अधिक स्पष्टत जनसख्या-सांख्यिकी विशेषज्ञ की भाषा में रक्त व वैवाहिक सम्बन्ध, समान बजट और नियमन समान आवास से जुड़े व्यक्तियों का लघु समूह ही परिवार है। यह एक सही वैचारिक स्वरूप है जो दुर्भाग्य से जीवन तत्त्व से च्युत है। वास्तविकता में ऐसी घरेलू इकाई अर्थ, नीति, संस्कृति व जनता के रुख व मनोवृत्तियों में प्रमुख परिवर्तनों के साथ एक अप्रत्यक्ष सामाजिक जीवन द्वारा घिरी हुई होती है। गृहस्थी के आभासी अलगाव के बावजूद परिवार सभी महत्त्वपूर्ण सामाजिक घटनाओं को प्रतिबिम्बित करता है। 'बृहत् समाज' का जीवन अनिवार्यत परिवार पति व पत्नी, माँ-बाप व बच्चों के मध्य सम्बन्धों के स्वरूप को प्रभावित करता है।

स्वामित्व के समाजवादी स्वरूप के प्रभाव के अन्तर्गत और परिवार के भौतिक सुख में सुधार के लिए सामान्य चिंता के वातावरण में पिता के नेतृत्व में एक आर्थिक इकाई के रूप में परिवार के बारे में यह दृष्टिकोण अब अतीत का हो चुका है। अब परिवार में मानवीय सम्बन्धों को प्राथमिकता दी जाती है - पति-पत्नी, माँ-बाप व बच्चों के प्रेम व समान हित, पीढ़ियों के मध्य आध्यात्मिक सम्बन्ध तथा परिवार की खुशी पर नया दृष्टिकोण।

वास्तव में, पारिवारिक जीवन का आर्थिक पक्ष अभी भी बृहत् भूमिका अदा करता है, यह परिवार के भौतिक सुख के प्रति चिन्ता से और इसकी दैनिक सेवा या अधिक स्पष्टत इसके सदस्यों की स्वय सेवा से व्यक्त होता है। परिवार के सदस्य गृहस्थी को समान रूप से चलाते हैं। समाजवादी जीवन-पद्धति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है घरेलू काम-काज का वांछित वितरण, या दूसरे शब्दों में परिवार के सदस्यों के मध्य सहयोग जो बच्चों के लालन-पालन व घर को चलाने हेतु आवश्यक है। परन्तु परिवार व समाज के मध्य समस्त घरेलू दायित्वों का आधारभूत पुन वितरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। आजकल, शहरों और अनेक गाँवों में भी

प्रकार के निष्कर्षों को बतलाया है। दोनों पति-पत्नियों ने पारस्परिक समझ व संवेदनशीलता, पारस्परिक आदर, बच्चों के लालन-पालन में पति (पत्नी) की भागीदारी को प्राथमिकता दी।

पारिवारिक आनन्द की विशेष शर्तों से सम्बन्धित पुरुष व स्त्रियों की भिन्न राय दिलचस्प है (वी० बोईको के सर्वे में)। जैसे, पुरुषों ने भौतिक सुख व अलग फ्लैट को पारिवारिक आनन्द के लिए दो प्राथमिक व समान आवश्यकताएँ मानी, साथ में परस्पर समझ व बच्चों को द्वितीय स्थान दिया। स्त्रियों ने सुखी पारिवारिक जीवन हेतु परस्पर समझ को प्रथम स्थान दिया फिर बच्चों को और भौतिक सुख व अलग फ्लैट को तीसरा स्थान। पुरुष की अपेक्षा स्त्रियाँ पारिवारिक समझ को अधिक मानती हैं। जहाँ तक परिवार से बाहर की शर्तें हैं, पारिवारिक सुख के लिए रुचिकर कार्य को निरपवाद रूप में आवश्यक माना गया है। पारिवारिक आनन्द हेतु अन्य शर्तों के सम्बन्ध में पुरुषों व स्त्रियों की राय सिर्फ थोड़ी भिन्न है। अकसर पुरुषों से अधिक स्त्रियाँ विवाह के स्थायित्व हेतु पारिवारिक दायरे में रुचिकर अवकाश को एक शर्त मानती हैं जबकि पुरुष काम की स्वतत्रता, स्वाधीनता और काम पर अच्छी स्थिति को प्राथमिकता देते हैं।

परिवार, इसकी सुख-सुविधा में वृद्धि, इसकी मजबूती हेतु राज्य की निरतर चिन्ता सिर्फ समाजवादी समाज का एक विशिष्ट लक्षण है। सोवियत सघ का सविधान कहता है "परिवार को राज्य का सरक्षण प्राप्त है।

"विवाह स्त्री व पुरुष की मुक्त सहमति पर आधारित है, अपने पारिवारिक सबधो में पति-पत्नी पूर्णतया बराबर हैं।

"बच्चों की देखभाल करने वाली सस्थाओं की बृहत् व्यवस्था प्रदान करके व विकसित करके, सामूहिक सेवाओं व जनसेवाओ को आयोजित करके व सुधार करके, बच्चे के जन्म पर अनुदान देकर, बच्चों पर भत्ता प्रदान कर व बडे परिवारो के लिए लाभ देकर, और पारिवारिक भत्ते व सहायता को प्रदान कर राज्य परिवार की मदद करता है।"

परिवार की भौतिक सुख-सुविधा, इसका नैतिक स्वरूप, पति-पत्नी के मध्य सबध, बच्चो का लालन-पालन—सोवियत सघ मे यह सब कुछ राजकीय महत्त्व का है।

राजकीय सस्थाएँ व सार्वजनिक सगठन, श्रम-सामूहिक व ट्रेड यूनियनें परिवार को सोवियत अधिनियम के आधार पर उसके भौतिक, आवासीय, नैतिक व शैक्षणिक समस्याओं को सुलझाने मे मदद करते हैं।

जनशक्ति के स्थानीय अग अर्थात् सोवियतों के कार्य का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा यह देखना है कि प्रत्येक परिवार को घर मिले, सेवाएँ, स्वास्थ्य परिचर्या और

थी और जागे रहने की कोशिश करते हुए सुबह काम पर जाता। फिर माशा की माँ की मृत्यु हो गयी और मैं उनके घर पर रहने लगा। हमने शादी की। माशा भी स्वस्थ न थी। घर का लगभग सारा काम मैं ही करता था, बकरियों को दुहना, बगीचे में काम करना। फिर मैं संध्या पर अध्ययन करने के पश्चात् शाम को काम करता था।

"फिर हमारा बेटा हुआ, और जब वह स्कूल जाने लगा तभी युद्ध आरम्भ हुआ। मैं सीमा पर चला गया। माशा फैक्टरी में काम करती थी। माशा के दोनों भाई युद्ध के दौरान मारे गये। एक सीमा पर गुजरा और दूसरा, जब फ़ासिस्टों ने शहर पर बमवर्षा की तो बम के टुकड़े से मर गया। मेरे माँ-बाप भी बमवर्षा में मर गये। और युद्ध के अन्त में हमारा बेटा विटालिक निमोनिया से मर गया। जब मैं सीमा से लौटा, मैं माशा को पहचान न सका—अपने चेहरे पर गहरी झुर्रियों के साथ वह पूरी तरह बूढ़ी हो गयी थी।

"कई वर्षों तक मैंने स्कूल में पढ़ाया और माशा एक बोर्डिंग स्कूल में शिक्षिका रही। हमारे खुद के कोई बच्चे न थे, पर हमारा घर हमेशा दूसरों के बच्चों से भरा रहा। माशा उन्हें खिलाती, उनके बाल सँवारती-काढ़ती और बच्चियों की स्नातक पार्टियों के लिए पोशाकें सिलती।

"अपनी पत्नी पर मैं कभी भी नाराज नहीं हुआ, न ही मुझ पर वह हुई। हमने हमेशा यह महसूस किया कि हम एक-दूसरे के बारे में अधिक नहीं जानते हैं, एक-दूसरे से काफ़ी कम बातें करते हैं। कइयों ने आश्चर्यचकित होकर हमसे पूछा कि हमने कैसे अपना पूरा जीवन साथ-साथ शान्ति व मेल-मिलाप के साथ गुजारा। इसका सिर्फ़ यही उत्तर है हमें एक-दूसरे की आवश्यकता है हमें एक-दूसरे की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि हम एक-दूसरे को पूरी तरह से समझते हैं, क्योंकि हम एक-दूसरे को आदर व प्रेम करते हैं। यदि हम में से एक चला जाए तो दूसरे के लिए आधा संसार, सम्भवत पूरा संसार ही चला जाएगा मुझे तो ऐसा लगता है कि मैं सदैव माशा के लिए जीता हूँ और वह, स्पष्टत मेरे लिए जीती है।

"50 वर्षों के बाद भी, मैं एक क्षण के लिए यह दुहराने में हिचकिचाऊँगा नहीं, जो मैंने उससे एक बार कहा था, 'क्या तुम मेरी पत्नी नहीं बनोगी?'

"पति पत्नी जो एक-दूसरे से प्रेम व आदर करते हैं वे स्वयं के प्रति चिन्तित नहीं होते हैं। वे दूसरों की आवश्यकताओं में अत्यधिक रुचि रखते हैं। यह उन्हें एक दूसरों की आँखों पर चढ़ाता है। समान लक्ष्य, समान आकांक्षाएँ पति-पत्नी को निकट लाता है, उन्हें दुर्दिनों व दुर्भाग्यों पर, जैसा द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान पैन्तेलेयेव और लाखों सोवियत परिवारों पर पड़ा, मदद करता है। इस परिवा

मे दया व सहृदयता के विद्यमान वातावरण बच्चों को अपने पास ह
दूसरे व्यक्तियों के बच्चों को जिन्हें पैन्पयोरोव अपने खुद के बच्चों जैसा म
ऐसे परिवार, जिसमे पति व पत्नी दोनो के पास प्रेम, विश्वास है, जो ए
के प्रति चिंतित रहते हैं और बच्चो के प्रति स्नेह का भाव, अपने रिश्ते
आस-पास के लोगो का ध्यान रखते हैं, सोवियत-जन मे अत्यधिक आदर पाते

समाज की एक इकाई होने के कारण परिवार स्वाभाविक रूप में सामा
विषमता को प्रतिबिम्बित करता है, जो अभी भी समाजवादी समाज मे व्याप्त
वर्ग विरोध को नही क्योंकि इसका समाजवाद मे अस्तित्व नहीं है इस तथ्य से
कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है, और, परिणामत शोषणकारी सबध भी नहीं
बल्कि श्रमिक-जनो के विभिन्न वर्गों व स्तरो के साथ लगाव से, उनके जन्म-स्थान
की भौगोलिक स्थिति से उत्पन्न अन्तरों से बनी सामाजिक विषमता। स्पष्ट
आधारभूत स्वरूपो के बावजूद एक छोटी बस्ती या एक गाँव मे रह रहे परिवार
बड़े औद्योगिक शहर मे रह रहे परिवार से भिन्न हैं। और फिर, एक परिवार मे
अधिक वेतन पाने वाले प्रवीण विशेषज्ञ हैं और दूसरे मे कम मजदूरी पाने वाले
कम प्रवीण श्रमिक हैं। फिर, एक परिवार के अस्तित्व की ठोस अवस्थाएँ उनकी
भौतिक सुख-सुविधाओ व आध्यात्मिक आवश्यकताओ को निर्धारित करती हैं।
परन्तु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि समाजवादी समाज भिन्नता को समान करने का
उद्यम करता है ताकि आवश्यकताओ की प्राप्ति के लिए सभी परिवारो को समान
अवसर मिले।

आज भी सोवियत परिवार के समक्ष कुछ कठिनाइयाँ आती है। यद्यपि इसका
कारण समाजवादी व्यवस्था की प्रकृति मे नहीं है। बहुत कुछ द्वितीय विश्व युद्ध
के आर्थिक व जन-सांख्यिकीय परिणाम के साथ सबद्ध है, जिसके दौरान 2 करोड़ से
अधिक सोवियत जनो ने अपनी जान गँवाई। युद्ध का परिणाम अभी भी जन-
सांख्यिकी प्रक्रिया व वैवाहिक सबधो मे प्रतिबिम्बित है।

सोवियत परिवार मे अन्तर्निहित सभी नवीन तत्त्व शून्य मे नहीं उपजे।
सोवियत व्यवस्था ने अतीत से जो धरोहर पायी है उससे उबरना आवश्यक है।
आर्थिक स्थिति की तुलना म मानव मनोवृत्ति अधिक धीमे परिवर्तित होती है।
अभी भी कुछ परिवार हैं जहाँ स्त्रियो के काम करने पर पुराना रुख खत्म नहीं
हुआ है, जहाँ नैतिक भ्रष्टता और बच्चों के प्रति उदासीनता के उदाहरणों के साथ
परिवार के कुछ सदस्य सिर्फ अपने ही हितो के प्रति चिन्तित हैं। ये प्राचीन
पारिवारिक सबध धीरे-धीरे मिट रहे हैं। परन्तु समाज में और परिवार मे पति व
पत्नी की नयी भूमिका ने भी समस्याओं व दुविधाओं को जन्म दिया है। पुरुषो
और स्त्रियों के अधिकारों मे समानता, उत्पादन मे स्त्रियों का सक्रिय कार्य
पारिवारिक सबधों की स्थापना का प्रमुख घटक है, परन्तु

भी जन्म दिया है। व्यक्ति सब कुछ चाहता है : प्रेम भरा जीवन और सामाजिक मान्यता, सक्षेप मे—वह एक सुखी पारिवारिक व्यक्ति व नागरिक बनना चाहता है। परन्तु ऐसी उम्मीदें पूर्ववर्ती अज्ञात मनभेदों के लिए परिस्थिति का निर्माण करते हुए, परिवार मे सदैव फलीभूत नहीं होती हैं।

इससे प्रश्न उठता है : भविष्य मे परिवार का क्या होगा ? इसके कौन से स्वरूप अक्षुण्ण रहेंगे और कौन से लुप्त हो जाएंगे ? भविष्य का परिवार वर्तमान के परिवार मे किस प्रकार भिन्न होगा ? जैसे, सामाजिक व पारिवारिक लालन-पालन को किस प्रकार जोड़ा जाए ? यदि माँ सदैव काम पर व्यस्त है तब बच्चे के लालन-पालन मे क्या परिवार पूरी तरह से बदल न जाएगा ? यदि स्त्री अपने व्यक्तित्व के विकास पर प्रवृत्त हो तब वह कितने बच्चे चाहेगी ? पारिवारिक सम्बन्ध कैसे कायम होंगे ? यहाँ कई प्रश्न उठते हैं, जिनके कोई सरल उत्तर नहीं हैं।

परिवार मे महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाएँ अब हो रही हैं। कई पीढ़ियों व अनेक बच्चों वाले एक बड़े व सगठित परिवार के स्थान पर पति-पत्नी व कुछ बच्चो के साथ छोटे परिवार बन रहे हैं। पति के स्पष्ट परिभाषित प्रभुत्व के स्थान पर पति व पत्नी की समानता स्थान ले रही है।

1979 की जनसख्या गणना बतलाती है कि 29 7% परिवार मे दो व्यक्ति हैं, 28.9% मे तीन, 23% मे चार और 18.4% मे पाँच या अधिक व्यक्ति हैं। देश मे (साथ रह रहे) परिवार का औसत आकार 3.5 व्यक्ति का है, शहरी निवासियों मे 3 3 और ग्रामीण मे 3 8 व्यक्ति।

परिवार के आकार मे ताजिकिस्तान का औसत सबसे अधिक (5 7 व्यक्ति) है, उसके बाद तुर्कमेनिया (5.5 व्यक्ति) और उज्बेकिस्तान (5 5) हैं। लातविया और इस्तोनिया मे सबसे कम औसत आकार है (3 1 व्यक्ति)।

अधिकांश परिवार में माँ-बाप व बच्चे हैं। अमूमन, युवा जोड़े अपने माँ-बाप से अलग रहना चाहते हैं। माँ-बाप के पास युवा परिवार का रहना अकसर दोनो द्वारा अस्थायी व्यवस्था समझी जाती है। इस मामले मे दो अति दृष्टिकोण हैं। कुछ लोग माँ-बाप के साथ रहने के पक्ष मे हैं। दूसरे अपने इस दृष्टिकोण पर दृढ़ हैं कि युवा जोड़े को अलग रहना चाहिए। परन्तु दोनों मामले में बहुमत रिश्तेदारों और पुरानी व नयी पीढ़ियो के मध्य अच्छे सबंध के महत्त्व को स्वीकारते हैं।

लिटेरेटुर्नय गजेटा को लिखे दो पत्र दोनों दृष्टिकोणों को चिन्हित करते हैं।

एफ० किलोवा (इन्जीनियर, कुईबीशेव) लिखती हैं, "मैं विश्वास करती हूँ कि एक 'अलग' अस्तित्व न सिर्फ माँ-बाप को अपने बच्चे से कृत्रिम रूप मे वंचित करता है, बल्कि जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है वह है पोता-पोती अपने दादा-दादी की तीव्र इच्छा से वंचित रहते हैं। और मेरा विश्वास है कि अभी भी

हमने पूरी तरह से अनुभव नहीं किया है कि घर बड़ों से प्राप्त।

"अपनी दादी व नानियों से पता करिए यह याद करके मुझे मन
गयी हमारी व बचपन व गुणों के विरुद्ध विश्वसनीय बड़ों का—
ममता भरी गोद। अपने बड़े व बेटियों की अपेक्षा बुजुर्ग लोग निश्चित ही
अपेक्षाकृत धैर्यवान दयालु होते हैं। और इस प्रकार की शान्ति भी आवश्
छोटे बच्चों को विशेषरूप से होती है।

' उत्साही माँ-बाप (जो एक अद्भुत बात है) जो नया, वैचारिक, विना
के योग्य है वह सब कुछ अपने बच्चों को जल्द ही सिखा देते हैं, जबकि एक बुजु
व्यक्ति, एक सच्ची दोस्त—दादी— कोई कम काम में नहीं लगी रहती है. दैनि
जीवन व आचार-विचार के तरीकों से सम्बन्धित मामलों पर बच्चे का ध्यान
आकर्षित कराती है, जिसे ज्ञान देने की जल्दबाजी में उपेक्षित कर दिया जाता है
और शायद ये छोटी-छोटी बातें ही आदमी बनाती हैं।

"सिर्फ बच्चों को ही बुजुर्गों की आवश्यकता नहीं होती है। बुजुर्ग भी बच्चों
की ज़रूरत महसूस करते हैं। क्योंकि आवश्यक होना किसी भी उम्र के व्यक्ति के
लिए अत्यन्त आवश्यक है और विशेषकर बुजुर्गों के लिए तो है ही। जवानों
के साथ रहते हुए, अपने बच्चों व पोतों के जीवन को आसान बनाते हुए बुजुर्ग भी
महसूस करते हैं कि लोगों को उनकी भी आवश्यकता होती है।

"मैं माँ-बाप के प्रभुता दिखाने वाली भूमिका को मना नहीं कर रही हूँ। मैं
खुद अब 35 वर्ष की हूँ और मेरा बेटा 12 साल का है और उसे सुशील बनाने
हेतु हरसम्भव प्रयत्न कर रही हूँ। लेकिन मैं घर में बुजुर्गों के रहने के, प्रत्येक को
साथ-साथ होने के और जब तक इस पृथ्वी पर परिवार का अस्तित्व है तब तक
क्षमा होने के पूर्णतया पक्ष में हूँ।

और एक दूसरी राय

" 'हम सिर्फ तुम्हारी भलाई की कामना करते हैं', हमारे माँ-बाप कहते
ते हैं।

"वास्तव में न ही मेरे पति ने और न मैंने इस पर कभी शंका की है। अपने
की भलाई की कामना करते हुए किसने नहीं सुना है ? पर उन आदतों व
को क्यों बदला जाए जो युवाओं की विशेषता है ? बहस के दौरान क्यों
-भरी टिप्पणियाँ की जाएँ जिनका सार अगर हल्के रूप में कहा जाए, उन्हें
में स्पष्ट नहीं है ? यही परेशानी है—हमारी भिन्न रुचियाँ हैं, बच्चों के
लन पर भिन्न दृष्टिकोण हैं। उदाहरण के लिए यदि हम काफ्का,
वाद या पॉप संगीत के बारे में बात करें तो हम उनसे सिर्फ सुनमनाह
टिप्पणियाँ सुनते हैं।

इस तरह हम वस्तुतः घनिष्ठतम लोगों के

कभी हमसे मीलों दूर हैं। क्या यह हमारे लिए अच्छा नहीं होगा कि अलग रहें ताकि अपने रिश्तेदारों से जब भी हम मिलें तो वह एक उत्सव का अवसर हो न कि एक असहनीय कर्तव्य।" मित्रुन्स्किक शहर से वी० पोटापोवा लिखती हैं।

किसकी राय अधिक सही है? इस प्रश्न का कोई सरल उत्तर नहीं है।

कुछ सर्वेक्षणों से स्पष्ट होता है कि युवा जोड़े का विवाह तब अधिक ध्रुव, स्थायी होता है जब वे माँ-बाप के साथ रहते हैं। प्रथम, बहुत कुछ नवविवाहितों के व्यवहार पर बुजुर्गों की राय व उनके अनुभव के प्रभाव पर निर्भर करता है। स्पष्ट है, युवा आजादी की खोज में रहते हैं परन्तु वे इस 'आजादी' की कसौटी पर सदैव खरे साबित नहीं होते हैं। अपने बुजुर्गों की उपस्थिति, युवा जोड़े के जीवन पर उनका लाभदायक व संकोच से भरा ध्यान उन्हें स्वयं को जाँचने के लिए, एक-दूसरे के प्रति विनित रहने को प्रेरित करेगा। द्वितीय, छोटे परिवार में पति-पत्नी एक-दूसरे के साथ काफी निकटता से जुड़े रहते हैं। बड़ा परिवार व्यक्ति के अनुभवों और उन लोगों के दायरे को विस्तृत करता है, जो उसकी चिन्ता व परवाह करते हैं। बड़ा परिवार बच्चों की देखभाल के लिए अधिक अवसर देता है। जब वे अलग रहते हैं तब युवा जोड़े को मदद करना अधिक कठिन होता है। विशेषकर यदि वे काफी दूर रहते हों। बड़े शहरों में अधिकांश युवा परिवार अपने माँ-बाप के परिवारों से इतनी दूर रहते हैं कि वहाँ जाने में अकसर कम-से-कम एक घंटा लग जाता है।

एक उल्लेखनीय बात यह है कि सर्वेक्षण के अनुसार युवा जोड़ों से आधे घंटे की दूरी में रहने वाली दादियाँ दो-तिहाई अपने पोते-पोतियों के लालन-पालन में सक्रियता से भाग लेती हैं। लेकिन यदि उन्हें एक घंटे से अधिक चलना पड़ता है तो सिर्फ आधी दादियाँ ही अपने पोतों के लालन-पालन में मदद करती हैं।

पाँच युवा जोड़ों में से एक अपने माँ-बाप के साथ उसी फ्लैट पर रहना चाहते हैं। अधिकतर उसी घर या पड़ोस में रहना पसंद करेंगे। सामान्यतः अपेक्षाकृत अधिक शैक्षणिक स्तर के लोग अधिक आजादी की ओर प्रवृत्त हैं। परन्तु मूल प्रवृत्ति यह है कि अधिकतर परिवार अपने रिश्तेदारों की निरंतर निकटता हेतु पास रहना चाहेंगे, लेकिन साथ ही इतने दूर भी कि विवाद या अपमान की भावना को टाल सकें और उनके सीधे निरीक्षण या नियंत्रण में न रहें।

सामान्यतः दूरियों के बावजूद रिश्तेदारों के साथ अच्छे संबंध रखे जाते हैं। जैसे 'घर चलाने में आप किसकी सलाह लेंगे?' प्रश्न पर अधिकांश के जवाब थे 'अपने पति (पत्नी)' और 'अपने रिश्तेदारों' की। 'बच्चों के लालन-पालन पर आप किसकी सलाह लेंगे?' प्रश्न पर अधिकांश के उत्तर थे 'अपने पति (पत्नी) और अपने माँ-बाप की।' फिर, अनेक सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं और अपने काम के बारे में अपने माँ-बाप से नियमित बहस करते हैं। न ही घरेलू सम्पर्क

परिवार में उच्च नैतिक स्तर की स्वीकृति की प्राप्ति सदैव आसान नहीं होती है। सभी परिवार पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं . घनिष्ठ, आर्थिक, मनोविज्ञानी, नैतिक पहलुओं को एक साथ जोड़ने में समर्थवान नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए, व्यक्तिगत परिवारों के जीवन में दूसरे को हानि पहुँचाते हुए अकसर एक विशेष स्वरूप को खुले आम महत्त्व दिया जाता है। और यह विवादों को जन्म देता है। इनसे कैसे निपटा जाय, जटिल परिस्थितियों में लोग कैसे उलझते हैं यही महत्त्वपूर्ण है।

प्रसिद्ध सोवियत बाल-शिक्षक वी०ए० सुखोम्लिन्स्की ने सही लिखा है, "वैवाहिक व पारिवारिक जीवन निशाकालीन बैठकों के आनन्द तक में सीमित नहीं है। इसका आशय है हर कदम पर किसी की मानवीय गरिमा की पुष्टि की निपुणता, इस प्रकार यह साबित करना कि खुशी जिसे प्रेम करते हैं उसकी खुशी पर निर्भर रहती है। परिवार बसाने के पहले स्वय का परीक्षण करिए कि क्या आप इसके लिए तैयार हैं . (1) क्या आप स्वार्थपरता, निष्ठुरता, आरामतलबी की भावना की ओर प्रवृत्त हैं ? (2) क्या आप परिवार के हितों को सुनिश्चित कर सकते हैं, क्योंकि आपकी पत्नी आपके बच्चों के लालन-पालन करने में काफी समय तक काम करने योग्य नहीं हो सकती है ?"

एक ही छत के नीचे विवाह करके व साथ-साथ रहते हुए, रात-दिन एक-दूसरे को देखते रहते हुए व्यक्ति यह पा सकता है कि उनके मिलन के काल का रोमान्स काफूर हो चुका है। यह रोमान्स खत्म हो जाता है यदि दोनों प्रेम से अधिक मजबूत चीज से बँधे न हों, यदि उनके समान हित व आध्यात्मिक आत्मीयता न हो। सोवियत परिवार में एक से हित पारिवारिक सम्बन्धों के लिए ठोस आधार बनाते हैं। आध्यात्मिक निकटता, एक-दूसरे के प्रति चिन्ता, परिवार को अक्षुण्ण रखने का उद्यम, अपने बच्चों में माँ या बाप की झलक देखने का एक-दूसरे का ढग—ये सब कुछ आवश्यक हैं, क्योंकि यह घनिष्ठ सम्बन्धों में अधिक संवेदनशीलता लाता है, भावना को समृद्ध करता है।

हमारे द्वारा किए गये जनमत सग्रह (1981) में अधिकांश पति-पत्नी ने अपने विवाह का मूल्यांकन सकारात्मक रूप में किया। 75% ने अपने विवाह को सफल माना, 16% ने अधिक सफल नहीं और 6% ने असफल। सुखी परिवार का अधिकतम प्रतिशत उन पति-पत्नियों में पाया गया है जो सामाजिक व श्रम गतिविधि में भाग लेते हैं और अपने अवकाश को रुचिपूर्ण तरीके से व्यतीत करते हैं।

सर्वेक्षण के अनुसार परिवार में नैतिक-मनोविज्ञानी वातावरण अपने विवाह की असन्तुष्टि का प्रमुख कारण है। दुखी विवाहों में स्त्रियाँ अकसर समझ व मेल-जोल की कमी का उल्लेख करती हैं। ऐसी स्त्रियाँ कहती हैं 'मेरे पति मेरे

हितो की कम चिन्ता करते है', 'मेरे पति मेरे मूड पर कभ
है,' 'अपने पति को मैं अपनी परेशानियाँ बताना पसन्द नहीं
वेदी पर चढ़ने की तैयारी और इससे सन्तुष्टि होने के मध्य
हो जाता है। ऐसे युवा कहते हैं 'मुझे आशा नही थी कि गृ
इतना समय व शक्ति लेंगे और मुझे आशा न थी कि वि
परेशानियाँ लाएगा', और अकसर यह भी जोड देते हैं कि 'मैंने प
मेरा मूड घर पर बिगड जाता है।'

पारिवारिक जीवन के आरम्भिक वर्षों के दौरान उठने वाल
जटिलताओ से उभरा जा सकता है, यदि पति-पत्नी दोनो कोशिश
दोनो बराबर, पारिवारिक, लाभदायक सबधों को रखें। ऐसे प
पति व पत्नीएक-दूसरे की ख्वाहिश व इज्जत करते है, वहाँ अक्सर
प्रति सन्तुष्टि होती है।

चरित्रगत रूप मे, विवाह के आरम्भिक काल मे पति झुकने
व्यवस्थित करने मे अधिक प्रवृत्त होता है। वह अक्सर खुले विवादो
तनाव घटाना चाहता है, यदि ये होते है। सुखी परिवारो मे पति व पत्नी
यही अक्सर होता है, और न ही एक या दूसरा अपने को पीडित महसूस
है, और अपमानित तो निश्चित ही नही। ऐसे परिवारो मे अक्सर पति
पत्नी के 'चरित्र', स्वय पर निर्भर रहने की क्षमता, आत्म-विश्वास को देख
लेकिन उसे निरकुश नहीं मानते हैं, और कुछ पत्नियाँ टिप्पणी करती है कि
पति 'बिना आज्ञा के खड़े ही नही हो सकते है', पर साथ ही प्रभुत्व दिखाने
कोई प्रवृत्ति ही नही बनाती। असफल परिवारो मे पति या तो प्रभुता वाले
'पत्नी-भक्त' होते है। स्पष्टत बात तब बिगडती है जब परिवार मे मानवी
गरिमा का आदर नही होता।

विवाद की स्थिति मे हट जाने की क्षमता, नकारात्मक भावुकताओ को
दबाना गृह की कमियों पर विजय पाना सोवियत सघ मे पारिवारिक सबधों का
एक नैतिक मापदड बन रहा है। इसके के लिए मनुष्य की अन्तर्निहित
आवश्यकता व्यक्ति की गरिमा व अपने प्रिय की गरिमा का आदर विवाह और
परिवार मे लगातार बढ़ रहा है।

सार्वजनिक व व्यक्तिगत हितों का मिलान, जो सोवियत नागरिको के विशाल
बहुमत की विशेषता है, परिवार के सदस्यो के आध्यात्मिक हितों व उदमा की
बढ़ती हुई एकता के लिए नैतिक भूमि का निर्माण करना है।

वैवाहिक सबध जो दोनो पक्षो के लिए मनोवैज्ञानिक
दोनो के आध्यात्मिक विकास पर एक
पर निर्भर करता है।

की आपने बड़ा पल्पना की है, पसंद किए साथी के किन व्यक्तिगत गुणों का आप सबसे अधिक चाहते हैं, ये जानना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। खेद है, हर किसी को यह बोध नहीं है कि विवाह एक लम्बी रचनात्मक प्रक्रिया है जो पति-पत्नी दोनों की ओर से अधिक प्रयत्नों की माँग करता है।

परिवार की एक अत्यधिक विकसित आवश्यकता, पति-पत्नी को उन जटिलताओं को अधिक धैर्यपूर्वक जूझने में मदद देती है जो वैवाहिक जीवन में नियत रूप में उठ खड़ी होती हैं। समस्त पारिवारिक सदस्यों के प्रयत्नों में एक-रूपता लाने में यह चेतन रूप में मदद करती है। यह प्रत्येक व्यक्ति के विकास के साथ-साथ इस छोटे मानव समुदाय के विकास को सुनिश्चित करती है।

पति व पत्नी की बराबरी पर अधिक जोर देना सोवियत परिवार की एक विशिष्टता है। यह वर्तमान के सभी परिवारों की एक सामान्य प्रवृत्ति है परन्तु सोवियत संघ में पति-पत्नी के मध्य बराबरी परिवार के जीवत सार का निर्माण करती है। हालाँकि, हाल तक याने सिर्फ साढ़े छ दशक पूर्व चीज़ें बिल्कुल भिन्न थीं।

जारशाही रूस के नियमों ने पति व पत्नी के असमान सम्पत्ति व कानूनी अधिकारों को स्थापित किया था। पत्नी अपने पति की इच्छा के आगे पूर्णतया समर्पित थी। रूसी साम्राज्य के कानून की 107वीं धारा के अनुसार "पत्नी परिवार के प्रमुख के रूप में पति की आज्ञा मानने को बाध्य है, उसे प्रेम करना, आदर करना व उसकी आज्ञा का पालन करना, हर तरीके से उसका आभारी होना है।" रूस के विशेष, बड़े पैतृक परिवार का प्रमुख दादा, पिता या बड़ा भाई होता था। वह समस्त सम्पत्ति व धन का अधिकारी था, परिवार के सदस्यों के दायित्वों को बताता था, घर में आने वाली बहू का निर्णय करता था, आज्ञा न मानने वाले बच्चों को क्या दण्ड दिया जाय इसका निर्णय करता था, परिवार के विवादों को सुलझाता था, पड़ोसियों व दूर के रिश्तेदारों के साथ संबंधों को बनाता था। अमूमन परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा अपनी इच्छा या पहल को दर्शाने के प्रयत्न को क्रूरता से दबा दिया जाता था।

क्रान्तिपूर्व रूस के पूर्वी क्षेत्र में परिवार के सदस्यों की स्थिति विशेष रूप में असमान थी। न्यायिक व सम्पत्ति की असमानता धार्मिक दमन द्वारा और बढ़ी थी। परिणामत, परिवार पूर्वाग्रह व पुरुष-प्रभुत्व का केन्द्र बना हुआ था। एक मुसलमान पत्नी किसी भी प्रकार की समानता का स्वप्न तक नहीं देख सकती थी। दूसरी-तीसरी या चौथी पत्नी (प्रथानुसार मुसलमान कई पत्नियाँ रख सकते हैं, विशेषकर धनी) की स्थिति विशेष रूप में असहनीय थी। पति के साथ संबंधों की असमानता से माँ-बाप के साथ संबंध असमान थे।

थी।

उस समय पति की भूमिका स्पष्टतः प्रभुत्व की और पत्नी की अ

जैसा पहले कहा गया है, सोवियत कानून ने तय कर रखा है कि
हर क्षेत्र मे स्त्रियाँ पुरुषो के समान अधिकार रखें। इस वैधानिक व्यव
प्राप्ति मे यह तथ्य अत्यन्त महत्व का है कि सोवियत परिवार मे पति व
सयुक्त रूप मे सग्रहित सम्पत्ति पर बराबर अधिकार रखते हैं।

विवाह व परिवार पर सोवियत कानून यह घोषित करते हैं कि पति प
ने विवाह के दौरान जो कुछ भी इकट्ठा किया है वह उनकी समान सम्पत्ति
(अध्याय 1, अनुच्छेद 12, सोवियत सघ व सघीय गणराज्यों का विवाह
परिवार पर अधिनियम)। वे अपनी मजदूरी, पेंशन, समान, प्रतिभूपत्रों आदि
को समान रूप मे बाँटते हैं। पति-पत्नी को सम्पत्ति को पाने, उपभोग मे लाने व
बेचने के समान अधिकार है। उन्हे तब भी सम्पत्ति पर समान अधिकार हैं जब
एक घर चलाता है, बच्चो की देखभाल करता है और तब भी जब एक बीमार
हो या पढ़ रहा हो। साथ ही, पति-पत्नी मे प्रत्येक की व्यक्तिगत सम्पत्ति
सकती है जिसके अन्तर्गत विवाह पूर्व सम्पत्ति के साथ-साथ कपड़े, जूते
व्यक्तिगत समान आते हैं।

पारिवारिक जीवन मे प्रजातत्रीकरण का विकास इस तथ्य पर आधारित
कि स्त्री-पुरुष सबधो की सस्कृति, पति व पत्नी के मध्य और परिवार के सभी
सदस्यो के मध्य वास्तविक मानवीय सबध स्त्री की सामाजिक मुक्ति की मात्रा पर,
उसके नागरिक व राजनीतिक अधिकारो की पूर्णता पर, शिक्षा पाने तथा अपनी
क्षमताओ व व्यक्तिगत रुझानो को विकसित करने मे उसे दिए जाने वाले अवस
पर सीधे निर्भर है।

परिवार मे वास्तविक समानता को निर्मित करने की प्रक्रिया जनसख्या
के सभी स्तरो से सबद्ध है, चाहे यह परिवार एक श्रमिक का, किसान का या एक
बुद्धिजीवी का हो।

वर्तमानकालीन सोवियत परिवार मे प्रत्येक सदस्य के जीवन के अनुभव,
[illegible]क परिपक्वता, ज्ञान व योग्यता के अनुरूप उनकी भूमिकाएँ वितरित होती हैं।
'परिवार के मुखिया' के विचार के प्रति दृष्टिकोण भी बदल रहा है। सबसे
तो यह प्रश्न है, क्या किसी एक आदमी को परिवार का मुखिया होना
? क्योंकि यहाँ तक कि सबसे अच्छे घर मे भी कोई हो जो विवादो या
[illegible] के पारिवारिक मामलो की बहस मे और भविष्य की योजनाओ के
मे निर्णायक भूमिका अपनाए। सच तो यह है कि कोई तो परिवार के
[illegible]वरण हेतु उत्तरदायी हो, और जटिल परिस्थितियों मे उसकी
[illegible]प्रवलम्बित करे, तनावपूर्ण स्थिति को [illegible]

संबंधों को बनाए रखने के लिए कलह व क्षुद्रता का जो बुद्धिमत्ता व धैर्यपूर्वक सामना करे। स्पष्टत. कोई भी 'मुखिया' के विचार को नकार नहीं सकता है, जिसके सबल कन्धे आन्तरिक व बाह्य तूफानों से परिवार को बचाते हैं, जो निर्विवाद सत्ता रखता हो। यह कौन होना चाहिए ? पति ? पत्नी ?

मास्को के निकट 1981 में किए समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण ने यह बतलाया कि 'परिवार के मुखिया' का विचार अनेक परिवारों में अपने अर्थ को खो चुका है। जनमत संग्रह में 60% से अधिक ने किसी की भी प्रभुता को नकारा है। युवा परिवारों में तो प्रभुत्व का प्रश्न ही नहीं उठता।

हालांकि, यह प्रश्न इतना सरल नहीं है। जैसे, कर्गंप्रीवोर उत्पादन संगठन के श्रमिकों के वक्तव्यों को लें, जिन्होंने अपने महिला क्लब की एक बैठक में आधुनिक परिवार की समस्याओं पर बहस की।

सबसे पहले आने वाली रीटा गुरेविच ने कहा, 'मैं स्त्री-पुरुष संबंधों या और अधिक स्पष्ट कहूँ पति व पत्नी के मध्य संबंधों में जो नयापन है उसे बिलकुल पसंद नहीं करती। मेरा इसमें क्या तात्पर्य है ? समाज में हम पुरुष के समान हैं। यह एक नियम और एक महान उपलब्धि है। हालांकि, इस प्रकार की स्वतन्त्रता कई बार हमारे कन्धों पर भारी बोझ डालती है। हाल ही में मैं छुट्टी पर बाहर गयी थी और जो कुछ भी देखा वह यही स्पष्ट करता है। सेनेटोरियम के स्वागत-कक्ष में तीन जोड़े प्रमुख डॉक्टर का इंतज़ार कर रहे थे। स्पष्टतः वे अधिक आरामदायक कमरों की व्यवस्था करने का प्रयत्न कर रहे थे। एक के बाद एक पत्नियाँ अन्दर गईं। पति वहीं बैठे सिगरेट पीते, इंतज़ार करते रहे जब तक 'कमज़ोर साथी' हर चीज़ की व्यवस्था करती रही। मेरे कथित प्रश्न पर मुझे सन्तुष्टि भरा ——

उस समय पति की भूमिका स्पष्टतः प्रभुत्व की और पत्नी की अधीनस्थ की थी।

जैसा पहले कहा गया है, सोवियत कानून ने तय कर रखा है कि जीवन के हर क्षेत्र मे स्त्रियाँ पुरुषो के समान अधिकार रखें। इस वैधानिक व्यवस्था की प्राप्ति मे यह तथ्य अत्यन्त महत्त्व का है कि सोवियत परिवार मे पति व पत्नी सयुक्त रूप मे सग्रहित सम्पत्ति पर बराबर अधिकार रखते हैं।

विवाह व परिवार पर सोवियत कानून यह घोषित करते हैं कि पति-पत्नी ने विवाह के दौरान जो कुछ भी इकट्ठा किया है वह उनकी समान सम्पत्ति है (अध्याय 1, अनुच्छेद 12, **सोवियत सघ व सघीय गणराज्यों का विवाह व परिवार पर अधिनियम**)। वे अपनी मजदूरी, पेंशन, सम्मान, प्रतिभूपत्रो आदि को समान रूप मे बाँटते हैं। पति-पत्नी को सम्पत्ति को पाने, उपभोग मे लाने व बेचने के समान अधिकार हैं। उन्हे तब भी सम्पत्ति पर समान अधिकार है जब एक घर चलाता है, बच्चो की देखभाल करता है और तब भी जब एक बीमार हो या पढ़ रहा हो। साथ ही, पति-पत्नी मे प्रत्येक की व्यक्तिगत सम्पत्ति हो सकती है जिसके अन्तर्गत विवाह पूर्व सम्पत्ति के साथ-साथ कपडे, जूते आदि व्यक्तिगत सामान आते हैं।

पारिवारिक जीवन मे प्रजातत्रीकरण का विकास इस तथ्य पर आधारित है कि स्त्री-पुरुष सबधो की सस्कृति, पति व पत्नी के मध्य और परिवार के सभी सदस्यों के मध्य वास्तविक मानवीय सबध स्त्री को सामाजिक मुक्ति की मात्रा पर, उसके नागरिक व राजनीतिक अधिकारो की पूर्णता पर, शिक्षा पाने तथा अपनी क्षमताओ व व्यक्तिगत रुझानो को विकसित करने मे उसे दिए जाने वाले अवसरो पर सीधे निर्भर है।

परिवार मे वास्तविक समानता को निर्मित करने की प्रक्रिया जनसख्या के सभी स्तरो से सबद्ध है, चाहे यह परिवार एक श्रमिक का, किसान का या एक बुद्धिजीवी का हो।

वर्तमानकालीन सोवियत परिवार मे प्रत्येक सदस्य के जीवन के अनुभव, नैतिक परिपक्वता, ज्ञान व योग्यता के अनुरूप उनकी भूमिकाएँ वितरित होती हैं।

'परिवार के मुखिया' के विचार के प्रति दृष्टिकोण भी बदल रहा है। सबसे पहले तो यह प्रश्न है क्या किसी एक आदमी को परिवार का मुखिया होना चाहिए ? क्योकि यहाँ तक कि सबसे अच्छे घर मे भी कोई हो जो विवादो या प्रतिदिन के पारिवारिक मामलो की बहस मे और भविष्य की योजनाओ के निर्धारण मे निर्णायक भूमिका अपनाए। सच तो यह है कि कोई तो परिवार के शात वातावरण हेतु उत्तरदायी हो, और जटिल परिस्थितियों मे उसकी राय ही सब कुछ व्यवस्थित करे, तनावपूर्ण स्थिति को शात करे, परिवार मे अच्छे

सबंधों को बनाए रखने के लिए कलह व क्षुद्रता का जो बुद्धिमत्ता व धैर्यपूर्वक सामना करे। स्पष्टतः कोई भी 'मुखिया' के विचार को नकार नहीं सकता है, जिसके सबल कन्धे आन्तरिक व बाह्य तूफ़ानों से परिवार को बचाते हैं, जो निर्विवाद सत्ता रखता हो। यह कौन होना चाहिए? पति? पत्नी?

मास्को के निकट 1981 में किए समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण ने यह बतलाया कि 'परिवार के मुखिया' का विचार अनेक परिवारों में अपने अर्थ को खो चुका है। जनमत संग्रह में 60% से अधिक ने किसी की भी प्रभुता को नकारा है। युवा परिवारों में तो प्रभुत्व का प्रश्न ही नहीं उठता।

हालांकि, यह प्रश्न इतना सरल नहीं है। जैसे, वुर्गन्प्रीवोर उत्पादन संगठन के श्रमिकों के वक्तव्यों को लें, जिन्होंने अपने महिला क्लब की एक बैठक में आधुनिक परिवार की समस्याओं पर बहस की।

सबसे पहले आने वाली रीटा गुरेविच ने कहा, 'मैं स्त्री-पुरुष संबंधों या और अधिक स्पष्ट कहें पति व पत्नी के मध्य संबंधों में जो नयापन है उसे बिलकुल पसंद नहीं करती। मेरा इसमें क्या तात्पर्य है? समाज में हम पुरुष के समान हैं। यह एक नियम और एक महान उपलब्धि है। हालांकि, इस प्रकार की स्वतन्त्रता कई बार हमारे कन्धों पर भारी बोझ डालती है। हाल ही में मैं छुट्टी पर बाहर गयी थी और जो कुछ भी देखा वह यही स्पष्ट करता है। सेनेटोरियम के स्वागत-कक्ष में तीन जोड़े प्रमुख डॉक्टर का इंतज़ार कर रहे थे। स्पष्टतः वे अधिक आरामदायक कमरों की व्यवस्था करने का प्रयत्न कर रहे थे। एक के बाद एक पत्नियाँ अन्दर गईं। पति वहीं बैठे सिगरेट पीते, इंतज़ार करते रहे जब तक 'कमज़ोर साथी' हर चीज़ की व्यवस्था करती रही। मेरे कुपित प्रश्न पर मुझे सन्तुष्टि भरा उत्तर मिला, "वह इसमें काफ़ी अच्छी है।"

"परिवार के मुखिया के बारे में विद्वान जो कुछ भी लिखें या कहें," रीता कहती रही, "स्त्रियों व परिवार की खुशी के लिए, अन्ततः समाज की भलाई के लिए परिवार में स्त्री की ऐसी भूमिका के विरुद्ध हमें संघर्ष करना चाहिए।"

या, वलेंटिना क्रमेनोवा की राय को लें - "वे स्त्रियाँ कितनी अद्भुत होती हैं जो अपने पति के लिए, जहाँ वह आराम कर सके उस प्रकार के सुख-चैन से भरे घर के निर्माण के लिए अपनी स्वयं की योग्यताओं को भुला देती हैं।"

तमारा सोरोकिना अपने मित्र का समर्थन करती हैं और उसके विचार को आगे विकसित करती है। "यदि खुद का व अपने पति का मूड अच्छा रखने हुए किसी स्त्री का लक्ष्य परिवार की खुशी है तो उसे नम्र व धैर्य रखने वाली होना चाहिए और समझना चाहिए कि परिवार के हर सदस्य के अपने हित होते हैं। अनेक युवा परिवारों की त्रासदी यही है कि पत्नी विश्वास करती है कि पति को सदैव घर पर रहना चाहिए, सिर्फ़ उसी के साथ अपने अवकाश के समय को

बिताना चाहिए।"

श्रेष्ठ परिवारों में पति व पत्नी दोनों परिवार के मुखिया माने जाते हैं और परिवार के 'मुखिया' के पुराने विचार कि जो व्यक्ति अपने पैसे से परिवार की मदद करता है और इसलिए स्वामी है व साथ साथ में बूढ़ा भी होता है। अब परिवार का स्वामी वह व्यक्ति है जो पारिवारिक समस्याओं को सुलझाने की काबिलियत रखता है जो अन्य सदस्यों को बुद्धिपूर्ण मदद देने में समर्थ हो और इसलिए अधिक अधिकार रखता है। अब वह व्यक्ति जो पैसे का नियोजन करे, तैयारी बनाए, बच्चों के लालन पालन में प्रमुख योग का भागीदार और परिवार के आराम का आयोजन करे ही धीरे धीरे परिवार का मुखिया माना जाने लगा है।

अच्छे पारिवारिक संबंधों के लिए पति-पत्नी में घरेलू कामकाज को प्राथमिक रूप से पत्नी के गृह-कार्य को आसान बनाने के लिए परिवार में दायित्वों का सही वितरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यद्यपि समाज में स्त्री व पुरुष समान हैं इसलिए आधे से कम परिवारों में घरेलू कामकाज का पूर्ण सहयोग है। बाकी में आर्थिक मजबूरी है या अभी भी पुराने ख्याल दिमाग पर हावी हैं। कुछ मामलों में बिना पति की सहायता पाए सामान्यतः पत्नी ही घरेलू कामकाज करती है। उसे अकसर परिवार के बुजुर्ग सदस्य या रिश्तेदार से ही मदद मिलती है जो उसकी सहायता को आते हैं।

जो पति घरेलू काम-काज में भाग लेते हैं अकसर बाजार जाने या सफाई में मदद देते हैं और खाने बनाने व धोने में अक्सर कम मदद करते हैं।

जबकि बहुत कम स्त्रियाँ यह सोचती है कि पत्नी को हर चीज स्वयं करनी चाहिए। सर्वेक्षण में सिर्फ करीबन 15% श्रमिक स्त्रियाँ मानती है कि घरेलू काम-काज का भार पति के ऊपर नहीं होना चाहिए, अमूमन ये बुजुर्ग स्त्रियाँ है। युवा परिवारो, जहाँ पति-पत्नी कम-से-कम 24-25 वर्ष के है और पति-पत्नी कम-से-कम माध्यमिक शिक्षा प्राप्त है की विशेषता है घरेलू काम-काज का सही वितरण।

जितना अधिक परिवार परस्पर संगठित होता है उतना ही अधिक उनके दृष्टिकोण, आवश्यकताएँ व आकांक्षाएँ एकमत होती है, उतनी ही अधिक घरेलू काम-काज के मामले में समानता है।

घरेलू काम-काज को, जो परिवार के आध्यात्मिक विकास पर रोड़ा डालते हैं और इसके सदस्यों की श्रम व शक्ति का व्यय करते है, अति मशीनीकृत व स्वचालित सरंजाम धीरे-धीरे अपने हाथो पर ले रहे हैं। यह पति-पत्नी दोनो, विशेषकर पत्नी को अवसर प्रदान करता है परिवार में अनुकूल नैतिक-मनोविज्ञानी व भावनात्मक वातावरण बनाने में अधिक ध्यान देने का, अपने आराम के समय को रुचिकर तरीके से बिताने का और उत्पादन व सामाजिक गतिविधि में भाग लेने का।

परिवार में स्त्रियों की सामाजिक गतिविधि

वर्तमान संसार में, बच्चे के जन्म व लालन-पालन, पति-पत्नी के मध्य सम्बन्ध व पारिवारिक एकता की गम्भीरता तथा अन्य कई सम्बद्ध पारिवारिक समस्याएँ बिना स्त्रियों के व्यवसायिक कार्य जैसी सामाजिक घटनाओं पर ध्यान दिए सोची नहीं जा सकती हैं।

विदेशों में कुछ व्यक्ति व्यवसायिक गतिविधि में स्त्रियों की भागीदारी पर संशयवाद दृष्टिकोण रखते हैं, साधारणतया इसे पारिवारिक सम्बन्धों को कमजोर करने वाला, विवाह-पूर्व यौन सम्बन्धों के प्रसारण और बच्चों की उपेक्षा का कारण मानते हैं। सोवियत परिवारों का जीवन इसे प्रमाणित नहीं करता है। यह प्रश्न अत्यन्त दुरूह है। यह स्त्रियों के व्यवसायिक रोजगार का प्रश्न नहीं है बल्कि सबसे अधिक सामाजिक स्थितियाँ हैं जो आधुनिक परिवार में घटित हो रही प्रक्रियाओं का निर्धारण करती हैं।

"मेरे लिए यह जानना विशेष रूप से सन्तोषप्रद है कि सोवियत स्त्रियाँ वास्तविक समानता का आनन्द लेती हैं, कि सोवियत बच्चों का सुखद बचपन है और कि आपके देश में विभिन्न राष्ट्रीयता के लोग एकता व मैत्री में रहते हैं", महिलाओं की अन्तर्राष्ट्रीय प्रजातान्त्रिक फेडरेशन की अध्यक्षा फ्रेडा ब्राउन ने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं कांग्रेस में कहा।

चलिए, हम कुछ स्त्रियों के भाग्य का उदाहरण दें। ये स्त्रियाँ व्यवसाय, राष्ट्रीयता व जन्मभूमि में भिन्न हैं और स्पष्टतः उनके भाग्य भी भिन्न हैं। फिर भी उनके जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण स्वरूप समान हैं। स्वयं ही निर्णय करें।

वेलेन्टीना ग्रिजोडुबोवा : वह और उसकी मित्र—विमानचालिका पोलीना ओसीपेन्को व नेवीगेटर मरीना रस्कोवा ने 1938 में मास्को से सुदूर पूर्व तक बिना रुके 6000 किलोमीटर उड़ान भरी। लगभग पूरे देश के ऊपर उन्होंने उड़ान भरी और अत्यन्त प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियों में एक विश्व रिकार्ड स्थापित किया, जिसने उन्हें सोवियत संघ के हीरो की पदवी दी व देशव्यापी लोकप्रियता प्रदान की।

…बनाए। फिर, देश की … एक अनुभवी उत्पादक बन गयी। उसने
… युक्रेन सोवियत के डिप्टी के रूप में वह उच्चतर सत्ता की सदस्या, सोवियत
व्यस्त रही। … विस्तृत सामाजिक कार्यों में भी

कई वर्षों बाद, 1941-45 के महान देश-भक्ति के युद्ध के दौरान, वेलेन्तीना
पिरोझुकोवा दूर तक मार करने वाले बॉम्बर स्क्वेड्रन की कमांडर थी, जिसके
सदस्य पुरुष थे। पिरोझुकोवा के धैर्य व साहस ने सभी के लिए एक उदाहरण
प्रस्तुत किया। काम और लक्ष्य पर पहुँचने में वह सबसे आगे रहती थी। उसकी
…उपलब्धियाँ थीं 800 मीटर की ऊँचाई तक उतरना, एक क्षतिग्रस्त जहाज के कर्म-
…री की सहायता में अपनी जान खतरे में डालना। उसकी बहादुरी के कारनामों
…सूची लम्बी है।

…बाद में, शांतिकाल में पिरोझुकोवा एक बड़े सामूहिक की प्रमुख बनी। उसके
…र उसे 'ऑर्डर ऑफ अक्टूबर रेवोल्यूशन' प्रदान किया गया। उसके पड़ोस
… उसका आदर करते हैं, उसकी सत्ता को चुनौती नहीं मिलती, जो उसके
…क निपुणता, ईमानदारी, निःस्वार्थ और काम के प्रति दायित्व लेने में
…था अपने चारों ओर के लोगों की खुशियों व गमों को बाँटने के कारण

…ड़े होते गये और अब वह काफी पहले से दादी बन गयी।
…ना, आनन्द से तुम्हारा क्या आशय है?"
…अर्थ है निरंतर काम करना, अपने पसंदीदा व्यवसाय में लिप्त रहना,
…र बच्चों के लालन-पालन की संभावना। और सब कुछ समझना
…का अर्थ है प्रेम करना व प्रेम पाना।"
…ोवलेन्को एक निपुण बुनकर, युक्रेन की मार्च आठ बुनाई मिल
…दल[1] की नेता, प्रांतीय सोवियत की डिप्टी व समाजवादी श्रम

… स्त्री के साधारण स्लाव चेहरे की असाधारण बात है चमक,
…ाँख। उसमे एक गंभीर गरिमा निष्पन्दित होती है, जिससे
…ा बाहरी लगते हैं।
…लेक्ज़ेन्ड्रा अपने जन्मस्थान को छोड़कर इंगुटीआरी के
…जहाँ वह प्रसिद्ध युक्रेनी ऊनी गलीचे बनाने वाली दुकान

…कानों व संस्थानों के सामूहिकों व श्रेष्ठ दलों का नाम
…पाक के मामले में श्रेष्ठ हैं बल्कि सामाजिक गति-
…ारों व उनके नैतिक गुणों में भी।—सम्पादक

कुटिया बुनने की कला, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिवार में सीखी जाती है, में महारत हासिल करने के बाद अलेक्जेंड्रा ने सिर्फ उन सजावट वाली वस्तुओं को बुनने की तकनीक के सभी पहलुओं को सीखने का निर्णय लिया, जिनकी प्रसिद्धि न सिर्फ घरेलू बाजार में थी बल्कि अनेक योरोपीय, अमेरिकी व एशियाई देशों में भी थी।

अलेक्जेन्ड्रा कोवलेन्को ने कला पर पूर्ण अधिकार प्राप्त किया और उसमें बहुत कुछ अपना भी जैसे, बनावट की सुन्दरता व रंग संयोजन पर अपनी समझ, जोड़ा। सरकार द्वारा उसके काम का उच्च मूल्यांकन हुआ। उसे 'ऑर्डर ऑफ़ बैज ऑफ़ ऑनर', 'ऑर्डर ऑफ लेनिन' प्रदान किया गया और समाजवादी श्रम की हीरो की पदवी मिली तथा पार्टी कांग्रेस की प्रतिनिधि चुनी गयी।

इस पुराने यूक्रेनी शहर में हरेक का जीवन एक खुली किताब है। लोग उसी की ही इज्जत करते हैं, जो काम से मुंह नहीं चुराता और अपने ज्ञान व अनुभव को बाँटने को तैयार है, जो संवेदनशील है और प्रसिद्धि पाने पर शेख़ी न मारे। बड़ी गृहस्थी चलाना, दो बच्चों को पालना, काम में प्रमुख स्थिति रखना, विभिन्न सामाजिक काम में लिप्त होते हुए युवाओं को बुनाई की कला सिखाना—यह सब कुछ करना सरल नहीं है। पर वह यह सब कुछ अच्छी तरह से करती है। जो भी अलेक्जेन्ड्रा को जानता है, उससे आप पूछ सकते हैं "वह कैसी है ?"—वे कहेंगे "वह अच्छी है", और जोड़ देंगे "वह भाग्यशाली है।"

इज्ज़त ओरुजबेवा, 1929 में बाकू फिल्म स्टूडियो (अजरबैजान) द्वारा बनी 'सेविल' (कुछ पूर्वी राष्ट्रीयता में स्त्रियों का नाम—सम्पादक) फिल्म काफी लोकप्रिय थी। यह पूरब में स्त्रियों की मुक्ति की प्रक्रिया की एक कलात्मक प्रतिबिम्ब है, एक दबी, शर्मीली मुसलमान लड़की की कहानी, जिसने एक दिन अदत के नियमों के विरुद्ध विद्रोह किया, युगों पुरानी परम्पराओं के विरुद्ध विद्रोह, जिसने स्त्रियों को परिवार व समाज में निम्न स्तर पर रख रखा था। सेविल ने न सिर्फ यशमक को फेंक दिया, जिसमें स्त्रियाँ अपने चेहरे को सम्पूर्ण जीवन-भर छुपाए रहती थीं, बल्कि सोवियत सत्ता द्वारा प्रदत्त नये जीवन को बहादुरी से अपनाया।

परम्पराएँ आसानी से खत्म नहीं होतीं, चाहे वे मानवीय गरिमा के विरुद्ध प्रतिक्रियावादी क्यों न हों। दूसरे दशक व तीसरे दशक के आरंभ में कॉकेशस व मध्य एशिया में अनेक स्त्रियाँ सड़कों पर यशमक या परंज पहने आती थीं। 'सेविल' के प्रदर्शन के बाद अज़रबैजान सिनेमा थियेटरों में अनेक यशमक उतार फेंके गये।

सेविल की भूमिका इज्ज़त ओरुजबेवा ने अदा की। लड़की को एक ही बार देखकर प्रोड्यूसर ने उसे इस भूमिका निभाने हेतु आमन्त्रित किया। वह नये जीवन का आरम्भ करने वाली स्त्री की भूमिका के लिए व्यवसायिक अभिनेत्री को नहीं लेना चाहता था, बल्कि जनता से, अज़रबैजान स्त्री को लेना चाहता था।

विकास के लिए स्थितियाँ आज तक प्रतिकूल हैं।

1975 में संयुक्त राष्ट्र संघ सम्मेलन (मेक्सिको) ने काम, शिक्षा व उन्नति में पुरुषों के समान स्त्रियों को समान अवसरों के अधिकार पर पुनः ज़ोर दिया। इसके द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों को उसी वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा ने स्वीकारा और संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णयों की शक्ति प्राप्त कर ली।

समूचे जगत् को इन प्रश्नों को सुलझाने में सोवियत संघ एक उदाहरण पेश करता है। 1926 में 60% स्त्रियाँ लिख-पढ़ नहीं सकती थीं। व्यावहारिक रूप में निरक्षरता अब हटा दी गयी है 1000 में से 781 स्त्रियाँ उच्च या 8-वर्षीय या 10-वर्षीय माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हैं।

उच्च या माध्यमिक विशेष शिक्षा प्राप्त विशेषज्ञों, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में मग्न हैं, में 59% स्त्रियाँ हैं। उद्योग में प्रत्येक दूसरा इंजीनियर स्त्री है। राज्य स्त्रियों को अति-शारीरिक कार्य से मुक्त करने में चिंतित है।

श्रमरत स्त्रियों की निपुणता को बढ़ाने में विशेष ध्यान दिया जाता है। अनेक संस्थानों में विशेष अध्ययन ग्रुप या पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जहाँ छोटे-छोटे बच्चे वाली स्त्रियाँ अपनी निपुणता को सुधार सकती हैं, कुछ मामलों में काम के घंटों के दौरान पढ़ने वाली स्त्रियों के वेतन में कटौती नहीं की जाती है।

उच्चतर विद्यालय का हर दूसरा छात्र लड़की है। तकनीकी संस्थाओं के छात्रों में अनेक स्त्रियाँ हैं। कुछ दशक पूर्व बाल-शिक्षण, चिकित्सा, ऐतिहासिक व मनोवैज्ञानिक संस्थाओं व विश्वविद्यालय के संकायों के छात्रों में अधिकतर स्त्रियाँ ही थीं। वे उन शैक्षणिक संस्थाओं के छात्रों का बड़ा भाग भी थीं जो उद्योग, निर्माण, परिवहन व कृषि के लिए विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करते हैं। स्वास्थ्य परिचर्या, शारीरिक संस्कृति, शिक्षा व कला के उच्च स्कूलों में स्त्रियाँ प्रमुख हैं।

समाजवाद के अन्तर्गत स्त्रियों व लड़कियों के लिए अपने कौशल व योग्यता के बढ़ने को सुनिश्चित करने में रचनात्मकता के अवसर हैं। 15,000 सोवियत स्त्रियाँ व लड़कियाँ लेखकों, संगीतकारों, चित्रकारों, वास्तु-शास्त्रियों, फिल्मकारों व पत्रकारों के संघों की सदस्या हैं। 150 से अधिक स्त्रियों को विज्ञान व तकनीक, साहित्य, कला व वास्तुकला के सभी क्षेत्रों में लेनिन व राज्य पुरस्कार मिला है।

सोवियत सत्ता के वर्षों के दौरान एक नये प्रकार की स्त्री का उदय हुआ है. वह पढ़ी-लिखी, स्वतन्त्र और परिवार व राज्य में सत्ता रखती है। सोवियत स्त्री योग्यता या परिश्रम में पुरुषों से पीछे नहीं है।

सोवियत संघ में अर्थशास्त्र, विज्ञान, संस्कृति, सामाजिक व राजकीय गतिविधि का कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ स्त्रियाँ बड़ी भूमिका अदा नहीं करती हैं। सिर्फ कुछ आँकड़े देना ही पर्याप्त है। सोवियत संघ में (1979 की जनसंख्या के अनुसार) 14 करोड़ 10 लाख स्त्रियाँ हैं। वे सभी प्रकार के श्रमिकों की 51% हैं, कृषि में

काम कर रहे लोगो की 44% है, उच्च या माध्यमिक शिक्षा में विशेषज्ञो की 59
हैं और वैज्ञानिक श्रमिकों की 40% है।

स्त्रियो की समानता के लिए, उनकी आर्थिक स्वतन्त्रता को सुनिश्चित कर
और उसके सांस्कृतिक व व्यवसायिक वृद्धि को नागरिक व राजनीतिक जीवन में
उसकी भागीदारी को सुगम बनाने के लिए सामाजिक रूप में उत्पादित श्रम में
भागीदारी एक निर्णायक शर्त है। स्त्रियाँ सामाजिक उत्पादन के सभी क्षेत्रो में भाग
लेती हैं सिर्फ उन कामो के अलावा जो उनके शरीर के लिए नुकसानदायक है।

सोवियत संघ व सम्बद्ध गणराज्यो की राजकीय संस्थाओ ने ट्रेड यूनियनो के
साथ संयुक्त होकर शारीरिक कार्यों के मशीनीकरण और 1975-85 में स्त्रियो
के लिए काम की स्थितियो को आगे सुधारने के लिए उपायो का प्रारूप तैयार
किया है और भारी व औसत स्थितियो वाले कामो व व्यवसायो की सूची तैयार
की है जहाँ स्त्रियो के श्रम को निषिद्ध किया गया है। 1 जनवरी, 1981 से ऐसे
कामो पर स्त्रियो को नहीं स्वीकारा जाता है और जो इन कामो में हैं उन्हे उसमे
मुक्त कर दिया गया है। मुक्त हुई स्त्रियो को नये कौशल सिखाए जाते हैं और
उन्होंने नये व्यवसाय अपना लिये हैं। पुन प्रशिक्षण काल के दौरान स्त्री को उसके
पूर्ववर्ती काम की औसत मजदूरी दी जाती है। बाद में उसे ऐसा काम दिया जाता
है जो उसके नये कौशल या व्यवसाय के समकक्ष हो और उसकी इच्छा के अनुरूप
हो।

ट्रेड यूनियनें व संस्थान के व्यवस्थापक यह देखते हैं कि स्त्रियां पुरुषो के ही
मान प्रवीण काम में लगें और काम करने की स्थितियाँ उनके स्वास्थ्य के अनुकूल
और उनके मातृत्व की पूर्णता में रोड़ा नहीं अटकाता है।

समाजवाद के अन्तर्गत स्त्रियो ने लगभग समस्त कौशलपूर्ण कामो पर महारत
सल कर ली है, जबकि क्रांति-पूर्व 80% स्त्रियाँ नौकरानी या फार्म के काम में
करने वाली थी और सिर्फ 4% ही शैक्षणिक या स्वास्थ्य परिचर्या संस्थाओ
म करती थी।

भी प्रकार के कामगारो की कुल संख्या में 1980 में स्त्रियो का
व्यापार व सार्वजनिक सेवाओ के क्षेत्र में कार्यरत था—84%,
, सामाजिक बीमा व शारीरिक संस्कृति में 83%, शिक्षा में
के क्षेत्र में 73%। निर्माण कार्य में स्त्रियो का सबसे कम प्रतिशत—
यातायात में 24%।

यत संघ में सभी डॉक्टरो में स्त्रियाँ 69% हैं, अर्थात् 661,0
लिए देखिए, वर्तमान आँकड़े के अनुसार अमेरिका
हैं अर्थात् 34,000।

बृहत्तर भागेदारी को सम्भव बनाया है।

अब अनेक स्त्रियाँ उद्योग, मुख्यतया इंजीनियर व मशीन-निर्माण मे और धातुकर्म के संस्थानों मे काम करती हैं। यह मशीनीकरण व स्वचालित उत्पादन प्रक्रिया का परिणाम है। हल्के उद्योग-धन्धे, जो काम कर रही स्त्रियो की संख्या के मामले मे पहले स्थान पर थे अब दूसरे स्थान पर हैं, क्योंकि मशीनीकरण की मात्रा मे, श्रम की अच्छी स्थिति मे और वेतन के मामले मे इंजीनियरिंग उद्योग हल्के उद्योग से आगे बढ़ गया है। साथ ही, हल्के उद्योग अभी भी मुख्यत एक 'स्त्री' शाखा है इसकी समूची श्रमशक्ति मे 77% स्त्रियाँ हैं।

हाल मे, स्त्रियाँ काफी संख्या मे सेनाओं मे नियोजित की गयी हैं।

कृषि की विभिन्न शाखाओं मे मशीनीकरण के उच्च स्तर के परिणामस्वरूप ग्रामीण स्त्रियो के काम मे एक गुणात्मक परिवर्तन हुआ है। हजारो सोवियत स्त्रियाँ स्वचालित कुक्कुट व पशु फार्मों व अन्य स्थानों पर आधुनिक कृषि मशीनरी को चला रही हैं।

श्रम व सामाजिक गतिविधि के समस्त क्षेत्रों मे उनकी विराट भागेदारी ने स्त्रियो को जीवन के प्रति एक रचनात्मक, सक्रिय दृष्टिकोण प्रदान किया है।

न सिर्फ व्यक्ति विशेष योग्य स्त्रियाँ बल्कि उनकी बड़ी संख्या उत्पादन व तकनीक के औचित्य स्थापन मे लगी हुई हैं और वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति मे योगदान दे रही है, यह तथ्य अब आश्चर्यजनक नहीं लगता है। 15 लाख से अधिक स्त्रियो को ऑर्डर और पदक प्रदान किए गये हैं और 5000 स्त्रियो ने समाजवादी श्रम के हीरो की सम्मानित पदवी पायी है।

सार्वजनिक व राजकीय मामलो मे सोवियत स्त्रियो की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। क्रांति-पूर्व रूस मे स्त्रियो को मत देने व अन्य नागरिक व राजनीतिक अधिकारो से वंचित किया जाता था या ये अधिकार काफी सीमित थे। आज देश मे सत्ता की उच्चतम संस्था, सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत मे एक-तिहाई डिप्टी स्त्रियाँ हैं। यह संख्या सभी पूँजीवादी देशों की पार्लियामेंट मे स्त्रियों की संख्या के योग से अधिक है। स्थानीय सोवियतों मे 10 लाख से अधिक स्त्री डिप्टी हैं. श्रमिक, सामूहिक कृषक व ऑफ़िस के कर्मचारी, और ये डिप्टियो की सम्पूर्ण संख्या का 49% है। एक बार फिर तुलना की दृष्टि से देखने पर हम पाते हैं कि फेडरल व सत्ता की स्थानीय संस्थाओं मे अमेरिकी स्त्रियाँ सिर्फ 5% हैं।

जनसत्ता की संस्थाओं मे और विभिन्न नागरिक संगठनों मे स्त्रियाँ अत्यधिक बुद्धि-कौशल का प्रदर्शन करती हैं और वर्तमान की समस्याओं पर राजनीतिज्ञ के समान दृष्टिकोण रखती हैं।

स्वेस्कियें गुबेरन्स्कीये वेदोमोस्ती समाचारपत्र ने 1862 मे सूती मिल पर कार्यरत स्त्रियों के बारे मे लिखा . "हमारे मिलों में बचपन से काम पर आने वाला

व्यक्ति न सिर्फ नैतिक पतन का बल्कि विचारों में मूल्यांकन का विषय भी बनता है।"

और आज क्या स्थिति है? अब एक श्रम सामूहिक नैतिक रूप में व्यक्ति का उत्थान करता है, राजनीतिक व समान विराट स्तर पर सोचने के लिए उसे सिखाता है।" ये शब्द वेलेन्टीना सल्मोवा के हैं जो ब्रिगेड बुनकरों के दल की नेता के रूप में आ स्वेच्छा से श्रम उत्पादक दल के पास गयी। आरम्भ में उसने अपने वेतन का एक-तिहाई हिस्सा खोया। लेकिन उसके वहां होने से दल बहुत शीघ्र तरक्की कर गया। तब वह एक बार फिर से श्रम उत्पादित दल में शामिल हुई और उसे भी ऊपर उठाया। उसने काम किया और पढ़ा-लिखा भी। वेलेन्टीना के हजारों अनुयायी हैं जिन्हें सल्मोवाइट कहते हैं।

स्त्रियों के आतुर हाथ, स्नेहमयी आँखों व आकर्षक मुस्कराहट के बिना आज के सस्थानों, सामूहिक फार्मों, वैज्ञानिक संस्थाओं, स्कूलों व अस्पतालों की कल्पना ही नहीं हो सकती है। सोवियत स्त्रियाँ बिना काम के जीवन की कल्पना नहीं कर सकती हैं जो उनमें उच्च नैतिक सन्तुष्टि और रचनात्मकता का आनन्द लाता है। जीवन के समस्त क्षेत्रों में स्त्रियों की भागेदारी के बिना समाजवादी समाज की प्रगति सोची नहीं जा सकती है। सामाजिक रूप में उपयोगी काम में भाग लेने, श्रम सामूहिक का हिस्सा बनने की उनकी इच्छा द्वारा, भौतिक स्वतन्त्रता, और पारिवारिक सुख की वृद्धि के लिए उनकी आकांक्षाओं द्वारा ही स्त्रियाँ उत्पादन में लगी हैं। ये उद्देश्य सभी स्त्रियों द्वारा बतलाए गये हैं चाहे उनकी उम्र, शिक्षा, स्तर या व्यवसाय कुछ भी हो।

पत्नी का वेतन पारिवारिक बजट का एक आवश्यक अंग बन चुका है। 100 में 60 विवाहित जोड़ों में स्त्रियाँ अपने पति के बराबर वेतन पाती हैं। यह विशेष रूप से उन युवा परिवारों में लागू होता है जहाँ पति-पत्नी का शैक्षणिक स्तर अधिक है। 25% पत्नियाँ अपने पति से अधिक वेतन पाती हैं और 25% थोड़ा कम पर यह अन्तर 30% से अधिक नहीं है।

हालांकि, कार्यरत स्त्रियों के विभिन्न समूह की श्रम गतिविधि के लिए मुख्य उद्देश्य भिन्न हैं।

कम या मध्यम कौशल वाली करीबन आधी स्त्रियाँ परिवार के लिए अतिरिक्त आय की आवश्यकता को काम करने की इच्छा का कारण बताती हैं, 1/5 भाग की इच्छा सामूहिक में रहने की है और दस में एक चाहती हैं सामाजिक श्रम में भाग लेने व आर्थिक रूप में स्वतन्त्र रहने को। उच्च कौशल प्राप्त स्त्रियों में सामाजिक श्रम में भाग लेने की इच्छा सबसे पहले आती है, सामूहिक में होने की इच्छा दूसरी और भौतिक विचार अंत में आता है। परन्तु प्राथमिकताओं के बावजूद, समाजवादी समाज में भौतिक प्रोत्साहन मुश्किल से व्यक्ति के स्वभाव का

एकमात्र लक्ष्य बनता है। अधिकांश मामलों में यह नैतिक उद्दीपन के साथ सम्बद्ध है।

यह उल्लेखनीय है कि अपने सामूहिक में आदी हो जाने के पश्चात् स्त्रियाँ श्रम गतिविधि के लिए मुख्य उद्देश्य के रूप में 'एक अच्छा श्रम-सामूहिक', 'स्वतंत्र कार्य, रचनात्मक कार्य करने व पहल दर्शाने के लिए एक अवसर' को बतलाती हैं। चलिए हम इसे समझाते हैं: सामाजिक उत्पादन की वृद्धि व बढ़ती हुई राष्ट्रीय संपत्ति के साथ स्त्रियों की भौतिक आवश्यकताएँ पहले से कहीं अधिक पूरी हो रही हैं। यह अपने स्थान पर आध्यात्मिक आवश्यकताओं के तुरन्त विकास को लाता है। उनमें रुचिकर काम के लिए आवश्यकता आवश्यक बनती जा रही है। सामाजिक संबंधों के सुधार के साथ अच्छे मानवीय, दोस्ताना रिश्तों को, जो काम की प्रक्रिया में उत्पन्न होते हैं, महत्त्व लगातार दिया जा रहा है। इसे ध्यान में रखना चाहिए, उन सबने जिनका जनमत संग्रह किया गया है, चाहे वे अपने व्यवसाय और काम के स्थान से संतुष्ट हैं या नहीं, इंगित किया है कि "घर पर रह रही स्त्रियों के मुकाबले श्रमरत स्त्रियों का एक विराट विश्व-दृष्टिकोण होता है और विशेष कौशल रखने वाली स्त्री को काम पर जाना चाहिए ताकि उसका कौशल खत्म न हो।"

सोवियत स्त्रियों ने बतला दिया है कि वे आधुनिक संस्थान व इसके विभागों की व्यवस्था के योग्य हैं।

व्यवस्था के प्रथम स्तर पर यानी फोरमैन, शिफ्ट, उत्पादन इकाई फैक्टरी की प्रयोगशाला, विभाग के प्रमुख में 32% स्त्रियाँ हैं। पाँच लाख से अधिक स्त्रियाँ संस्थानों की डायरेक्टर, निर्माण स्थलों, संस्थाओं, राजकीय व सामूहिक फार्मों की प्रमुख हैं। औद्योगिक संस्थानों के डायरेक्टरों में 11% के लगभग स्त्रियाँ हैं, जिसमें 18% वस्त्र उद्योग में और 29% परिधान निर्माण के उद्योग में हैं। हर दूसरे स्वास्थ्य परिचर्या संस्था में, हर दूसरे व्यापारिक संगठन, नागरिक सेवा संस्थाओं की प्रमुख स्त्रियाँ हैं। 32% माध्यमिक स्कूलों और 80% प्राथमिक स्कूलों की प्रधान स्त्रियाँ हैं। यदि हम याद करें कि अमेरिका में डिप्लोमाधारी विशेषज्ञ, जो प्रमुख पद है, स्त्रियाँ सिर्फ 2% हैं और स्कूलों के प्रधान में एक भी स्त्री नहीं है तब हम स्पष्टतः देख सकते हैं कि सोवियत संघ में स्त्रियों के व्यवसायिक विकास हेतु कितना कुछ किया गया है।

सोवियत संघ में कई स्त्रियाँ बड़े औद्योगिक, वैज्ञानिक व अन्य सामूहिकों की श्रेष्ठ व्यवस्थापक हैं।

महान अक्तूबर की 50वीं वर्षगाँठ गलीचा निर्माण संस्थान (ल्यूबेर्त्सी) की डायरेक्टर-जनरल इरीना सेर्गेयेव्ना लियोन्केविच का नाम न सिर्फ मास्को के आस-पास वरन् समूचे देश में फैला है।

एक रसायनज्ञ, वेरा चाची जैसी शिक्षिका'''फिर रुकी, कुछ देर शांत रही और यह जोड़ा 'और दादाजी जैसी दयालु'।"

इस बड़े सगठित परिवार मे दुःख की छाया पड़ी, हाल मे दादाजी—इरीना सेर्गेयेव्ना के पति—की मृत्यु हुई। वे हर मामलो पर एक-दूसरे की मदद करते हुए 43 वर्षों तक साथ-साथ रहे। 1946 मे अपने जुड़वाँ बच्चों अन्द्रेई व ओल्गा के जन्म का समय उसके लिए बहुत कठिन समय था। तब उसकी सहायता को उसकी माँ आयी थी।

"जब मेरे बच्चो के बच्चे हुए तब यह याद करके कि माँ की मदद मेरे लिए कितनी महत्त्वपूर्ण थी। मैंने भी जितना सभव हो सका मदद की हालांकि मैं खुद काफी व्यस्त थी। मेरे पति भी पोतो के काफी नजदीक थे। न ही हम लोग और न ही बच्चे कभी अलग होना चाहते थे, हम सब साथ-साथ रहते थे।" इरीना सेर्गेयेव्ना ने याद किया।

"फिर दादाजी हमें छोड़कर चल दिए। घर पर हम लोग एक-दूसरे की भावना को ठेस न पहुँचे इसलिए उनका उल्लेख करने से बचते थे। परन्तु एक बार मेरे बड़े पोते, 10 वर्षीय अन्द्रेई ने पूछा, 'दादाजी को हम क्यों नहीं बचा सके?' *हमने उसे समझाया कि यह एक अत्यन्त गभीर बीमारी थी और डॉक्टर उन्हे बचाने* मे असमर्थ थे। सोचते हुए अन्द्रेई ने कहा, 'जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, मैं डॉक्टर बनूँगा। मैं नही चाहता कि अपने दादा के बिना बच्चे रहें'।"

इरीना सेर्गेयेव्ना के पोतो ने उसके सक्रिय जीवन के उदाहरण को सहज ही पाया है और इसमें वह काफी गर्व महसूस करती है।

इस तरह, स्त्रियों की प्रमुख पदो पर काफी मात्रा मे तरक्की के लिए कोई मूलभूत बाधा नही आती है। इसलिए किस बात की हिचक है? पारिवारिक दायरे के काम, बच्चों के लालन-पालन की आवश्यकता, गृहस्थी चलाना यह स्त्री की अविच्छेद, प्रमुख आवश्यकता है। फिर साथ ही, उसकी प्रकृति के अन्य पह-लुओ को, सामाजिक जीवन मे भाग लेने की आवश्यकता प्राप्त करने मे इसे एक *बाधा नही होना चाहिए।*

एक माँ, पत्नी, गृहिणी को एक व्यक्ति और एक विशेषज्ञ के रूप मे अपनी क्षमताओ की प्राप्ति के लिए और अपनी प्राकृतिक योग्यता और उसकी शिक्षा के उपयोग के लिए अत्यन्त अनुकूल स्थितियों के निर्माण को करने मे समाजवादी समाज ने इस बात पर ध्यान रखा है।

उत्पादन सामूहिकों की सामाजिक विकास योजनाओं मे एक कार्यरत स्त्री का व्यावसायिक काम और उसके कौशल के अति तार्किक उपयोग के प्रश्न शामिल हैं। ये कृषि व उद्योग दोनों मे अधिक मशीनीकरण, विद्युतिकरण व श्रम के स्वचा-लितकरण, कुशल-हीन कार्यों की धीरे-धीरे समाप्ति, बच्चों वाली स्त्रियों मे कुशल

श्रमिक के प्रशिक्षण व पुन प्रशिक्षण के लिए एक विशेष प्रणाली के निर्माण और परिवार के लिए सेवाओं में विकास के द्वारा सुलझाए जाते हैं।

हल्के उद्योगों व वस्त्र उद्योगों में कार्यरत स्त्रियों को उनके कौशल को सुधारने में अधिक सुविधाएँ दी जाती हैं। उदाहरण के लिए, 8 वर्ष की उम्र तक के बच्चों वाली श्रमिक स्त्री यदि अपने कौशल को सुधारने के लिए पुन: प्रशिक्षण पाठ्यक्रम कर रही है तो अपने अध्ययन के दौरान वह काम से मुक्त है (यह एक, दो या इससे अधिक माह तक के लिए हो सकता है) और वह अपना औसत मासिक वेतन पाती है।

स्त्रियों की बढ़ती हुई व्यावसायिक गतिविधि, अपने काम में उनकी संतुष्टि की वृद्धि की समस्या को सुलझाना एक कठिन बात है जिसके अन्तर्गत उत्पादन के क्षेत्र व रहने की स्थितियाँ दोनों में पर्याप्त परिवर्तन आते हैं।

उदाहरण के लिए युकम्ली (युवा कम्युनिस्ट लीग) की 40वीं वर्षगाँठ परिध उद्योग सामूहिक (तिरस्पोल) को लें।

पारस्परिक समझ व बिरादराना सहयोग इस सामूहिक की एक विशेषता है युवा श्रमिकों पर विशेष ध्यान रखा जाता है। उत्पादन की व्यवस्था, योजना श्रम के वैज्ञानिक संगठन में अधिक स्त्रियों को लेकर सामूहिक के मनोविज्ञा वातावरण में सुधार को सहज बनाया जाता है। श्रमरत स्त्रियों के श्रम पहल विकसित व प्रोत्साहित किया जाता है। प्रत्येक श्रमरत स्त्री अपने कौशल सामान्य शिक्षा स्तर को सुधारे इसे देखने में प्रशासन व ट्रेड यूनियन उत्सुक रहा हैं। स्त्रियाँ किस प्रकार अपने अध्ययनों में तरक्की कर रही हैं इसकी ट्रेड यूनिय एक व्यवस्थित जाँच करती हैं। जो सायकालीन व तकनीकी स्कूलों में पढ़ती उनके लिए विशेष युवा दल—'8वीं कक्षा', '9वीं कक्षा' बनाए गये हैं। पाठों समय में, काम और पुस्तकों के बँटवारे में, छात्रों की प्रगति पर जाँच करने में ए टीम-कक्षा सुविधाजनक है। सायकालीन स्कूल में अच्छे ग्रेड पाने वाले को संस्था के कोष से उनके वेतन के अलावा वज़ीफ़ा भी मिलता है। फैक्टरी उनकी सेवाअ को सुधारने में अत्यधिक ध्यान देती है। संस्थान में परोसने को तैयार खाद्य-प्रभाग बाल काटने, कपड़े धोने और जूते सुधारने की दुकान खोली गयी है। फैक्टरी की पोली-क्लीनिक में सभी प्रकार के रोगियों का इलाज होता है और इसमें जल चिकित्सालय तथा आधुनिकतम उपकरण लगे हुए हैं। अवकाश के दौरान या काम के पश्चात् स्त्रियाँ धूप-स्नानगृह में जो फैक्टरी के भवन की छत पर स्थित है। धूप-स्नान कर सकती हैं।

अपने उत्पादन सामूहिक में नैतिक-मनोविज्ञानी वातावरण के बारे में फैक्टरी में काम करने वाली स्त्रियों की अच्छी राय है, जहाँ परस्पर बिरादराना सहयोग
के लिए, उनके परिवार व बच्चों के लालन-पालन के लिए चिन्ता

है, जहाँ हर कोई श्रम के उत्पादन को बढ़ाने में चिंतित है। यह जीवन का एक तरीका बन गया है। ऐसा वातावरण श्रमिकों के लिए अत्यन्त सतुष्टि का एक स्रोत है और पारिवारिक संबंधों पर अनुकूल प्रभाव डालता है।

परतु स्त्री, चाहे उसका जो भी व्यवसाय हो, पुरुष के समान बराबर कुशलता प्राप्त करने पर भी, अपने विशेष अधिकारों, यथा, एक प्रेममयी माँ और अच्छी गृहिणी, को खो नही सकती है।

रूसी कवि निकोलाई नेक्रसोव ने लिखा है - "स्त्री—यह एक सुन्दर शब्द है। उसके अन्तर्गत अपरिणीता की पवित्रता, मित्र की नि स्वार्थता, माँ के महान कार्य हैं।"

समस्त मानव समुदाय के और स्त्रियों के सामान्य लक्षणों का समरूप सलयन उसके व्यक्तित्व के अभिज्ञान के लिए और एक आनन्ददायक, आशा-भरी प्रवृत्ति के निर्माण हेतु आवश्यक है।

सोवियत संघ मे स्त्री की उत्पादन, विज्ञान व सस्कृति की ऊँची सीढ़ी मे चढ़ने मे परिवार कोई रुकावट नहीं बनता है। नि स्वार्थ, ईमानदार, उच्चतर उत्पादन श्रम स्त्री की इज्जत को न सिर्फ समाज मे बल्कि परिवार मे भी बढ़ाता है। परतु स्त्री के लिए परिवार मे अपने कामकाज को और अपने व्यवसाय को साथ-साथ चलाता एक सरल मामला नहीं है।

मिन्स्क, बेलोरसिया के एक युगल से पूछा गया "यदि घर पर बच्चे हों तो पत्नी का काम पर जाना क्या विवाह के स्थायित्व को प्रभावित करता है?" उत्तर यह पाया गया कि "इसका नकारात्मक प्रभाव होता है।" आधा जो सुखी विवाहित युगलों के उत्तर में यह अन्तिम स्थान पर आता है। दु खी विवाहित पुरुष इसे पहला स्थान देते हैं और दुखी विवाहित स्त्री के लिए यह दूसरे स्थान पर है।

स्त्री का व्यवसाय व परिवार के मध्य परस्पर निर्भरता पर एक गभीर विश्लेषण दर्शाता है कि विवाह के स्थायित्व और सतुष्टि की मात्रा का निर्धारण स्त्री के उत्पादन में श्रम करने से नहीं होता है बल्कि यह निर्भर होता है किस प्रकार कार्यरत पति-पत्नी के मध्य पारिवारिक दायित्वों का बँटवारा है। जहाँ पारिवारिक दायित्वों का सही-सही बँटवारा है वहाँ पत्नी का व्यवसायिक कार्य अपने विवाह पर जोड़ों की सन्तुष्टि की वृद्धि करता है।

सोवियत स्त्री सामूहिक में काम किए बिना अपने जीवन के बारे मे सोच नही सकती है। विभिन्न सामाजिक-व्यवसायिक समूहों व भिन्न शैक्षणिक स्तरों की स्त्रियों से जब पूछा गया कि वे स्वय के लिए किसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं—व्यवसायिक कार्य को या परिवार को, तब 90% ने उत्तर दिया, "दोनों महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे के पूरक हैं।" फिर, इस बात पर स्त्रियों ने जोर दिया कि कार्यरत स्त्री जीवन में अधिक रुचि लेती है, अधिक पढ़ती है, वैचारिक रूप में

मे वे संस्थान की विशिष्टता व परिवार के आकार पर ध्यान रखते हैं।

लेनिनग्राद परिधान संस्थान की 'घरेलू दुकान' मे विभिन्न व्यवसाय की स्त्रियाँ या वे जो कुशलहीन हैं, काम करती है। वे कई महीनो मे प्रशिक्षित होती है और एक विशेष काम सीखती हैं। संस्थान उन विशेष उपकरणो, जो उनके फ्लैट मे कम्पन को हटा देते हैं, सहित आवश्यक उपकरण लगाते हैं। 'घरेलू दुकान' का काम श्रम के वितरण के आधार पर आयोजित होता है. एक श्रमिक से दूसरे को तैयार विवरण दिये जाते हैं, कच्चा माल घर को दिया जाता है और तैयार उत्पाद लिया जाता है।

घर पर काम करने वाली स्त्रियाँ अक्सर अपने हिस्से मे ज्यादा काम कर जाती हैं। जिसके लिए उन्हे उनके वेतन के अलावा बोनस मिलता है। वे अपनी समस्याओ पर श्रमिको की सामान्य बैठकों मे विचार-विमर्श करती हैं, जिसमे समूचा सामूहिक उसके समाधान पर भाग लेते हैं। उन्हे वही सुविधाएँ व लाभ मिलते हैं, जो सामूहिक के अन्य सदस्यों को मिलते हैं। जैसे 'घरेलू दुकान' की एक श्रमिक तैमिला गुरेविच को हाल ही मे 3 कमरे का फ्लैट मिला है। अनेक स्त्रियाँ, जो घर मे काम करती है, सेनेटोरियम व मनोरंजन-गृहो के ट्रेड यूनियन व्यय-पत्र पाती हैं (अर्थात्, वे 30% व्यय उठाती हैं, बाकी ट्रेड यूनियन देता है) और उनके बच्चे पर्याप्त छूट के साथ ग्रीष्मकालीन कैम्पो मे भेजे जाते हैं।

घर पर स्त्रियों से व्यवसायिक काम कराने का विभिन्न संस्थानों का अनुभव सामूहिक से सामूहिक मे बदलता रहता है।

श्चेबिन धातु के फुटकर सामान की फैक्टरी (मास्को क्षेत्र) की कलात्मक वस्तुओ के प्रभाग के उत्पादन से एक परिचय दर्शाता है कि घर पर काम भी रचनात्मक हो सकता है। अपनी रचनात्मक क्षमताओ को व्यक्त करने का तरीका स्त्रियाँ खुद चुनती है: लकड़ी पर चित्रकारी, सजावटी साँचो या जेवरातो को बनाना, या कढ़ाई-बुनाई। स्पष्ट है, प्रस्तावित वस्तु कलात्मक स्पर्धा का विषय होती है। परन्तु कलात्मक परिषद के सदस्य प्रथम योगदान की नूतनता व मौलिकता की प्रशंसा करते हैं न कि उसे करने की व्यवसायिकता की।

इस पर ध्यान देना चाहिए कि पूँजीवादी देशों से अलग, जहाँ काम के छोटे दिन अक्सर स्त्रियों के विरुद्ध भेदभाव का रूप धारण कर लेते हैं, सोवियत संघ में कई छोटे बच्चो वाली स्त्री द्वारा काम के छोटे दिन का चुनाव स्वयं स्त्री का परमाधिकार है। वह किसी भी समय नियमित समय सारिणी को लौट सकती है। उसे बरखास्तगी का भय नहीं है न ही स्थायी रूप से छोटे दिन पर काम करना है। संस्थान स्त्रियो की पूरी क्षमता मे काम करने में रुचि रखते है। समस्त आवेदको के लिए पर्याप्त काम है।

घर पर काम करने के अवसर के साथ-साथ काम के छोटे दिन या हफ्ते से

स्त्रियों को अपने बच्चों और अपनी शिक्षा, सांस्कृतिक विकास व आराम के लिए पर्याप्त समय मिलता है। सोवियत स्त्रियों का विशाल बहुमत घर पर रहने को इच्छुक नहीं है। ऐसा क्यों? काम छोड़ने के स्थान पर वे शारीरिक व मनोविज्ञानी दोनों प्रकार के अतिरिक्त बोझ को लेने को क्यों तैयार हैं?

क्योंकि उन्होंने अपने सामाजिक व सार्वजनिक महत्त्व को महसूस कर लिया है, क्योंकि वे विशेष वातावरण के बिना नहीं रह सकती हैं, जो उनकी आत्म-जागरूकता व स्वाधिकार में सहायक है, तथा जो सिर्फ एक श्रम-सामूहिक में है और फिर परिवार की आय बढ़ती है। जैसे ही स्त्री अपने शैक्षणिक स्तर को बढ़ाती है और अपने काम में लिप्त रहती है, तब उसके लिए स्वयं को दकियानूसी विचार के साथ, कि समाज में उसकी भूमिका पत्नी व माँ की सीमित रहनी चाहिए, से सामंजस्य बिठाना कठिन होता है और वह व्यवसायिक काम को घरेलू कामकाज व पारिवारिक दायित्वों से तार्किक रूप में जोड़ने की काफी कठिन कोशिश करती है।

व्यक्ति के जीवन में और उसके व्यक्तित्व के विकास में परिवार व श्रम सामूहिक प्रमुख क्षेत्र हैं। सोवियत समाज में इन दोनों को निरंतर संयुक्त करने और एक-दूसरे के पूरक बनाने की प्रवृत्ति है। फिर, स्त्री के व्यवसायिक कार्य की प्रभावशालिता सिर्फ आर्थिक घटकों में सीमित नहीं है। उत्पादन में, समूची जनता के मामलों में व उनकी चिन्ता में उसकी भागेदारी, स्त्री की प्रतिष्ठा में वृद्धि करती है, उसे समाज व पारिवारिक संघ का समान सदस्य बनाकर, अपने स्वयं के भाग्य की, स्वयं की खुशी की स्वामिनी बनाकर उसके सर्वांगिक विकास की वृद्धि करती है।

चौका-चूल्हा

यह क्या है? यह है परिवार, घर, आपके सम्पर्कों का दायरा और चीजें, जो आपके चारो ओर है और आपको शारीरिक व आध्यात्मिक सुविधा दें।

यहीं पर व्यक्ति अपनी अनेक आध्यात्मिक व भौतिक आवश्यकताओं को तुष्ट करता है, अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करता है, नयी पीढ़ी का लालन-पालन करता है। इसलिए समाजवादी जीवन-पद्धति को सुधारने मे जीने की परिस्थितियो को अधिक सुधारना एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

घरेलू काम-काज, जो लेनिन के शब्दों मे असस्कृत रूप मे अनुत्पादी हैं, प्राचीन रूस के दैनिक जीवन का आधार था। अनेक परिवारों मे सभी काम शारीरिक रूप मे किए जाते थे। क्रातिपूर्व रूस के 800 शहरो मे सिर्फ 215 मे पानी नल से आता था, 178 मे बिजली का प्रकाश था और 23 मे सफाई की व्यवस्था थी। पुराने गावो मे, जहा दूसरे दशक के अन्त तक 85% जनसख्या रहती थी सामुदायिक सुविधाएँ नहीं थीं।

अक्तूबर क्राति के तुरत बाद—जब गृह-युद्ध समाप्त हुआ और देश की आर्थिक अस्थिरता को मुख्यतया खत्म कर दिया गया—जनता खाद्य व हल्के उद्योगो सहित बहुशाखीय उद्योग के निर्माण, राजकीय व्यापार व सार्वजनिक परिवहन के विकास के लिए तैयार हुई। इसी ने अन्ततोगत्वा श्रमसाध्य घरेलू काम-काजो से बड़े स्तर के सामाजिक उत्पादन मे हस्तातरित करना सम्भव बनाया।

फिर, समस्त आधुनिक सुविधाओं व श्रम बचाने वाले घरेलू उपकरणो सहित आवास, सार्वजनिक सेवाएँ और सामुदायिक व घरेलू काम के विकास के कारण घरेलू काम-काज का भार आसान बन गया।

जीने की परिस्थितियाँ परिवार की व्यक्तिगत चिंता नहीं रहीं। जीने की परिस्थितियों की समस्या को सुलझाने मे सोवियत समाज स्त्री व पुरुष के काम करने व परिवार मे अपनी भूमिका निभाने में व्यय होने वाले समय के मध्य आवश्यक समरूपता स्थापित करने में प्रवृत्त है।

कम्युनिस्ट पार्टी जनता के भौतिक व सांस्कृतिक स्तर को उठाने के कार्य को

[illegible] जाता रहा है। [illegible] वृद्धि, वेतन व [illegible] के लिए 310 अरब रूबल खर्च होते हैं। 1980 में औसत [illegible] 1.4 गुना बढ़ गयी। सामूहिक कृषकों की मजदूरी और [illegible] बढ़ी है। सामाजिक उपभोग कोष से [illegible] लगभग दुगुना हो गया है। [illegible] बढ़ा दिया है।

[illegible] और [illegible] निर्माण, [illegible] यातायात व संचार [illegible] मजदूरी बढ़ी है। दसवें पंचवर्षीय काल (1976-80) में अनुत्पादक सेवा (स्वास्थ्य [illegible] शिक्षा, संस्कृति, व्यापार, सार्वजनिक [illegible]) में [illegible] है, लगभग 3 करोड़ 10 लाख श्रमिक। [illegible] मजदूरी में बढ़ोतरी हुई। [illegible] में छोटी-बड़ी वेतन वृद्धि [illegible] पैसे की आय। ग्यारहवें पंचवर्षीय काल के दौरान भी बढ़ती जाएगी। वेतन व मजदूरी की वृद्धि के उद्देश्य हेतु राज्य ने 100 अरब से अधिक रूबल तय किये हैं। [illegible] पंचवर्षीय काल के अंत तक 13 से 16% बढ़ जाएगा। और भी अपेक्षाकृत कम आमदनी के श्रमिकों के वेतन में तीव्र दर से वृद्धि होगी। सामूहिक कृषकों का पारिश्रमिक 20 से 22% बढ़ जाएगा। उनके व्यक्तिगत सहायक कृषि से होने वाली आय को ध्यान में रखें तो सामूहिक कृषकों की आय फैक्टरी व ऑफिस के कामगारों के लगभग हो जाएगी।

दुरुह परिस्थितियों में कार्यरत लोगों का वेतन बढ़ता हो जाएगा। उत्तरी साइबेरिया व सुदूर पूर्व को दिए जाने वाला अतिरिक्त वेतन अब कुछ और लोगों को दिया जाएगा, और व्यक्तिगत शाखाओं में रात्रिकालीन काम के लिए अतिरिक्त वेतन की मात्रा बढ़ेगी।

सामाजिक उपभोग कोष के व्यय पर परिवार की पैसे की आय बढ़ेगी। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार ने बच्चों वाले परिवारों को सरकारी सहायता में बढ़ोतरी के लिए उपाय वाले कार्यक्रमों का समर्थन किया है। इस कार्यक्रम में 90 अरब रूबल लगेंगे। अन्य राजकीय कार्यक्रम श्रम के अनुभवी लोगों की सेवा-निवृत्ति के बाद की जीवन-स्थिति को सुधारने, फैक्टरी व ऑफिस के कामगारों और सामूहिक कृषकों के लिए कम-से-कम वृद्धावस्था व विकलांगता की पेंशन को और कमाने वाले की मृत्यु पर मिलने वाली पेंशन को बढ़ाने की परिकल्पना करता है। इसके लिए लगभग 60 अरब रूबल के अतिरिक्त धन की व्यवस्था की गयी है। बच्चों वाले परिवारों को राजकीय सहायता में वृद्धि से लगभग 5 करोड़ सोवियत नागरिकों की आय बढ़ी है।

बच्चों वाली स्त्रियों, युवा पीढ़ी व नव-विवाहितों के जीवन को सुधारने के

उपायों का लक्ष्य है बड़े परिवारों की आय को बढ़ाना, उनकी और विशेषकर युवा परिवारों की आवासीय स्थिति को सुधारना, स्कूल-पूर्व संस्थाओं के जाल को बढ़ाना ताकि उनकी सेवाएँ हर परिवार को मिलें, बच्चों वाली स्त्रियों के खाली समय को बढ़ाना, ताकि युवा पीढ़ी के लालन-पालन के लिए अच्छी स्थितियाँ निर्मित की जा सकें।

1985 में सामाजिक उपभोग कोष से अनुदान व लाभ की मात्रा 1380 अरब रूबल होगी। इसका अर्थ हुआ चार लोगों का परिवार वेतन के अलावा निःशुल्क व चिकित्सा परिचर्या, वजीफे, किराए में कटौती के रूप में लगभग 2000 रूबल प्रति वर्ष प्राप्त करेगा। कुछ ऐसे परिवार भी हैं जहाँ राजकीय बजट से अनुदान, संस्थानों व ट्रेड यूनियनों से भत्ते व सहायताएँ उनके वेतन का 100% तक है।

प्रति छात्र राजकोय व्यय सामान्य शिक्षण स्कूलों में लगभग 200 रूबल प्रति वर्ष है, माध्यमिक विशेष शैक्षणिक संस्थाओं में 700 रूबल प्रति वर्ष और उच्चतर स्कूलों में 1000 रूबल प्रति वर्ष होता है। नर्सरी में एक बच्चे के लालन-पालन पर 580 रूबल प्रति वर्ष से अधिक होता है और किण्डरगार्टेन में लगभग 500 रूबल होता है जिसमें राज्य द्वारा 80% देय है।

सामाजिक उपभोग कोष के सही व उद्देश्यपूर्ण उपयोग के द्वारा उच्चतर व निम्नतर आय वर्ग के परिवारों के जीवन स्तर में अन्तर को निरन्तर कम किया जा रहा है।

उदाहरण के लिए, परिवार में जितने अधिक बच्चे होंगे, बच्चों की शिक्षा पर प्रति वर्ष शिक्षा व्यय अधिक होगा। क्योंकि सोवियत संघ में यह कानून द्वारा स्थापित कर दिया गया है कि सभी बच्चे माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करेंगे जिसके फलस्वरूप निम्न आय वर्ग के परिवारों के बच्चों की शिक्षा के लिए सामाजिक उपभोग कोष से दिए जाने वाला धन उच्चतर आय के लोगों के देने वाले धन से अधिक ज्यादा होगा। व्यावसायिक, तकनीकी व माध्यमिक विशेष स्कूलों के मामले में भी यही बात है।

स्वास्थ्य परिचर्या के लिए राजकीय व्यय भी निम्न आय वर्ग के परिवारों के मामले में अधिक है।

निःशुल्क शिक्षा व चिकित्सा सेवाएँ परिवार के बजट को इसके व्यय के बड़े भाग से मुक्त करता है, निम्न आय के परिवारों के लिए यह एक महत्वपूर्ण बात है। फिर, निःशुल्क व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रत्येक को अपने काम के कौशल को सुधारने का एक समान अवसर निश्चित करता है जो बदले में वेतन में अन्तर को और परिणामतः भौतिक सुख-सुविधा के स्तर में अन्तर को कम करता है।

सामाजिक उपभोग कोष से लाभों के वितरण में परिवार का आकार व इसके

भौतिक सुख के स्तर पर सदैव ध्यान दिया जाता है, जो निम्न आय वर्ग के परिवारों के बजट मे एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

स्कूल-पूर्व सस्थाओ, प्रवर्धित दिन समूह और बोर्डिंग स्कूलो मे बच्चो को भेजने मे बडे परिवार को प्राथमिकता दी जाती है, जिसके लिए वे नाममात्र राशि ही देते हैं। निम्न आय वर्ग के परिवारो के बच्चे भुगतान से मुक्त हैं या उन्हें स्कूलों व प्रवर्धित दिन-समूहों पर भोजन पर सिर्फ थोडा-सा देना पडता है। बोर्डिंग स्कूल (जहाँ बच्चे पूरे स्कूली वर्ष मे रहते हैं) के लिए उनके माँ-बाप 50% कम देते हैं और वे कई भुगतानो से मुक्त हैं।

सेनेटोरियम, रेस्ट-हाउस व युवा पायोनियर कैंपो के लाभदायक व निःशुल्क व्यय-पत्रो के वितरण मे परिवारो की भौतिक अवस्था के स्तर पर ध्यान दिया जाता है। 4 या अधिक आश्रितो के परिवार को 15% कम किराया देना होता है।

सामाजिक उपभोग कोष से आय, जो वर्तमान मे परिवार की आय का एक तिहाई है, निरतर बढ रही है।

सामाजिक उपभोग कोष से राजकीय अनुदान व सहयोग के फलस्वरूप परिवारो के भौतिक सुख मे अन्तर निरन्तर हटाया जा रहा है। उदाहरण के लिए, यदि निम्न आय वर्ग से एक उच्च आय वर्ग के परिवार का वेतन औसतन दुगुना है तो सामाजिक उपभोग कोष से अनुदान इस अन्तर को 50% कम कर देता है। सामाजिक उपभोग कोष, जो समूची जनता और प्रत्येक व्यक्ति के हितो के लिए बनाया गया है, समानता व सामुदायिकता पर आधारित विकसित सम्बन्धो और भविष्य पर सोवियत जनो के विश्वास को मजबूत करने मे एक महत्त्वपूर्ण साधन है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वी कांग्रेस द्वारा अपनाया सामाजिक विकास व जनता के जीवन स्तर को बढाने के लिए कार्यक्रम अपने स्वरूप में जटिल है। 11वी पचवर्षीय योजना के लिए और एक लम्बे काल के लिए विस्तृत उपाय समूची सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को, जो समाजवादी जीवन-पद्धति को निर्धारित करते हैं, सुधारने की कल्पना करते हैं।

व्यक्ति, उसकी जरूरतो व आवश्यकताओ के लिए चिंता, जैसा एक बार फिर कांग्रेस के दस्तावेज़ों ने कहा है, पार्टी की आर्थिक नीति के क [illegible] ग हैं, इसलिए जनसख्या के लिए वस्तुओं का उत्पादन, सेवाओं का विकास सोवियत राज्य का प्राथमिक कार्य है। जैसा पहले कहा जा चुका है, सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने मई 1982 मे 1990 तक के लिए सोवियत सघ [illegible] को स्वीकारा है। पार्टी के समक्ष ये कार्य हैं : देश की आर्थिक क्षमता

सेवाओं की स्थायी आपूर्ति को संक्षिप्त सम्भव समय पर पक्का करना। इसका अर्थ हुआ सोवियत जन की सुख-सुविधा में सुधार होगा।

श्रमरत जनता का बढ़ता हुआ भौतिक व सांस्कृतिक स्तर उनके व्यक्तिगत सम्पत्ति में बढ़ोत्तरी का द्योतक है। प्रत्येक व्यक्ति के कार्य की उत्पादकता जितनी अधिक होगी उतने ही अधिक भौतिक वस्तुओं को वह अपनी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हेतु प्राप्त करता है। सोवियत जन की श्रमरत व जीवन परिस्थितियाँ अधिक सुधरेंगी।

स्वास्थ्य परिचर्या, शिक्षा, विज्ञान, कला व समूची संस्कृति में प्रगति को सुनिश्चित किया गया है।

यह सब कुछ एक नये व्यक्ति के निर्माण में सहायता करता है और व्यक्ति के सर्वांगिक विकास को सुनिश्चित करता है।

व्यक्ति के सामान्य पारिवारिक जीवन के लिए अच्छे आवास का होना आवश्यक है और यह, स्वाभाविक रूप में, अधिक व्यय लादता है। समाजवाद के अन्तर्गत इन खर्चों का मुख्य भार कौन उठाता है ?

यह स्वीकार कर लिया गया है कि समाजवादी समाज में आवास निर्माण का मुख्य भार राज्य उठाता है और विद्यमान आवासीय कोष की देखभाल के लिए प्राथमिक रूप में सामाजिक उपभोग कोष से भुगतान होता है।

देश की विरासत वास्तव में दुखद थी। 1918 में दो-तिहाई मास्को निवासी तहखानों या 2 से 3 खाट रख पाने वाले छोटे कमरों में रहते थे। प्रति व्यक्ति औसत रहने का स्थान सिर्फ 2 वर्ग मीटर था। यदि हम क्रान्तिपूर्व के काल में रूस के शासकों—ज़ार का परिवार, बड़े ज़मींदार, व पूंजीपति—के विराट 'रहने के स्थान'—महल, व्यक्तिगत घर, गाँव में ज़मींदारी—पर ध्यान दें, तब यह संख्या आश्चर्यजनक है। श्रमिकों व उनके परिवार के लिए रहने का स्थान कितना कम बच जाता था इसकी कल्पना कोई भी अच्छी तरह से कर सकता है। समाजवादी क्रांति के बाद सोवियत शक्ति ने आवास में इस असमानता को दूर करने के लिए उस वक्त एकमात्र उपलब्ध साधन का निर्णायक उपभोग किया—समृद्ध घरों में श्रमिकों को बसाने व घरों का पुनः वितरण। परन्तु एक अस्थायी उपाय होने के कारण यह अपर्याप्त था। अधिक व अच्छे मकानों का निर्माण आवश्यक था। सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ फ्लैटों के ब्लॉक का विराट स्तर पर निर्माण आरम्भ किया गया। आवास की समस्या का समाधान एक अच्छी शुरुआत से हुआ। परन्तु 1941 में हिटलरी गुण्डों ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया, मृत्यु व विनाश के बीज बोये: 250 लाख लोग बिना छत के रह गये। सब कुछ नया बनाना था।

समूचे देश में विराट आवास निर्माण आरम्भ किया गया। अपने इस स्वरूप में सोवियत संघ अब संसार में पहले स्थान पर है। सातवें दशक में निर्मित फ्लैट के

[illegible] घरों का [illegible] इसके [illegible] आराम व [illegible] अधिक है।

इस किसी भी [illegible] व्यवस्था में और अधिक प्रस्तुत कर रहा है जो पिछले 20 से 30 वर्षों के दौरान आवास निर्माण के क्षेत्र में [illegible] है।

उदाहरण के लिए, सोवियत लिथुआनिया में 1960 से गृह-निर्माण के लिए प्रति व्यक्ति आवंटन 300% बढ़ गया। यहाँ प्रति वर्ष लगभग 20 लाख वर्ग मीटर घर बन रहे हैं। नए कस्बे व बस्तियाँ बन रही हैं और पुराने शहर नये परिवेश पा रहे हैं। 140,000 से अधिक लिथुआनियन नये घरों में बस रहे हैं।

11वीं पंचवर्षीय योजना काल में एक विराट गृह-निर्माण कार्यक्रम बनाया गया है। देश में 5300 से 5400 लाख वर्ग मीटर का घरों का क्षेत्रफल निर्मित होगा। आज 80% शहरी परिवार अलग फ्लैटों में रह रहे हैं। राज्य द्वारा प्रदत्त नये घर का वितरण अधिकतर प्रत्येक परिवार के लिए अलग घर के सिद्धांत पर होता है। नये घरों के निर्माण में भौगोलिक व मौसमी परिस्थितियों व राष्ट्रीय परम्पराओं को निरन्तर ध्यान में रखा जा रहा है।

देश के उत्तरी क्षेत्र का उदाहरण लें। चुकोत्का में और कम्चत्का के अनेक भागों में शहरी ढंग की बस्तियों में आरामदायक गृहों को बनाया जा रहा है। परंतु तैमूर व चुकोत्सा में और उत्तरी कम्चत्का में अभी भी एक कम या यरंग पाना सम्भव है, जिसमें वहाँ के स्थानीय निवासी शताब्दियों से रह रहे हैं। हम यह जानने में उत्सुक थे कि लोगों ने क्यों परम्परागत घर रख रखे हैं।

हमने रहने वालों से पूछा "क्या आपको घर ठुंसा हुआ भरा नहीं लगता है? क्या आपका परिवार इतना बड़ा है?" उन्होंने कहा, "नहीं, हरेक के लिए पर्याप्त जगह है। जानते हैं यह एक आदत है। आग के निकट बैठना अच्छा लगता है - यहाँ गर्माहट व सुख-चैन है।" बुजुर्गों के लिए शहरी ढंग के घरों में रहने का आदी होना विशेष रूप से परेशानी की बात है। इस समस्या को किस प्रकार सही ढंग से सुलझाएँ? वापस यरंग बनाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसमें कई कमियाँ हैं: रोशनदान नहीं हैं और यह ठंडा व धुंए से भरा होता है, लोग कभी-कभी ही अपने ऊपर के वस्त्र को उतार पाते हैं। लेकिन दूसरी ओर परम्परा को, उत्तर के निवासियों की इच्छाओं को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है।

एक निर्माण संस्था ने एक मौलिक गृह योजना बनाई है जो आधुनिक आवश्यकताओं व उत्तर के निवासियों की युगों पुरानी परम्पराओं का ध्यान रखती है। यह एक पूर्व-निर्मित अष्टभुजी इमारत है, केन्द्र में एक बड़ा सामान्य कमरा है। कमरे के मध्य में आग रखने का स्थान है। यह न सिर्फ उत्तरी निवासियों के आराम की आवश्यकताओं को पूरा करता है बल्कि यरंग के आंतरिक स्वरूप के सदृश्य है। बच्चों व माँ-बाप के सोने के कमरे, कपड़े सुखाने के लिए विशेष खानों के साथ

एक हॉल और भंडार के साथ रसोईघर, सामान्य कक्ष से जुड़े हुए हैं। शिकार के लिए आवश्यक उपकरणों व मछली मारने के सामान को सुधारने व रखने के लिए और चमड़े को कमाने के लिए अतिरिक्त जगह भी है। अभी तक सिर्फ थोड़े से ही ऐसे मकान बनाए गये हैं, क्योंकि अभी भी ये परीक्षण की अवस्था में हैं। वास्तुविद् योग्य, आरामदायक गृहों के निर्माण पर अपना काम कर रहे हैं।

सोवियत संघ पर घूमने आने वाले विदेशी अक्सर कम किराए को देखकर अचम्भित होते हैं। राजकीय आवास में एक वर्ग मीटर रहने के स्थान के लिए सोवियत जन को 13 से 16.5 कोपेक प्रति माह देना पड़ता है।

सोवियत संघ का संविधान सोवियत संघ में निःशुल्क व अनिश्चित काल के लिए फ्लैट प्रदान करने की प्रतिज्ञा करता है।

1928 से किराए में परिवर्तन नहीं हुआ है। जैसा पहले कहा जा चुका है किराए का औसत परिवार की आय का लगभग 3% है। ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टर व अध्यापक कोई भी किराया या सुविधा-शुल्क नहीं देते हैं। सोवियत संघ के हीरो, समाजवादी श्रम के हीरो, 1941-45 के महान देशभक्ति युद्ध में अपंग अनुभवी व्यक्ति जैसे लोगों को जिन्होंने राज्य की विशेष सेवा की है किराए व सुविधाओं का 50% कम भुगतान करना होता है।

सुविधा शुल्क के साथ किराया आवासीय कोष के सामान्य व्यय का सिर्फ एक-तिहाई होता है। बाकी को अर्थात् 50 अरब रूबल प्रति वर्ष राज्य द्वारा किया जाता है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में उल्लेखित लक्ष्य, यथा नव-विवाहितों सहित प्रत्येक परिवार को एक आरामदायक फ्लैट प्रदान करना, का पार्टी पक्की तरह से पालन करती है। पहले अनेक शहरी एक सामुदायिक इमारतों में, और एक फ्लैट में अनेक परिवार, रहते थे। आज, अधिकांश परिवार अलग-अलग फ्लैटों में रहते हैं।

आवास-निर्माण के विशाल स्तर के बावजूद अभी भी आवास की माँग को पूरा करना कठिन है। कीव शहर की कार्य-संचालक समिति के चेयरमैन, व्लादीमीर गुसेव ने कहा, "हम, म्युनिसिपल अधिकारी जीवन के चक्रीय प्रकृति में फंसे हुए हैं। अपना पहला फ्लैट पाकर परिवार खुश होता है। फिर आते हैं बच्चे—और फिर वहाँ भीड़-भाड़ हो जाती है। वे नये फ्लैट में जाते हैं—फिर सब ठीक-ठाक हो जाता है। लेकिन इसे ध्यान देने के पहले, उनकी बेटी या बेटा बड़ा हो जाता है और विवाह करता है। और फिर उसी बात की शुरुआत होती है'...।"

कीव में हर 15 मिनट में एक बच्चे का जन्म होता है और हर 20 मिनट में एक नया घर बनता है।

समाजवादी जीवन-पद्धति, जिसे सोवियत जन ने स्वीकार किया है, का एक

महत्वपूर्ण स्वरूप है निरंतर आवास को सुधारना, स्पष्ट है राजकीय सर्वे प

किराएदारो से सिर्फ फ्लैट को सही हालत में रखने की ही उम्मीद की है, ताकि वह भावी पीढ़ियों की भी सेवा कर सके। शहर या प्रान्तीय ना संगठनों द्वारा फ्लैटों की स्थिति व सुधार की नियमित जाँच होती है जिससे स सही व्यवस्था होती है।

ग्रामीण क्षेत्रो मे आवासीय समस्या सफलतापूर्वक सुलझाई जा रही है। परिवार शहरी ढंग के फ्लैटो को पसंद करते हैं और उनके लिए सही प्रकार निर्मित किए जा रहे हैं। परन्तु ग्रामीण निवासियो का विशाल भाग थोड़ी सी जहाँ वे फलदार पेड, छोटा-सा बगीचा लगा सकें व जानवर व मुर्गियाँ पाल के साथ एक परिवार वाले घर को पसंद करते हैं।

स्मोलेन्स्क क्षेत्र मे एक गाँव मे रह रहे युवा परिवार ने लेखक को अपने पर बुलाया। उनके पास 4 कमरे, काँच वाले 2 बरामदे और मोटरसाइ जोडने वाली एक बेंच, एक गोल आरी तथा औजारो के अच्छे सेट के साथ गैराज (जो वर्कशॉप का काम भी करता था) थे। अपने बाग मे वे स्ट्रॉबेरी व बोते हैं। पशु व मुर्गी के लिए शेड भी है तथा एक छोटा-सा पोखर, जिसे उ खुद बनाया है। घर पर नल गैस व सफाई की व्यवस्था है। हम कुछ और ल के साथ बडे भोज के लिए बैठे। युवा जोडे के माँ-बाप उनके साथ रहते है पडोसी व मित्र अक्सर आते रहते हैं।

अलग घर पर रहने की लोगो की इच्छा की सन्तुष्टि मे सहकारी गृह-समि का विकास मदद देता है। सहकारी गृहो का निर्माण (शहर व गाँव दोनो मे) आरम्भ होता है जब सदस्य व्यय का 40% सोवियत संघ के निर्माण के बैंक जमा कर देते है। बैंक बचे हुए 60% को, जो 0 5% ब्याज की दर पर 1 वर्षों के भीतर चुकाया जाता है, दे देता है।

यदि कोई व्यक्ति सहकारी आवास मे शामिल होने के पश्चात् 5 साल त फार्म पर काम करता है तो बचे हुए ऋण के 15% को राजकीय फार्म चुका दे है। यदि वह 5 वर्ष और काम करता है तो बचा हुआ ऋण 30% घट जाता है साथ मे राजकीय फार्म, फार्म के सामाजिक-सास्कृतिक विकास कोष से 1,50 रूबल और ब्याज रहित 3,500 रूबल की आर्थिक सहायता प्रदान करता है। य किसी व्यक्ति ने सहकारी आवास मे शामिल होने के 5 वर्ष पहले फार्म पर का किया हो तो फार्म ऋण का 20% अदा करता है और मशीन के ऑपरेटरो के मामले मे तो 50% तक अदा करता है।

मास्को के निकट बोरेट राजकीय फार्म में 'मोलोदेज्नी' नामक गृह सहकारी का निर्माण किया गया है। इसने पहले मे ही कई घरो का निर्माण किया है, जिसने

और उनमें अनेक पेड़ हैं। पास मे ही मास्को नहर बहती है। वास्तुविद्, नक्शा-नवीसी व फार्म के लोग घरों के समूह के निर्माण में अत्यधिक श्रम लगाते हैं। नये घरो मे प्रथम 35 परिवार पहले से ही बस गये हैं और अन्य 25 घरो के लिए नीवें शीघ्र ही डाली जाएँगी।

"मेरा बेटा सेरीओझा और मैं पहले से ही सहकारी के सदस्य हैं", स्नेहमयी नीना ब्लादीमीरोवा कहती हैं, "परन्तु राजकीय फार्म की केन्द्रीय बस्ती मे काफी ऊँची इमारत है। फिर हमने 'मोलोडेझ्नी' गृह सहकारी के बारे मे सुना।"

"माँ, क्यो न हम इसमे शामिल हो जाएँ", सेरोओझा ने मुझसे पूछा। "मैं जमीन के निकट ही रहना चाहूँगा।"

"मैं भी इसके बारे मे सोच रही थी। मैंने अपना आधा जीवन किसान के घर पर गुज़ारा। दरवाज़े के सामने ही ज़मीन है। अपने बुढ़ापे मे इतने ऊपर रहना किसलिए। नहीं, नीचे की मंज़िल मे रहना बुरा विचार नही है। परन्तु मैं सोच रही थी क्या वे हमे 'मोलोडेझ्नी' मे स्वीकार करेंगे? फिर भी सेरीओझा मे कुछ सत्ता दिखती है, काम पर उसके बारे मे अच्छा सोचा जाता है और तकनीकी स्कूल से वह कृषि विशेषज्ञ के रूप मे स्नातक हुआ है। वह श्रमिकों के दल का नेता नियुक्त हुआ, जो विभिन्न कार्यों को करता था और वह अपने काम पर अच्छा था, इसलिए अब हमारे पास अपना घर, बहुत ही अच्छा घर है। कुछ हैं जो पूछते हैं 'तुम्हे इतना बडा घर क्यो चाहिए?' मैं उनसे कहती हूँ कि लोगों को आगे की सोचनी चाहिए। अभी तक सेरीओझा ने विवाह के बारे मे कुछ नही सोचा है। वह फिर से एक कृषि-संस्थान पर पत्राचार कार्यक्रम मे अध्ययन करने लगा है, लेकिन किसी दिन उसका परिवार होगा और तब बडा घर काम मे आयेगा।"

फ़ार्म-प्रबन्धक और शहरी पार्टी समिति द्वारा प्रदर्शित चिंता ने नये गृह-निर्माण में बडी भूमिका निभाई है। उन्होने आवश्यक उपकरण की पूर्ति की है और नीव डालने के लिए विशेष दल भेजे हैं। निर्माण दल कुशल था और घर समय पर तैयार हुए।

राजकीय फ़ार्म ने गृह-सहकारी को कामगारों के स्थायी कैडर प्राप्त करने की महत्त्वपूर्ण समस्या के समाधान के रूप मे लिया। बोरेट फ़ार्म के डायरेक्टर पी० स्पीरिडोनोव ने कहा, "हमने पहले भी राजकीय खर्च पर घरों का निर्माण किया है। परन्तु वे ऊँची मंज़िल के थे और हरेक के लायक न थे। कामगार छोटे घरों के साथ मे थोडी-सी ज़मीन मे रहना चाहते हैं। यही आज के युवाओं की प्रवृत्ति है। और वे फ़ार्म के वर्तमान व भविष्य हैं..."

चलिए, अब हम देखें फ़ैक्टरियाँ कैसे अपने कामगारों के परिवारों का ध्यान रखती हैं।

कीव मे अस्त्रागार फ़ैक्टरी, जो 18वीं शताब्दी की है, एक आधुनिक संस्थान

है, जो साथ में प्राचीनकालीन श्रेष्ठ क्रांतिकारी व श्रमिक परम्परा को अक्षुण्ण रखता है।

यहाँ परम्परागत रूप में, श्रमिकों के परिवारों के लिए, विशेषकर युवा परिवारों के लिए चिन्ता है। 800 से अधिक विवाह हुए और करीबन 500 व्यक्ति प्रतिवर्ष नये फ्लैटों में रहने गये। आरम्भ में एक युवा परिवार एक होटलनुमा, रसोई व स्नानघर सहित एक कमरे के फ्लैट की गृह-इकाई में रहता है। बाद में परिवार को उनके आकार के अनुसार स्थायी फ्लैट दिया जाता है।

विवाह, बच्चे का जन्म, नये घर में प्रवेश, अनदेखे संकट—ये सब सिर्फ सम्बद्ध लोगों के व्यक्तिगत मामले नहीं हैं। जब तक अपने पाँव पर खुद न खड़े हो जाएँ, नव-विवाहितों को हर प्रकार की सहायता दी जाती है। इसमें सामूहिक को 'नव-विवाहितों के क्लब' द्वारा सहायता मिलती है। यहाँ नव-विवाहित युगल को परिवार व गृहस्थी की विभिन्न समस्याओं पर सुझाव व सलाह दी जाती है।

'फैक्टरी हमें देने की चिन्ता में रहती है", एक युवा अस्त्र-निर्माण करने वाले श्रमिक ने कहा। श्रम सामूहिक पारिवारिक जीवन में सक्रिय रुचि रखता है। उदाहरण के लिए, युवा परिवार के लिए कुछ दिशा-निर्देशन हैं, जो नैतिक व आध्यात्मिक वातावरण, जिसमें युवा युगल रह रहा है, हेतु गम्भीर चिन्ता व्यक्त करता है।

"अपनी मातृभूमि से प्रेम करो, इसके लिए काम करो, इसकी सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहो। अपने बच्चों के लिए 'मैं प्रकृति को कैसे बचाए रखूँ' नामक पत्रिका घर पर रखो। अपने बच्चों के अच्छे कामों पर साथ रहो। अपने पूर्वजों का आदर करो, परिवार में पुराने स्मृति-चिह्न, फोटोग्राफों को सकलित करो। तुम्हारा सारा परिवार मेल-जोल में भाग ले। अपने बच्चों में काम करने की आदतों को प्रोत्साहन दो।"

"परिवार के हर सदस्य को एक काम मिलना चाहिए। अपने रख-रखाव की कभी भी उपेक्षा न करो। अपने घर पर अपने बच्चों के लिए पार्टियाँ रखो, अपने लड़के व लड़कियों के मित्रों को घर पर आमंत्रित करो। उनका स्वागत करो।"

ब्रनो विश्वविद्यालय (चेकोस्लोवाकिया) के समाजशास्त्री प्रयोगशाला ने कई छात्रों के मध्य एक सर्वेक्षण किया: 'भविष्य के आदर्श घर के बारे में तुम्हारी क्या राय है?' छात्रों का उत्तर था: 'मेरा आदर्श घर [illegible] का नहीं [illegible] पूरा होगा। किशोर अपने घर को [illegible] वातावरण में चाहते हैं। लड़कों ने (अन्यों से अधिक) ऐसी आवश्यकता पर विशेष बल दिया। सिर्फ 15% [illegible] 5% [illegible] युवा [illegible] के मध्य में रहना पसन्द करते हैं। [illegible] के लिए [illegible] इमारतों में रहना चाहते हैं। [illegible] युवा परिवार के लिए 3 कमरों का [illegible] युवा दम्पति [illegible]

चार कमरों का फ्लैट पसन्द करेंगे।

'फ्लैट नजदीक-नजदीक नही होने चाहिए, मैं घूमने-फिरने की जगह चाहता हूँ। मैं माल-गोदाम मे नही रहना चाहता हूँ' युवा अपने घर पर क्या देखना चाहेंगे ? 'किताबें, टेलीविजन, स्टीरियो, टेप-रिकार्डर' सादगी व आसानी— उन्हें यह अत्यन्त आवश्यक है। वे संग्रह के निरर्थक उद्देश्य से प्रेरित नहीं हैं।

क्या इसका अर्थ है सोवियत युवा आराम के विरुद्ध हैं ? मुश्किल से, जो कुछ उनके माँ-बाप के लिए नया है, उदाहरणार्थ घरेलू उपकरण, उनमें से अधिकाश को तो वे मानकर चल रहे हैं। वे अपने घर को न सिर्फ खाने व सोने का स्थान मानते हैं, बल्कि जहाँ पर वे अपने को अच्छे-अच्छे संगीत व पुस्तकों से परिचित हो सकें, मानते हैं।

सोवियत परिवार का सांस्कृतिक वातावरण अत्यधिक विशाल अवधारणा है। इसके अन्तर्गत घर का सुरुचिपूर्ण रूप, गृहस्थी का विवेकपूर्ण काम, और परिवार के सबंध आते हैं।

फ्लैट का रूप, उसमे रह रहे परिवार के बारे मे, उनकी पसन्द व आसपास की वस्तुओं के प्रति उनके दृष्टिकोण के बारे मे काफी कुछ व्यक्त करता है। एक सुरुचिपूर्ण घरेलू वातावरण को बनाने की समस्या के बारे मे सोवियत समाचार-पत्रों पर बहस होती रहती है।

आंतरिक सजावट के बारे में यदि कोई कुछ सीखना चाहता है तो जन-विश्व-विद्यालयो पर पाठ्यक्रम आरम्भ कर सकते हैं। भाषण सुन सकते है या घर वालों के क्लब' मे शामिल हो सकते हैं। आंतरिक सजावट पर सलाह देने वाली पुस्तके और शहरी व ग्रामीण फ्लैटों को सजाने वाली पुस्तकें भी उपलब्ध है।

रहने की परिस्थिति को सुधारने के लिए माँग को सन्तुष्ट कर पाना सदैव सम्भव नहीं है, क्योकि जनसख्या की क्रयशक्ति और परिणामत माँग फर्नीचर व अन्य अनेक वस्तुओं के उत्पादन से ज्यादा तेजी से बढ रही है। देश के लघु कालीन आर्थिक विकास योजनाओ मे इस बात का ध्यान रखा जा रहा है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की अक्तूबर प्लेनरी बैठक (1980) पर लियोनिद ब्रेझनेव ने कहा: "खाद्य आपूर्ति मे सुधार पहला प्रश्न है जिस पर सोवियत जन का जीवन-स्तर निर्भर रहता है।" फिर, हम खाद्य कार्यक्रम की ओर मुडते हैं, जिसे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं कांग्रेस के सुझाव पर बनाया गया था और सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने मई '82 की प्लेनरी बैठक मे स्वीकारा था। सोवियत संघ में खाद्य उत्पाद सामूहिक व राजकीय फार्मों द्वारा उत्पादित होते हैं।

अतिरिक्त खाद्य सामग्री श्रमिक-जन के सहयोगी व्यक्तिगत जमीन से आती है जो जनसख्या को गोश्त, दूध, सब्जी व फल की [illegible]

जमीन के वे भाग हैं जिन्हें सरकार ने कृषकों, श्रमिकों व ऑफिस में काम करने वालों को नि:शुल्क दिए हैं।

उच्चतर वेतन के परिणामस्वरूप, सोवियत सत्ता के दौरान खाद्य के लिए परिवार के बजट का भाग 50% घट गया। आज एक औसत परिवार अपनी आय का एक-तिहाई से थोड़ा अधिक ही अपने भोजन पर व्यय करता है।

खाद्य पर घटा व्यय परिवार को अन्य चीजों पर अधिक खर्च करने की इजाजत देता है। अब जनता अधिक स्थायी व सांस्कृतिक सुख-साधनों पर खर्च करती है। यह सोवियत परिवार के भौतिक व सांस्कृतिक आवश्यकताओं के नवीन स्तर को प्रतिबिम्बित करता है।

परिवार के ऊँचे जीवन स्तर ने घरेलू उपकरणों की माँग को बढ़ाया है। तीन दशक पूर्व अनेक घरों में फ्रिज, वेक्यूम क्लीनर या धोने की मशीन नहीं थी। 1965 में देश में प्रत्येक 100 परिवारों में 11 में फ्रिज, 21 में धोने की मशीन व 52 में सिलाई मशीन थी। सातवें दशक के अंत तक स्थिति सुधरी, प्रत्येक 100 परिवारों में 85 में फ्रिज, 71 में धोने की मशीन और 70 में सिलाई मशीन है।

कस्बे व ग्रामीण इलाकों में घरेलू उपकरणों की संख्या में अब कम अन्तर है। अब सिलाई मशीनों में ग्रामीण परिवारों का औसत उतना ही है जितना शहरी परिवारों का है, और यहाँ तक कि धोने की मशीन अधिक ही हैं।

हालांकि, घरेलू उपकरणों की सभी माँगें अभी तक पूरी नहीं हुई हैं। इन्हें उत्पादित करने में उत्तरदायी लोग ऐसे उपकरणों को निर्मित करने का प्रयास कर रहे हैं जो न सिर्फ घरेलू कामकाज को हल्का करेगा, बल्कि उन पर खर्च होने वाले समय की मात्रा को भी कम करेगा। घरेलू काम में गुलामी खत्म करने के लिए अभी भी बहुत कुछ करना है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं कांग्रेस के प्रस्तावों ने उपभोक्ता माल में उत्पादन को बढ़ाने व उनके गुण को सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया है। उपभोक्ता माल, जैसे कपास, ऊन, रेशम व लिनन के धागे और तैयार वस्तुएँ, के उत्पादन को बढ़ाने पैकेजिंग, कम-खर्चीले व मजबूत धागों की बिक्री को बढ़ाने के लिए योजनाएँ बनायी गयी हैं।

कांग्रेस के निर्णयों के अनुसार, पूँजीगत माल के मुकाबले उपभोक्ता माल का उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है। योजना घरेलू उपकरणों और सांस्कृतिक व दैनिक उपयोग की वस्तुओं के उत्पादन में 40% वृद्धि की परिकल्पना करती है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं कांग्रेस द्वारा पारित प्रस्ताव [illegible] हैं और पूरे होंगे। यह तथ्यों द्वारा सिद्ध है। चलिए हम देखें कैसे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस द्वारा 1975 में स्वीकारी [illegible] [illegible] के [illegible] ने [illegible] के [illegible] को

प्रभावित किया।

सेथ ऑपरेटर व्लादीमीर कोझलोव और उसकी पत्नी वरिष्ठ फोरवोमैन अनस्तासिया, दोनों पैजा घड़ी फ़ैक्टरी के मशीन बनाने वाली दुकान मे काम करते हैं। वे मध्यम आयु के युगल हैं। अनस्तासिया बेलगोरोड क्षेत्र मे एक गाँव शटलोव्का मे एक सामूहिक किसान के परिवार मे पैदा हुई थी। व्लादीमीर पैजा मे पैदा हुआ लेकिन अपने बचपन व युवावस्था मे कई शहरो पर रहा क्योंकि उसके पिता को काम मे कई जगहो में रहना पड़ा।

माध्यमिक स्कूल से स्नातक होने के बाद अनस्तासिया 1953 मे पैजा आयी। उसने घड़ी की फैक्टरी मे काम किया तथा एक इंजीनियरिंग तकनीकी स्कूल पर सायकालीन पाठ्यक्रम मे प्रवेश लिया। व्लादीमीर फैक्टरी में 10 वर्षों के बाद आया। उसने एक व्यवसायिक स्कूल मे स्नातक किया और घड़ी सुधारने वाली दुकान मे फोरमैन के रूप मे काम किया। 1965 में उन्होने विवाह किया। युवा युगल को पहले एक सामुदायिक फ्लैट मे एक छोटा कमरा दिया गया। 1968 मे उनका पहला बच्चा, अन्द्रेई पैदा हुआ। एक वर्ष बाद फैक्टरी ने उन्हे सारी आधुनिक सुविधाओ से युक्त 2 कमरे का अलग फ्लैट दिया। 4 वर्ष बाद अन्द्रेई का भाई साशा पैदा हुआ। और एक बार फिर ट्रेड यूनियन के चेयरमैन की मेज मे बड़े फ्लैट के लिए एक प्रार्थना आयी।

फ़ैक्टरी से 10 मिनट की दूरी पर बसे 3 कमरो के 44 वर्ग मीटर वाले फ्लैट के लिए परिवार को थोड़ा इन्तजार करना पड़ा। बिजली, पानी, गैस, गर्मी व सामुदायिक सेवाओ सहित किराये के लिए वे लगभग 20 रूबल प्रति माह दिया करते थे।

इस समय के दौरान कोझलोव परिवार के बजट में क्या परिवर्तन आया? 1974 मे इनकी आय थी 5,629 रूबल। इसका अर्थ हुआ प्रतिव्यक्ति 117 रूबल मासिक। व्लादीमीर, जो तब जाली बनाने वाले का काम करता था औसतन 215 रूबल प्रति माह कमाता था और इतनी ही राशि अनस्तासिया कमाती थी। इसके अतिरिक्त भौतिक प्रोत्साहन राशि से वे बोनस पाते थे व्लादीमीर 272 रूबल प्रति वर्ष और अनस्तासिया 197 रूबल प्रतिवर्ष।

पाँच वर्षों मे परिवार की वार्षिक आय 8,283 रूबल, या मासिक आय 172 रूबल प्रति व्यक्ति हो गयी। नये फ्लैट के लिए नया फर्नीचर चाहिए था। वे एक कालीन 432 रूबल मे, एक स्फटिक झाड़फानूस 187 रूबल मे, 184 रूबल मे अलमारी, 165 रूबल मे शृंगार-मेज, 56 रूबल मे प्रत्येक बच्चों के लिए सोफा-सेट खरीद कर लाये। व्लादीमीर ने जोड़ा, 'एक रिकार्ड-प्लेयर और घण्टी वाली घड़ी।' अनस्तासिया कहती रही, "और मेरे लिए फर का नया कोट, व्लादीमीर के लिए एक ओवरकोट व सूट। हमने जो-जो खरीदा उसे मैं याद नहीं कर पा

क्षेत्र का 4 कमरे वाला फ्लैट मिला था। हर कमरे अलग हैं और एक बड़ा रसोईघर व एक टेलीफोन है।

"हमारा बड़ा लड़का लियोनिद कलात्मक क्षमता रखने वाला छात्र है। वह स्थापनकार बनना चाहता है। व्लादिक जो अब आठवीं कक्षा में है, खिलाड़ी है। उसने पहले ही नाव खेने की प्रतियोगिता में पहला स्थान जीता हुआ है। डायना 12 वर्ष की है। वह मास्को के संस्कृति के महल में मधुगान गाता है। 6-वर्षीय ओक्सना भी संगीत में रुचि रखती है। बच्चों की योग्यता के विकास व शिक्षा के लिए राज्य द्वारा किये गये व्यय का हिसाब लगाना असम्भव है, चिकित्सा परिचर्या के उल्लेख की तो बात ही अलग है। इसलिए परिवार के बजट पर, मुझे जहाँ मैं बच्चों को दी जाने वाली मासिक राजकीय आर्थिक सहायता लिखती हूँ, वहाँ एक बड़ी राशि लिखनी चाहिए।

"मैंने काम पर ध्यान दिया है। जब भी मैंने छोटे दिन पर काम करना आवश्यक समझा, मुझे एक अनुरूप कार्य-सारिणी में स्थानांतरित कर दिया गया।

"मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि हमारे लिए सब कुछ आसान था। निराशाएँ व कठिन समय भी आए। परन्तु बच्चों के भविष्य के मामले में, जो सबसे महत्त्वपूर्ण है, मेरे मन में शान्ति है। पृथ्वी पर सिर्फ शान्ति बने रहे।

"मेरे लड़के व लड़कियाँ भूख व बेरोजगारी से भयभीत नहीं हैं। और मैं जानती हूँ कि राज्य सदैव मेरी सहायता के लिए आएगा।"

सोवियत संघ में सेवा उद्योग निरन्तर बढ़ रहा है। यह अनुमान लगाया गया है कि सार्वजनिक सेवाओं के विकास के कारण सोवियत जन 1959 की तुलना में अब लगभग 90 अरब घण्टे प्रति वर्ष कम काम करते हैं। लेकिन सेवाओं के क्षेत्र और अधिक सुधारने चाहिए।

व्यापार संस्थानों व सेवाओं के काम का प्रश्न सोवियत संघ की 26वीं कांग्रेस के समक्ष रखा गया। लियोनिद ब्रेझनेव ने केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट में ज़ोर दिया, "...खाद्य उत्पाद, अन्य उपभोक्ता वस्तु व सेवाएँ – लाखों करोड़ों लोगों के दैनिक जीवन का अंग हैं। लोग प्रतिदिन दुकानों, कैंटीनों, धुलाई और सफाई की दुकानों को जाते हैं। वे क्या खरीद सकते हैं? उनका किस प्रकार का स्वागत होता है? उनसे कैसी बातें की जाती हैं? सभी प्रकार के घरेलू कामकाजों पर वे कितना समय खर्च करते हैं? किस प्रकार ये समस्याएँ सुलझाई जाती हैं इसी आधार पर जनता हमारे काम की जाँच करती है। वे इस कठोरता व सही ढंग से जाँचते हैं। साथियों, इसे हमें याद रखना चाहिए।"[1]

---

1. डाक्युमेंट्स एण्ड रेज़ोल्यूशंस, द 26थ कांग्रेस ऑफ़ द कम्युनिस्ट पार्टी ... नोवोस्ती प्रेस एजेंसी पब्लिशिंग हाउस, मास्को,

सोवियत संघ में जनसंख्या को सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान करने के लिए पर्याप्त तकनीकी साधन हैं। वस्त्रों को सिलने व ठीक-ठाक करने, घरेलू उपकरणों व फर्नीचर को सुधारने, धोने व रंगने के लिए बड़े-बड़े संगठन खोले गये हैं। विभिन्न प्रकार की सेवाएँ देने के लिए सेवा केन्द्र हैं। जनता की राय, जो अक्सर सेवाओं के गुण व काम करने वाले के दृष्टिकोण के साथ असहमति व्यक्त करती है, इन संस्थाओं के काम को सुधारने में मदद देती है।

भोजन परोसना घरेलू जीवन का एक स्थायी अंग है। स्त्रियाँ इससे विशेष रूप में खुश हैं क्योंकि कैफेटेरिया के कारण उन्हें खाना पकाने में कम समय लगता है। लाखों कामगार अपने काम के स्थान पर ही खाते हैं। शहर के कैफेटेरिया की तुलना में खाना सस्ता मिलता है। क्योंकि खर्च के कुछ भाग का और समूचे सुविधा शुल्क (गर्म रखने, बिजली आदि का) और इमारत की रख-रखाव का भुगतान संस्थान करता है। अनेक संस्थान सायं व रात्रिकालीन शिफ्टों में काम करने वालों को भोजन निःशुल्क या नाममात्र के शुल्क पर देते हैं।

सेवा संस्थानों के अलावा, अच्छे उपकरणों के साथ सैकड़ों कैफेटेरिया, रेस्तराँ, कैफे या स्नैक बार हैं। उदाहरण के लिए, कमेल्नीत्स्की क्षेत्र में गोलोस्कोवो के निवासियों की अपने कैफेटेरिया के बारे में अच्छी राय है। यह पूर्णतः सामूहिक फार्म द्वारा बनाया गया था और बाद में एक उपभोक्ता सहकारी में बदल दिया गया। कैफेटेरिया में नये उपकरण, 100 लोगों के बैठने का स्थान, नया फर्नीचर और आधुनिक सज्जा है। सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह उन कुशल लोगों की नियुक्ति करता है जो अपने काम में रुचि लेते हैं। खाना सुस्वादु और सेवा अच्छी है। कैफेटेरिया खेतों, फार्मों में काम कर रहे सामूहिक किसानों के घरों को भी खाना भेजता है।

जहाँ कहीं भी कैफेटेरिया या कैफे विभिन्न प्रकार के व्यंजनों व परोसने के लिए तैयार उत्पाद देते हैं, वहाँ स्त्रियाँ खाना पकाने में कम समय व शक्ति लगाती हैं फलतः सामाजिक उत्पादन व सामूहिक जीवन में भाग लेने का अधिक अवसर पाती हैं।

सेवाओं के विभिन्न प्रकारों की माँग का निर्धारण करना महत्त्वपूर्ण है और लोगों के लिए अपनी राय जाहिर करने के अनेक तरीके हैं, यथा, सार्वजनिक सेवाओं के कामगारों व जनता के मध्य बैठकों पर, पत्रों, खरीदारों आदि के साथ सम्मेलन व बैठकों के आयोजन द्वारा।

धुलाई-कमीजिंग, सिलाई, वस्त्र-निर्माण व जूते सुधारने जैसी सेवाओं की माँग सर्वाधिक है। फिर आते हैं सिंगारों की दुकानें व धुलाई की दुकानें। शहरों में परिवार के बाहर खाने के लिए कैफेटेरिया व रेस्तराँ अभी भी बहुत कम उपयोग में आते हैं, लेकिन अब कम लोग अपनी मेज़ पर खाना खाते हैं। नवम्बर 'फोर्मू

रसोई काफ़ी लोकप्रिय है जहाँ खाना ले जाने के लिए या परोसने के लिए तैयार उत्पाद बिकते हैं।

फिर भी सेवा-संस्थानों का नियमित उपयोग सभी परिवार नहीं करते हैं। इसके कई कारण हैं। कुछ परिवारों में अभी भी स्त्रियाँ हर चीज स्वयं करने की सोचती हैं। खाना स्वादिष्ट होता है, चद्दरें साफ-सफेद रहती हैं और खिड़कियाँ भी साफ रहती हैं। वे सोचती हैं कि यह अपने पति के प्रति प्रेम व परिवार के प्रति ध्यान का एक और सबूत है। इसीलिए अनेक स्त्रियाँ घर पर पकाना पसंद करती हैं। वास्तव में, खाना पकाना काफी समय ले लेता है। पर माँ के द्वारा बने मालपुए को बेटे को खाते हुए देखना, या गोश्त के लिए उत्तम चटनी, जिसे सिर्फ पत्नी ही बनाना जानती है, पर पति की प्रशंसा सुनना कितना आनन्ददायक होता है।

यूक्रेनियाई बोर्श, रूसी बंदगोभी का सूप, साईबेरियाई पेल्मेनी, व अन्य राष्ट्रीय व्यंजन देश के विभिन्न हिस्सों में सोवियत परिवारों की व्यंजन-सूची के अंग बन गये हैं। और यद्यपि लाखों माँओं व पत्नियों ने विशेष व्यंजन-स्कूलों में अध्ययन नहीं किया है फिर भी वे अनेक रसोइयों की तुलना में अच्छा खाना तैयार करती हैं। और यह खाना सस्ता व अधिक पौष्टिक होता है, लेकिन इसमें काम भी काफ़ी करना पड़ता है।

इसलिए, स्पष्टतः बहुत कुछ सेवा-संस्थानों के काम के और सुधार पर तथा क्या ये संस्थाएँ कुशल गृहणियों, पत्नियों व माँओं के साथ स्पर्द्धा कर सकेंगी, इस पर निर्भर करता है।

सोवियत संघ में सार्वजनिक सेवा-संस्थानों द्वारा आजकल आपूर्ति होने वाली सेवाओं का मूल्य अधिक नहीं है, इसीलिए उन्हें प्राप्त न करने का तो कोई प्रश्न नहीं है। अब सेवाएँ एक बड़े मशीनीकृत शाखा उद्योग के समान विकसित हो रही हैं। सार्वजनिक सेवाओं पर जनता की अधिक पहुँच के लिए, वैज्ञानिक व तकनीकी उपलब्धियों का उपयोग करने के लिए और इस क्षेत्र में निपुण कामगारों को आकर्षित करने के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है। संघीय गणराज्यों में सेवा-संस्थानों को ऐसे स्थान पर बनाने की योजना बनाई जा रही है कि हर व्यक्तिगत बस्ती इसके अन्तर्गत आ सके। उदाहरणार्थ, लिथुएनियन गणराज्य में जनसंख्या की आय व उसकी सार्वजनिक सेवा आवश्यकताओं का सर्वेक्षण किया गया, और प्रति व्यक्ति सेवाओं व इसके द्वारा होने वाले खर्च का निर्धारण किया गया ताकि अधिकतम जनता की आवश्यकताओं की पूर्ण सन्तुष्टि हो सके और गणराज्य के सभी भागों में सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान की जा सकें।

ग्रामीण जीवन स्थितियों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। अनेक उपकरण व साधन, जो गाँव के निवासियों को घरेलू काम काज में काफ़ी आराम दे सकें, उपलब्ध हैं। सेवा केन्द्र अपनी सेवाओं के दायरे को बढ़ा रहे हैं, अपने गुण को सुधार

रहे हैं और उन्हें हर घर, हर परिवार तक पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

कुछ वर्षों पूर्व लाटविया की बस्ती, कबीले, के निवासियों को घरेलू उपकरणों आदि लेने के लिए अथवा किसी और चीज के लिए प्रान्तीय केन्द्र कुल्डिगा को जाना पड़ता था। अपने रेडियो या बिजली के अन्य उपकरणों को सुधारने के उन्हें उनको साथ मे जाना पड़ता था। सारा आना-जाना कम-से-कम आधा दिन ले लेता था।

अब प्रान्तीय केन्द्र तक जाने की आवश्यकता नही है। कबीले मे एक सेवा एजेंसी खोली गयी है जो जूतो, बिजली के उपकरणो, रेडियो, टेलीविज़न, सिलाई मशीनो को सुधारने के लिए और ड्राई-क्लीनिंग, धुलाई व अन्य प्रकार की सेवा के लिए आर्डर लेती है। एक छोटी दुकान के स्थान पर 3 विशेष दुकानें खोली गयी हैं। उनके पास वस्तुओं का विशाल चुनाव है और एक डाक आर्डर सेवा भी स्थापित की गयी है।

कबीले मे होने वाले परिवर्तन अन्य कई स्थानो मे होने वाले परिवर्तन का चरित्र चित्रण है।

जीवन स्तर की वृद्धि मे व्यापार का विकास महत्त्वपूर्ण है। 11वें पचवर्षीय काल के दौरान राज्य व सहकारी खुदरा व्यापार 22 से 25% बढ़ा है। विशिष्ट दुकानो को प्राथमिकता दी गयी है।

10वें पचवर्षीय काल के दौरान बच्चो का समान पहले से अधिक अच्छा उत्पादित हुआ। बच्चो के कपड़े, जूते, फर्नीचर, साइकिलें व अन्य वस्तुओं के दाम काफ़ी कम रखे गये हैं। यह अत्यधिक सामाजिक महत्त्व की बात है। बच्चो के आकर्षक वस्त्र, स्कूलो, तरुणों व कलात्मक काम और खेल-कूद की चीज़ो की माँग प्रति वर्ष और अच्छी तरह से पूरी की जा रही है। सातवे दशक से स्कूल के पाठ्यक्रम की पुस्तकें नि:शुल्क दी जा रही हैं।

व्यापार आयोजित करने के प्रगतिशील तरीके यथा, सबसे पहले स्वय-सेवा सस्थान—जनसख्या की माँगो को पूरा सन्तुष्ट करते हैं और सेवा के गुण को बढ़ाते हैं। राजकीय व्यापार प्रणाली मे दुकानो का 52% अब इस सिद्धान्त पर काम करता है और उनकी सख्या बढ़ती जा रही है। देश के सभी भागों मे आर्डर लेने की आदत मे, डाक द्वारा भुगतान व अन्य सेवाओ के सुविधाजनक रूपों मे वृद्धि की जा रही है। पकाने को तैयार उत्पाद, सूखे खाद्य सार और तैयार खाना जनता को अधिक मात्रा मे उपलब्ध है और उनके गुण मे सुधार हो रहा है। यह घर पर खाना पकाने मे लगने वाले समय की पर्याप्त कटौती करता है।

परिवहन व सचार के विकास ने जनता के लिए जीवन को आसान बना दिया है। सोवियत सघ मे सार्वजनिक परिवहन सस्ता है—शहर मे 3 से 5 कोपेक तक, और पिछले 40 वर्ष से बदला नही है। अनेक लोग खुद की कार रखते हैं, जो उन्हें

देश के अन्दर और बाहर जाने के योग्य बनाती है।

हम कई अधिक तथ्यों को पेश कर सकते हैं जो सोवियत परिवारों के जीवन में हो रहे गहन व तुरन्त परिवर्तनों को प्रतिबिम्बित करते हैं। हालांकि, इस क्षेत्र में सभी समस्याएँ सुलझायी नहीं गयी हैं।

बढ़ते हुए जीवन के स्तर के साथ जैसे-जैसे परिवार की आवश्यकताएँ बढ़ रही हैं वैसे-वैसे राजकीय सहायता के लिए परिवार की जरूरतें बढ़ रही हैं। समाजवादी प्रणाली, जैसा व्यवहार बतलाता है, इसके लिए श्रेष्ठ अवसर प्रदान करता है।

परिवार के विश्राम का समय

सोवियत नागरिकों के अवकाश का समय प्रत्येक वर्ष बढ़ता जा रहा है।

सोवियत सत्ता की स्थापना से काम के हफ्ते की औसत अवधि 19
अधिक कम कर दी गयी है और अब सिर्फ 39.4 घण्टे काम होता है, जो
सप्ताह कम है। दुष्कर कार्यों में काम का सप्ताह 36 घण्टे का है। पिछले
दशक के दौरान, 5 दिन के काम के सप्ताह को लागू करने से, प्रति श्रमिक
न करने का समय 400 घण्टे प्रतिवर्ष के लगभग बढ़ गया है। श्रमिकों के लि
बहुमत के पास प्रतिवर्ष 112 अवकाश के दिन हैं और कुछ श्रेणी के श्रमिकों
वार्षिक सवैतनिक छुट्टी बढ़ा दी गयी है।

18 वर्ष से कम आयु के युवजनों को विशेष सुविधाएँ दी गयी हैं (सोवियत
संघ में बाल श्रम निषिद्ध है, कानून 16 वर्ष की आयु से बड़े युवा को श्रम में लेने
की इजाजत देता है), उनके काम के दिन छोटे हैं और उसी श्रेणी के अन्य श्रमिकों
की अपेक्षा अधिक छुट्टियाँ हैं, जबकि मजदूरी वयस्क श्रमिकों की औसत मजदूरी के
समान है। जो काम और अध्ययन को साथ-साथ करते हैं वे भी काम के कम घण्टे
और अतिरिक्त अवकाश को पाते हैं।

अधिक खाली समय होने के बावजूद, परिवार के सदस्य क्या किया जाय की
शिकायत बहुत कम करते हैं। इसके विपरीत कैसे चीजें आयोजित की जाएँ यही
उनकी चिंता रहती है ताकि हर चीज पायी जा सके। उनकी रुचियाँ अनेक हैं,
सांस्कृतिक व वैचारिक आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं।

सोवियत संघ में मुश्किल से कोई परिवार होगा जिसका कोई-न-कोई सदस्य
सामाजिक कार्य में भाग न लेता हो, राजनीति में रुचि न लेता हो, या अपनी
शिक्षा के स्तर को बढ़ाने का प्रयत्न न करता हो।

सभी चीजों के लिए आदमी को समय चाहिए। उदाहरण के लिए सामाजिक
काम को लें। अनेक व्यक्ति ट्रेड यूनियन, गृह-समितियाँ, विद्यालयों को सहायता के
लिए कमीशनों जैसे सार्वजनिक संगठनों की गतिविधियों में भाग लेते हैं, क्योंकि वे
परिवार के कल्याण से सबद्ध प्रश्नों को लेते हैं। चाहे यह काम या रहने की

स्थितियों का मामला हो, बच्चों के लालन-पालन या पर्यावरण की सुरक्षा का मामला हो—हर मामला प्रत्येक परिवार से सीधे जुड़ा हुआ है। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि सोवियत संघ में वयस्क जनसंख्या का दो-तिहाई भाग सामाजिक गतिविधि में सलग्न है और कि माँ-बाप अपने खाली समय का कुछ भाग सामाजिक दायित्वों को पूरा करने में लगाते हैं।

सोवियत सत्ता के दौरान पुरुष व स्त्रियों द्वारा सामाजिक कार्य में लगने वाला समय 5-6 गुणा बढ़ गया है। उन्होंने अपने शैक्षणिक स्तर को बढ़ाने व राजनीतिक मामलों में अपने ज्ञान को व्यापक बनाने में खर्च होने वाले समय को भी पर्याप्त मात्रा में बढ़ा लिया है।

अनेक परिवारों में पति व पत्नी दोनों ही राजनीति में सक्रिय रुचि लेते हैं और इसलिए समाचारपत्रों व पत्रिकाओं के साथ वो लगाव रखते हैं। करीब 90% पुरुष व 80% स्त्रियाँ नियमित रूप से समाचारपत्र पढ़ती हैं। दूसरे दशक में बड़े औद्योगिक व सास्कृतिक केन्द्रों में किये गये एक सर्वेक्षण ने बतलाया कि श्रमिकों के परिवार के 45.9% पुरुष, 40% स्त्रियाँ व 13 3% गृहणियाँ समाचारपत्र पढ़ते हैं और क्रमश 41,20 व 13 3% पुस्तकें व पत्रिकाएँ पढ़ते हैं।

हम जानते हैं कि पुरुष व स्त्रियाँ उसी समाचारपत्र को अलग-अलग कारणों से पढ़ते हैं। परम्परागत रूप से शोधकर्त्ताओं ने रुचि के हिसाब से शीर्षकों को 'पुरुष' व 'स्त्री' की श्रेणियों में विभक्त किया है। समाजशास्त्रीय आँकड़े बतलाते है कि विदेशों में पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ राजनीतिक मामलों को सिर्फ आधा ही पढ़ती हैं, परन्तु सामाजिक घटनाओं, दुर्घटना की रिपोर्टों, अधोलेखों आदि जैसे 'हल्की शैली' के लेखों को दुगुनी सख्या में पढ़ती हैं।

सोवियत पुरुषों व स्त्रियों के मध्य रुचियों में विशेष अन्तर भी सोचने योग्य है। परन्तु अक्सर स्त्रियाँ भी गृह व विदेश नीति, आर्थिक व सामाजिक जीवन के प्रति उतनी ही चिन्तित रहती हैं जितने पुरुष। 1981 में मास्को के निकट श्रमिकों के परिवारों में किए सर्वेक्षण ने दर्शाया कि विवाहित जोड़ों के 83% अपने काम व सामाजिक कार्य पर घर में विचार-विमर्श करते हैं। पति व पत्नियों का इतना ही प्रतिशत एक-दूसरे के साथ राजनीतिक व सामाजिक घटनाओं पर बहस करता है। और परिवारों में दो-तिहाई माँ-बाप इन सभी प्रश्नों पर अपने बच्चों के साथ बातचीत करते हैं।

परिवार में वार्तालाप इसके प्रत्येक सदस्य को समृद्ध करता है। समय निकाल कर पिता का अपने बच्चों के साथ वार्तालाप, भाई-बहन का साथ-साथ खेलना, अपनी दादी के साथ छोटे बच्चे द्वारा अपने रहस्य को बाँटना—इन सभी बातों से घर में खुशी व उल्लास की भावना भरती है। पारिवारिक सबंधों में घनिष्ठता

व्यक्ति के साथ समूचे जीवन भर रहती है।

जनमत किये गये सोवियत परिवारों में 93.5% लोगों
है। किशोर अपने खाली समय के $\frac{1}{3}$ भाग को सिनेमा जाने
लगाते हैं।

युवाओं के दिलो-दिमाग पर सिनेमा व टेलीविजन का अत्
है। परन्तु इस प्रभाव का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जा
सोवियत फिल्में व टेलीविजन प्रोग्राम वास्तव में रुचिकर औ
समृद्ध हैं पर खेद है कुछ नीरस भी हैं। हालांकि निःसंदेह एक बात
टेलीविजन में ऐसा कुछ भी नहीं देखेंगे जो दूसरे देशों व लोगों के
घृणा को जन्म दे।

बच्चों के लिए प्रोग्राम, एनीमेटेड फिल्म, विभिन्न कार्यक्रम व
के देखने के लिए समूचा परिवार टेलीविजन के निकट आना पसद क
निक-शैक्षणिक कार्यक्रम 'जानवरों के संसार में', 'सिनेमा यात्रियों का
अन्य कार्यक्रम अधेड़ों व बच्चों दोनों के मध्य लोकप्रिय हैं।

लाखों दर्शक 'अन्तर्राष्ट्रीय दृश्य-पटल' व 'आज के विश्व में' का
हैं। ये कार्यक्रम प्रमुख राजनीतिक व्यक्तियों व प्रसिद्ध पत्रकारों को अ
घटनाओं पर टिप्पणी करने का अवसर देते हैं और भलीभांति स्वीका
क्योंकि ये प्रसगानुकूल मामलों पर बहस करते हैं, बुद्धिमत्तापूर्ण अच्छे त
और अनौपचारिक होते हैं।

टेलीविजन व्यक्ति के विश्व पर दृष्टिकोण को व्यापक कर सकता
पारिवारिक दायरे में बहस के लिए विषय प्रदान करता है। हालांकि यह नि
प्रकार का आरम्भ कहलाता है, क्योंकि इससे सूचना संक्षिप्त रूप में आत
इसीलिए, अनेक सोवियत टी० वी० कार्यक्रम इस प्रकार से आयोजित किए
हैं कि दर्शक, वह जैसे भी हो, को परदे पर जो हो रहा है उसमें भाग लेने
अवसर मिले।

उदाहरणार्थ, 'युवा परिवार क्लब' के कार्यक्रमों में एक में परिवार के बच्च
की संख्या पर एक गर्मागर्म बहस छिड़ी। विषय ने अनेक दर्शकों का ध्यान आकर्षि
किया और प्रस्तुत प्रश्नों, जैसे कुछ परिवारों में बच्चों पर अपर्याप्त ध्यान, अपने
भौतिक सुख को सुधारने की हड़बड़ी में झगड़े, शिक्षा प्राप्ति, व्यवसाय की प्राप्ति
और बच्चों के रख-रखाव के औचित्य पर तुरन्त जवाब आया। कार्यक्रम के
बाद स्टूडियो को मिले हजारों पत्रों व अनेक कार्यक्रमों ने सिद्ध किया कि टी० वी०
लोगों को नजदीक लाता है और सामाजिक गतिविधि के विकास की वृद्धि करता
है।

अनेक परिवार चाहे वह एक वैज्ञानिक

या इंजीनियर या ऑफिस के कर्मचारी का हो अच्छे फिल्म, नाटक, संगीत व चित्र की प्रशंसा करता है। 100 लोगों में औसतन 68 नियमित रूप से सिनेमा, थियेटर व संस्कृति के महल को जाते हैं।

विकसित समाजवादी समाज में पुरुषों व स्त्रियों, युवा व बुजुर्ग पीढ़ियों तथा विभिन्न सामाजिक स्तर के प्रतिनिधियों में धीरे-धीरे समस्त सांस्कृतिक व वैचारिक रुचियों को बाँटने की एक प्रवृत्ति है।

फिर भी पुरुषों व स्त्रियों को उपलब्ध खाली समय की मात्रा में पर्याप्त अन्तर अभी भी है। यदि हम सामान्यत किसी भी स्त्री या पुरुष को न लें बल्कि एक विवाहित स्त्री व विवाहित पुरुष की तुलना करें तो पुरुष के खाली समय का औसत स्त्री की अपेक्षा डेढ़ गुना है। परन्तु यह अन्तर बच्चों की संख्या व उम्र के अनुसार एक परिवार से दूसरे में भिन्न है।

युवा परिवारों में व जहाँ पति-पत्नी का उच्च शैक्षणिक स्तर है वहाँ पति-पत्नी के पास अधिकतर समान खाली समय होता है। कम दक्ष श्रमिकों के परिवारों में, जहाँ पति-पत्नी के पास प्राथमिक शिक्षा है वहाँ पर्याप्त अन्तर है। ऐसे परिवारों में जहाँ अधूरी माध्यमिक शिक्षा के साथ पति श्रमिक है उसके पास लगभग 30% अधिक खाली समय है और ऐसे श्रमिक परिवारों में जहाँ पति-पत्नी दोनों माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हैं या अधूरी शिक्षा प्राप्त हैं खाली समय की मात्रा लगभग समान है।

सोवियत युवा के शैक्षणिक स्तर में वृद्धि के साथ युवा पति-पत्नी के मध्य घरेलू काम-काज व खाली समय और अधिक सही तरीके में विभाजित हैं।

स्वाभाविक है, जब एक स्त्री माँ के रूप में अपना कार्य पूरा कर रही है तब वह अपने शैक्षणिक व सांस्कृतिक हितों को संतुष्ट करने में पर्याप्त समय लगाने में असमर्थ है। बिना बच्चों वाली स्त्री अक्सर सिनेमा व थियेटर जाती है व पुरुष की अपेक्षा पढ़ने में अधिक समय खर्च करती है। पर बच्चे के आने पर यह प्रवृत्ति, वास्तव में, विपरीत हो जाती है।

साथ ही जाँच करने से यह पता चलता है कि बच्चों वाली स्त्री सामान्यत. कला व सामाजिक जीवन में अपनी रुचि को बरकरार रखती है। जैसे ही वह समय पाती है तभी वह स्त्री अपने को सांस्कृतिक मूल्यों के साथ परिचित करने में इसका अधिकतम नहीं तो अधिक लगन से उपयोग करेगी।

मास्को ललित कला म्यूजियम में आने वाले लोगों में किये जनमत-संग्रह ने दर्शाया है कि 56% आने वाली स्त्रियाँ हैं। फिर, इनमें से 60% स्त्रियों की उम्र लगभग 25 वर्ष की है। 25 से 30 वर्ष की उम्र के दर्शकों में पुरुषों व स्त्रियों की संख्या लगभग समान है, परन्तु 31 से 40 वर्ष की आयु वर्ग में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ कम हैं। हमारा अनुमान है इसका कारण बच्चे हैं। हालाँकि, जैसा सर्वेक्षण

स्पष्ट करती है किस प्रकार श्रमिक व उनके परिवार अपने खाली समय को गुजारते हैं।

इस प्लाट पर ही 56 शौकिया कला गुट, 3½ हजार गायक, कलाकार व संगीतकार हैं। मिखाइल वैरी वोदा, एक अत्यन्त कुशल लेथ-ऑपरेटर और तीन बच्चों का पिता, दस वर्षों से अधिक समय से जन थियेटर में कार्य कर रहा है। गोर्गी प्रुसोव ने, जब वह किशोर था तब से ही बच्चों की भूमिका में काम करना आरम्भ किया था। हालांकि अब वह विवाहित और परिवार वाला है फिर भी गोर्गी ने अपने प्रिय शौक को छोड़ा नहीं है। प्लाट के दर्जनों परिवार जन थियेटर, नृत्य गुट से सबद्ध हैं या स्टूडियो मे चित्रकला का पाठ लेते हैं।

फोर्ज दुकान मे श्रमिक ओल्गा कमरेम्को जन थियेटर पर तब से अभिनय कर रही है जब से यह सगठित हुआ था। थियेटर पर उसे वेलोरसिया का लेनिन कोम्सोमोल पदक मिला और उसने अपने बेटे पावेल, जो फाउण्ड्री दुकान मे एक लेथ-ऑपरेटर है, में अभिनय के प्रति प्रेम को जगाया। पावेल की पत्नी तमारा भी जन थियेटर में अभिनेत्री है और सपूर्ण परिवार साथ-साथ पूर्वाभ्यास मे जाता है।

प्लाट के श्रमिक बतलाते हैं कि किस प्रकार थियेटर सामूहिक ने निकोला सिमोन के जीवन को बदला। बच्चा वास्तव में एक समस्या बन गया था और रात-रात भर घर से बाहर रहा करता था। किसी ने यह देखा कि उसमे एक अभिनेता बनने की सभावनाएं हैं और उसे थियेटर गुट मे शामिल होने के लिए उत्साहित किया गया। निकोला एक अच्छा अभिनेता बना और अन्तत एक कुशल लुहार भी। बाद मे वह विश्वविद्यालय के कानून सस्थान मे भर्ती हो गया और वह अभी भी अभिनय करता है।

लगभग 1500 [illegible] गुट, सहगान या अन्य अनेक गुटों व [illegible] को विकसित कर

मे, अपनी पसंद के विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों को सुनने व बहस में भाग लेने में मां-बाप उत्सुक रहते हैं। पुरुषों के लिए खेल-कूद, शतरंज, चैकर्स, डोमिनो हैं, स्त्रियों के लिए घर की देख-भाल, सिलाई व बुनाई दल हैं।

वे जो काम करते हैं और परिवार वाले हैं, उनके लिए घर के निकट अपना खाली समय बिताना महत्त्वपूर्ण होता है। युवा अपने खाली समय को अपने हम-उम्र के साथ बिताना चाहेंगे। यदि उन्हें उनके खाली समय की व्यवस्था में मदद नहीं दी जाती है तो वे अपने खाली समय को बर्बाद कर सकते हैं या खतरनाक तरीके में बिता सकते हैं। इसीलिए स्पोर्ट क्लब और कलात्मक या तकनीकी दल अनेक अपार्टमेन्ट वाले घरों में बनाए गये हैं।

वे व्यक्ति जो पुस्तकों या अन्य नमूनों के संग्रह, शौकिया फोटोग्राफी व चल-चित्रण के निर्माण आदि उपयोगी गतिविधि में रुचि रखते हैं अपने स्वयं के व पड़ोसी के बच्चों दोनों के खाली समय को व्यवस्थित करने को तैयार रहते हैं।

इनमें से अनेक व्यक्ति अपनी कुछ किताबों को सामान्य पुस्तकालय को उपहार में दे देते हैं, विभिन्न दलों व प्रभागों को चलाते हैं, भाषण देते हैं, युवाओं को स्वयं अपने हाथों से चीजें बनाना सिखाते हैं और उनमें प्रकृति के प्रति प्रेम व समझ को पोषित करते हैं।

इन गतिविधियों में भाग लेने के अवसरों को न सिर्फ अपार्टमेन्ट वाले सभी घर प्रदान करते हैं बल्कि आराम के समय की व्यवस्था करने वाले संगठनों और जनता के मध्य, बुजुर्ग व युवा पीढ़ियों के मध्य ऐसे सम्बन्धों के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

मास्को के निकट इलेक्ट्रोस्टल कस्बे में आवास व सामुदायिक सुविधा के ऑफ़िसों में बच्चों के कमरे प्रतिदिन स्कूल के पश्चात् एक जीवंत गतिविधि का केंद्र बन जाते हैं। यहाँ सभी उम्र के युवजन बिलियर्ड, फुटबॉल, टेबिल टेनिस, शतरंज, जिग सॉ पज़ल्स खेलते ब्लॉकों का निर्माण करते या खाली दौड़ लगाते हैं। कोई भी बच्चा उपलब्ध अनेक खिलौनों में से एक चुन लेता है और घर पर ले जा सकता है। विभिन्न आयु वर्ग के बच्चे एक-आध घंटे के लिए खेलने के लिए एकत्रित होते हैं, परस्पर एक दूसरे से परिचित होते हैं, मित्र बनाते हैं। अपार्टमेन्ट वाले घरों में खेल के कमरों में खिलौने मां-बाप द्वारा प्रदान किए जाते हैं और उन संस्थानों द्वारा भी, जहाँ वे काम करते हैं, निःशुल्क दिए जाते हैं। बारी-बारी से मां-बाप बच्चों का निरीक्षण करते हैं, उन्हें खिलौनों को चुनने में सलाह देते हैं और खेल के नियमों को समझाते हैं।

अपने बच्चों के खाली समय को व्यवस्थित करने में खुद मां-बाप कुछ रच-नात्मक कार्य करते हैं। यह वयस्कों की सन्तुष्टि का एक स्रोत है और युवकों के लिए लाभदायक है, जो अपने मां-बाप को अनेक प्रकार की भिन्न-भिन्न चीजों को

करने और दूसरो को सिखाने मे समर्थवान पाते हैं। अपने माँ-बाप पर गर्व करे
का यह एक और कारण बन जाता है।

कुगनि शहर के बाहर एक रिभोको बस्ती है। पुराने गाँव के स्थान प
ऊँची मंजिलो के अपार्टमेन्ट मकान बन गये हैं। इन मकानों मे मयक बाल स
जिसमें जाने का हमने निर्णय लिया। दीवाल पर फोटोग्राफों का सग्रह था। मह
पूर्ण व्यक्तियो से मुलाकात, हॉकी मैच का निर्णायक क्षण, माताओ के लिए ब
का संगीत। 'योग्य हाथ' दल आज एक पाठ कर रहा था। बलब ने दल के सद
को वास्तविक दुकान के उपकरण दिए थे। एक योग्य शिक्षक के निर्देशन मे दुग
चीजो पर बेल-बूटे खोद रहे थे। वास्तव मे 'योग्य हाथ' दल से ही मयक —
आरम्भ हुआ। फिर एक फुटबॉल टीम बनायी गयी। बच्चो ने अपने लिए कोच
स्वय खोजा। उन्होने एलेक्जेण्डर गवोलेन्को को लडकों के गुट के साथ एक दि
पर खेलते देखा और उसे उनका कोच बन जाने के लिए कहा। वह इसके लि
तैयार हो गया क्योकि वह पास ही मे रहता था और बच्चो से प्यार करता था
कोच माँ-बाप से मिलता है और उन्हें बच्चो पर खेल के अच्छे प्रभाव के बारे मे
बताता है। खुद माँ-बाप इस बात से परिचित हैं और इसके लिए उत्सुक हैं कि
उनके बच्चे खेलें।

एन्टोली शेल्नोबोद, एक लेथ ऑपरेटर, युवाओ का वास्तविक मित्र बन गया।
वह स्टील-नवराली दल का मुखिया है और क्लब पर शाम देर तक रुकता है।
ब्लादीमीर बमिन, एक फोटोग्राफर है जो शौकिया फोटोग्राफरो के गुट को निर्देश
देता है। क्लब म एक शौकिया कला दल व एक नृत्य-दल है। स्कूली अवकाश मे
दिनो पर युवक घूमने व पर्यटन पर जाते हैं।

मयक क्लब क समान [illegible] गतिविधियाँ रीति-वैज्ञानिक [illegible] बैबेलनोव'
[illegible] निर्देशित होता है जिन्हे यह काम [illegible] द्वारा दिया गया है।
[illegible] यह चाहता है कि [illegible] बच्चे अपने समय का सही उपयोग करें। मयक
[illegible] का शैक्षणिक महत्त्व [illegible] है युवक अपने [illegible] मे उत्साही होते हैं और
[illegible] गुणो मे उपयोगी [illegible] प्राप्त करते हैं।

[illegible] के [illegible] 11000 बच्चो को [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] 1987 [illegible]

10 करोड 10 लाख रूबल था।

आंकड़ो के अनुसार, शताब्दी के आरम्भ मे रूस मे 45% युवा शारीरिक रूप मे अविकसित या अस्वस्थ थे। कोई 100 से कम खेल-कूद के क्लब थे जिसके 35000 सदस्यो मे अधिकतर समृद्ध वर्ग के थे। ऊँची सदस्यता शुल्क साधारण जनो को क्लब मे शामिल होने से रोकता था। महान अक्तूबर की समाजवादी क्रांति के पश्चात् मुश्किल से एक वर्ष के अन्दर शारीरिक संस्कृति के क्लब खुलने आरम्भ हुए, जो जनता मे शारीरिक संस्कृति को विकसित करने के केन्द्र बन गये।

आज 63,600,000 लोगों को संगठित करने वाले 232,000 शारीरिक संस्कृति सामूहिक हैं। उनके पास कोई 3500 स्टेडियम, 74,000 जिम्नेजियम, 1750 तैराकी तलाब, 108,000 फुटबॉल के मैदान और लगभग 400,000 वॉलीबॉल व बास्केटबॉल और टेनिस कोर्ट हैं। साथ मे, रिहायशी जिलो मे स्वास्थ्य निर्माण गुट हैं व जन खेल-कूद कार्य किए जाते हैं। वर्तमान में इन रिहायशी क्षेत्र की खेल-कूद गतिविधियो मे 120 लाख लोग भाग लेते है।

खेल-कूद प्रभाग व गुटो मे भागीदारी सामान्यत निःशुल्क है।

राज्य द्वारा प्रदत्त भौतिक आधार व जनता की शारीरिक संस्कृति पर आसान पहुँच खेल-कूद की योग्यता के विकास को प्रोत्साहित करता है। इसमे कोई आश्चर्य नहीं है कि सोवियत खिलाड़ियों ने 1980 के मास्को ओलम्पिक खेलो मे 80 स्वर्ण, 69 रजत व 49 कांस्य पदक जीते।

परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जनता का शारीरिक संस्कृति मे संलग्न होना उनके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

"'रविवार सप्ताह मे खेल-कूद का प्रमुख दिन होता है। कभी-कभी पूरा परिवार ही घूमने चला जाता है, कुछ स्कीइंग पसंद करते हैं, अन्य कोई प्रात दौड मे निकलता है या तरण-ताल को जाता है। इस दिन स्टेडियम, स्पोर्ट क्लब, खेल के मैदान, बाग व पार्कों पर 'परिवार की टीम' विभिन्न प्रकार के खेलो मे मग्न हो जाती है। 'पिता, माँ और मैं—एक खिलाडी परिवार' प्रतियोगिताएँ, जिसमे, जैसा शीर्षक बतलाता है समूचा परिवार भाग लेता है, बड़ो व बच्चो दोनो को आनन्द देती हैं। उदाहरण के लिए, कज़ान में 'परिवार दौड़ने को तैयार' प्रतियोगिताएं लोकप्रिय हैं जबकि सेवस्तोपोल के लोग 'ज्दोरोव्ये' (स्वास्थ्य) खेल-कूदो को पसन्द करते हैं, जिसमें हर कोई स्पर्द्धा मे भाग लेता है। पारिवारिक प्रतियोगिताएँ इस्टोनिया मे भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं।

अपार्टमेन्ट वाले कई घरो मे खेल के मैदान के साथ आँगन हैं, जो परिवार की शारीरिक संस्कृति के व्यायाम के लिए सुविधाजनक है। सभी उम्र के लोगों के लिए आधारभूत शारीरिक संस्कृति की सुविधाएँ निरन्तर बढ़ रही हैं। विभिन्न खेलो की गतिविधियों हेतु 60,000 आँगन वाले खेल के मैदान के अलावा 15000

से अधिक 'स्वास्थ्य कक्ष' व जिम्नाजियम हैं।

सोवियत संघ में बच्चों व किशोरों के शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति विशेष
दिया जाता है। बच्चों के खेल-कूद की गतिविधियों हेतु ट्रेड यूनियन स्टेडि
तरण-ताल, जिम्नेजियम व फुटबॉल के मैदान बनाए गये हैं। खेल-कूद की सोसा
से संबद्ध 5500 बच्चों के खेल-कूद के क्लब हैं और हजारों रिहायशी क्षेत्र की खे
कूद टीमें हैं।

युवाओं के लिए राष्ट्रीय खेल-कूद प्रतियोगिताएँ जैसे 'आशा का आरम्भ
आयोजित होती हैं—फुटबॉल में 'चमड़े की गेंद', हॉकी में 'स्वर्णिम चक', तैराकी
में 'आनन्दित डॉल्फिन', 'नेप्चून'। इन प्रतियोगिताओं में प्रति वर्ष लाखों युवा
भाग लेते हैं।

सोवियत संघ में पर्यटन व घूमना काफी प्रचलित हो गये हैं।

सोवियत संघ आर्कटिक क्षेत्र से उपोष्ण देशी क्षेत्र तक फैला है, इसमें
टुण्ड्रा, टैगा, पतझडी जंगल, स्तेपी, रेगिस्तान, पहाड़ व मैदान, अनेक
नदियाँ हैं। यह 15 सम्बद्ध गणराज्यों, सौ से अधिक राष्ट्रीयताओं व
जीवन-पद्धतियों के लोगों से बसा हुआ है। जितने सांस्कृतिक व क्रांतिकारी
के प्रसिद्ध स्थान हैं और उतने ही प्रसिद्ध हैं समकालीन निर्माण-स्थल जैसे
पावर स्टेशन, रेलवे ट्रंक लाइनें, विराट औद्योगिक व कृषि संस्थान...। अपने
को अधिक जानने की इच्छा जनता को घूमने के लिए प्रेरित करती है। कोई
लम्बे समय तक यात्रा कर सकता है लेकिन सिर्फ 1 या 2 दिन की यात्रा भी
अनुभव दे सकती है। कुछ अच्छा देखने के लिए दूर तक जाना नहीं होता। शहर
व घर के निकट के गाँवों में अनेक स्थान हैं जो राष्ट्रीय इतिहास के महत्त्व के हैं
और हर स्थान पर व्यक्ति प्रकृति के सौंदर्य का आनन्द उठा सकता है।

मास्को निवासी सप्ताहांत घूमने पर जाना पसन्द करते हैं। लोग वर्ष-पर्यंत
घूमा करते हैं प्रति माह औसतन 150 घूमने के कार्यक्रम होते हैं और अत्यन्त
भिन्न-भिन्न रास्तों पर। एक खाली दिन में बाहर सैर वास्तव में खुले आकाश या
चरागाह या जंगल में एक क्लब के समान है। इस विराट क्लब के कुछ ही
...दी होते हैं, जो मौसम के बावजूद वर्ष-पर्यंत घूमा करते हैं। घूमने में उत्
...ति गुट के नेता बन जाते हैं और परिवार को बाहर ले जाते हैं। वे ऐसा स्वेच्
दूसरों की भलाई की एक अभिव्यक्ति के रूप में करते हैं।

सप्ताहान्त घूमना परिवार को सामुदायिक रूप में बाहर जाने में मदद करता
...दर्शि के प्रकृति-ज्ञान को बढ़ाता है और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है।
परिवार को गुजारने का सही तरीका है', 'यह श्रेष्ठतम व्यायाम है', ...
...ति कहते हैं जो ऐसी यात्रा में जाते हैं। पीठ पर थैला ...
...डों में बाइ (व्यक्ति अपने ...

या सम्बद्ध गणराज्यों की संस्कृति व परम्पराओं के साथ खुद को परिचित कराना है।

प्रति वर्ष 280 लोग स्थानीय या देशव्यापी पर्यटन मार्गों पर यात्रा करते हैं, और 1600 लोग ऐतिहासिक स्थलों व सांस्कृतिक स्मारकों की संक्षिप्त यात्राएँ करते हैं। वे होटलों, पर्यटकों के आधार कैम्पों, या कैम्पिंग स्थलों पर रुकते हैं। यात्रा के साधन भी काफी भिन्न हैं, जैसे, विशेष पर्यटक ट्रेन, स्टीमशिप, बस, या पैदल, घोड़े पर, स्लेज, मोटर बोट या फट्टों (रैफ्ट) पर।

पर्यटन छुट्टी मनाने का एक विशेष रूप है, विशेषकर युवाओं के मध्य। श्रमरत जनों द्वारा अपनी छुट्टियाँ बिताने के लिए तरीकों के आयोजन में सोवियत राज्य विशेष रूप से रुचि लेता है।

सोवियत संघ का संविधान का 41वाँ अनुच्छेद कहता है कि स्पष्टतया परिभाषित काम के घंटों की संख्या की स्थापना द्वारा, सवैतनिक अवकाश की व्यवस्था द्वारा, तथा सेनेटोरियम, अवकाश-गृहों व बोर्डिंग-गृहों के विस्तृत जाल द्वारा श्रमरत जनता के आराम के अधिकार की गारंटी है।

क्रांति-पूर्व सेनेटोरियम में प्रवेश पाने वालों में एक भी श्रमिक या किसान नहीं होता था। आज खनिज जल से इलाज श्रमरत जनता व उनके परिवार की पहुँच में है। छुट्टी मनाने या इलाज कराने आज लाखों-करोड़ों लोग देश के विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हैं। इस ध्येय के लिए राज्य ने बहुत बड़ी राशि की व्यवस्था की है।

राज्य में 13000 सेनेटोरियम, अवकाश-गृह, बोर्डिंग-गृह, फैक्टरी-बीमारी-निरोधक केन्द्र, पर्यटकों के आधार व कैम्पिंग स्थान हैं। ये सुविधाएँ एक समय पर 20 लाख तक लोगों को रख सकते हैं।

वयस्कों के लिए सेनेटोरियम के साथ, ट्रेड यूनियन प्रणाली के पास माँ-बाप व 4 से 15 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए सेनेटोरियम हैं, जिनकी संख्या निरन्तर बढ़ रही है। ऐसे युवक जिन्हें इलाज की आवश्यकता है डॉक्टरों की निगरानी में रहते हैं। इन सेनेटोरियम में कइयों का काम सिर्फ ग्रीष्मकाल तक ही सीमित नहीं रहता। इसीलिए डॉक्टर की इजाजत से स्कूली उम्र के बच्चों को पाठ दिया जाता है।

अनेक परिवार अपने ग्रीष्मकालीन अवकाश को अपने संस्थानों के मनोरंजन केन्द्रों में व्यतीत करना पसंद करते हैं। जिनके साथ बच्चे हैं वे बच्चों के डॉक्टरों, दन्त-चिकित्सकों, चिकित्सा-नर्सों, इलाज करने वाले शारीरिक प्रशिक्षण के लिए अध्यापकों व प्रशिक्षकों पर निर्भर रह सकते हैं। स्वास्थ्य केन्द्रों में युवकों के लिए खेल-कूद, गेम के मैदान व मनोरंजन के पार्क हैं। ऐसे मनोरंजन-गृहों व बोर्डिंग-गृहों की संख्या 1980 में 115,000 हो गयी है और 11वें पंचवर्षीय काल में

वाद के अन्तर्गत समाज यह निश्चित करना चाहता है कि व्यक्ति अपने लिए, अपने परिवार व पूरे समाज के लिए इस समय का श्रेष्ठ उपयोग करे। नि सन्देह, बहुत कुछ खुद व्यक्ति पर उसकी आवश्यकताओ, रुचियो व कलात्मक गतिविधि पर निर्भर करता है। परन्तु अपने खाली समय का अधिक-से-अधिक उपयोग करने के लिए साधनो व अवसरों को समाज प्रदान करता है, और यह प्रमुख महत्त्व का है।

समूचे सकुल द्वारा निर्धारित होती है।

स्पष्टत शहरीकरण, देशान्तरण, स्त्रियो की बढ़ती हुई स्वतन्त्रता, शीघ्र यौन परिपक्वता जैसी सार्वभौम घटनाओं ने तालाक-दर पर प्रभाव डाला है। हालांकि, सोवियत सघ मे समाजशास्त्रियो द्वारा तलाक के कारणो पर एक विश्लेषण बतलाता है कि प्राथमिक कारण नैतिक-मनोविज्ञानी प्रकृति के हैं।

तलाक के लिए अत्यधिक प्रचलित उल्लेखित कारण है चरित्रो मे विसगति के कारण प्रेम मे कमी। यह सोवियत पुरुषो व स्त्रियो द्वारा वैवाहिक सम्बन्धो के नैतिक पक्ष को दिये जाने वाले महत्त्व को कम करता है।

प्रेम हेतु विवाह करना स्वय अपने मे अत्यधिक लाभ का है पर यह अत्यधिक मांगो को भी लादता है जिसे हर कोई सन्तुष्ट नहीं कर सकता है। ऐसे भी लोग हैं जिनके पास विवाह का आदर्शवादी विचार है, पर वर व वधू के रोमांटिक स्वप्न एक बात है और पारिवारिक जीवन कुछ दूसरा। अकसर हम 'यथार्थ मे जीना सीखने' की बात करते हैं। व्यक्ति के लिए यथार्थ से कैसे जूझा जाये सीखना अत्यत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह उसकी बुद्धि, नैतिक व भावनात्मक परिपक्वता का सबूत है।

पारिवारिक तालमेल को बरकरार रखने के लिए पति-पत्नी दोनो को निर्णय प्रक्रिया में समान रूप से भाग लेना चाहिए, अच्छे पारिवारिक सबधो को कायम रखने के लिए व्यक्तिगत दायित्वो को लेना, और परिवार की मजबूती हेतु प्रयत्न करना चाहिए। झगड़े फिर भी उठेंगे पर उनसे निपटने मे परिवार सामर्थ्यवान होगा।

प्रेम की चाहत व प्रेम के लिए क्षमता रखना एक ही बात नही है। प्रेम के लिए क्षमता की माँग सर्वप्रथम आध्यात्मिक समृद्धता पर निर्भर रहती है। अक्सर लोग शारीरिक आकर्षण को प्रेम समझने की भूल करते हैं। प्रेम मे ऐसा आकर्षण तो बढ़ सकता है परंतु ठीक उतनी ही आसानी से खत्म भी हो सकता है।

लेनिनग्राद की समाजशास्त्री के० येमेलीनोवा द्वारा किये गये जनमत मे सभी युगलों ने प्रेम को वैवाहिक सबध को मजबूत करने मे प्रमुख घटक माना है। परतु 35% जोड़ों ने कहा कि समय के साथ शारीरिक निकटता बढ़ती है या बरकरार रहती है, दूसरों ने कहा कि या तो यह कम हो जाती है या पूर्णतया लुप्त हो जाती है।

जब तक बढ़ती हुई आध्यात्मिक निकटता, अपने परिवार की एकता हेतु पति-पत्नी मे उत्तरदायित्व की भावना और एक-दूसरे पर सदैव आश्रित रहने की सीख द्वारा मजबूत न हो, तब तक गहन प्रेम भी पारिवारिक जीवन की कठिनाइयों को

खड़ी होती है। यदि जोड़े परस्पर समझने का प्रयत्न करते हैं तो भावनात्मक बाड़ को हटाया जा सकता है। जब दो व्यक्ति भावना व विचारों को परस्पर बाँटकर चलते हैं तब अनेक मौन समस्याएँ टाली जा सकती हैं।

कीव से एल० चुई कोव अन्य समाजशास्त्री रिपोर्ट करते हैं कि पति की शराबखोरी तलाक का एक गंभीर कारण है। पत्नियों द्वारा पेश की गयी तलाक की अधिकांश दरखास्तों में प्रधान कारण के रूप में नशाखोरी व शराबखोरी का उल्लेख किया गया है। यद्यपि अलकोहल निस्सदेह अनेक तलाकों का कारण है लेकिन यह भी सच है कि अत्यधिक शराब कई बार बुरे पारिवारिक सबंधों के कारण भी होती है। किसी भी मामले में यह बुराई व्यक्ति के आध्यात्मिक कमी में जड़ बनाये बैठी है, जो बुरे पारिवारिक सबंधों को जन्म देता है। इसलिए समूची शिक्षा प्रणाली, सोवियत समाज का वातावरण ही इस बुराई को नष्ट करने में प्रवृत्त है। साथ ही, सार्वजनिक नैतिक व प्रशासनिक उपायों के अलावा, चिकित्सा उपचार भी प्रदान किए जाते हैं।

सोवियत राष्ट्र व सार्वजनिक संगठनों ने नशाखोरी के विरुद्ध एक गम्भीर युद्ध छेड़ रखा है। व्यक्ति को शराबखोरी से सुधारने के लिए प्रभावशाली उपाय किए जाते हैं (यदि आवश्यक हो तो अनिवार्य)। इसको अनेक व्यक्ति को सामान्य जीवन में लौटाने और परिवार को मजबूत करने में मदद मिली है।

कुछ मामलों में पारिवारिक सबंधों में गिरावट भौतिक साधनों की कमी, रहने की बदतर स्थितियाँ व दैनिक जीवन की अनेक कठिनाइयों, जिन्हें विवाह के आरम्भिक काल के दौरान युवा परिवार अनुभव करते हैं, के कारण उत्पन्न होती है। तलाक के कारणों के रूप में ये कारण लगातार उल्लेखित हुए हैं। छठे दशक में, जब आवास समस्या काफी गम्भीर थी, बुरा जीवन स्तर कभी-कभी तलाक का कारण बतलाया जाता था (जनमत का 0.5 से 3%)। सातवें दशक में तलाक के लिए दरखास्त देने वाले अनेक जोड़ों ने सामान्य आवास की कमी को उल्लेखित किया (लगभग 8 से 14%, विशेषकर युवा जोड़े)। यह विरोधाभासी स्थिति निम्न प्रकार से उत्पन्न होती है: जैसे-जैसे जीवन-स्तर में सुधार आने लगा सोवियत जन अधिक माँग करने लगे। यह बात युवजनों के लिए विशेष रूप में सच है, जिन्हें यह याद नहीं कि 20-30 वर्ष पूर्व लोग किस प्रकार रहते, जब न सिर्फ एक ही परिवार की दो-तीन पीढ़ियाँ साथ-साथ रहती थी बल्कि एक (सामुदायिक) फ्लैट में कई असबद्ध परिवारों का रहना भी सामान्य बात थी। क्रातिपूर्व अतीत से विरासत में प्राप्त खराब आवासीय कमी को दूर करने के सोवियत राज्य [illegible] विश्व युद्ध [illegible] रुक गये जब नाजियों ने क्रांति पश्चात् के 20 वर्षों [illegible] को नष्ट कर दिया। सोवियत जनों के गुरुतर

प्रयासो के परिणामत पिछले दशको मे औसतन 20 लाख फ्लैट प्रतिवर्ष बनाए गये और आज सोवियत परिवारो का विराट भाग आरामदायक फ्लैटो मे रहता है।

आवास की कमी को सुलझाने के लिए राज्य द्वारा काफी कुछ किया जा रहा है। कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम प्रत्येक परिवार को आरामदायक फ्लैट देने की परिकल्पना करता है। जैसा पहले कहा जा चुका है, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वी कांग्रेस का निर्णय इस लक्ष्य की ओर उन्मुख है।

वास्तव मे, अच्छे आवास सामान्य घरेलू संबधो के स्थायित्व मे एक बड़ी भूमिका अदा करते हैं। परंतु आवास की समस्या स्वयमेव परिवार के टूटने की ओर नही ले जाती है। प्रेम हेतु विवाहो पर जीवन-स्तर सदैव कम प्रभाव रखता है अपेक्षाकृत अन्य कारणो पर आधारित विवाहो से। समाजशास्त्रीय अध्ययनो ने इसी तथ्य को सिद्ध किया है।

पारिवारिक संबंध, जो परिवार के लिए, आध्यात्मिक, भावनात्मक एकता के लिए, मित्रत्व के लिए व्यक्ति की चाह पर आधारित हैं और जहाँ प्रिय के लिए चिन्ता हो, घरेलू परेशानियो के समय पर आसानी से तोड़े नही जा सकते हैं। यदि परिवार मे इन गुणो की कमी हो, भौतिक व आवास की कमी, माँ-बाप का हस्त-क्षेप, गलतफहमी, ईर्ष्या व अन्य छुटपुट परिस्थितियाँ तलाक के लिए कारण बन सकते हैं।

हालाँकि सिर्फ युवा ही तलाक नही चाहते हैं। उदाहरण के लिए, लिथुएनियन सोवियत समाजवादी गणराज्य म तलाक के आँकड़े बतलाते है कि अनेक जोड़े 5 से 10 वर्ष तक विवाहित रहने के बाद तलाक चाहते हैं। अधिकांश परिवार 8 से [illegible] वर्ष के विवाह के पश्चात् अलग होते हैं। इस समय पर बच्चे उस आयु के होते [illegible] जब माँ-बाप के मध्य पड़ी दरार उन पर अत्यन्त हानिकारक मनोविज्ञानी [illegible]र डालती है।

कुछ समाजशास्त्रियों की मान्यता है कि बढ़ते हुए तलाक की दर का कारण [illegible] प्रक्रिया का सरलीकरण है। पहले तलाक लेने न्यायालय मे जाना पड़ता [illegible]र, यदि पति-पत्नी तैयार हों और कोई कम उम्र का बच्चा नहीं हो और [illegible]या निर्वाह व्यय पर मतभेद न हो, तब नागरिक पंजीकरण ऑफिस मे [illegible] सम्पन्न हो जाता है। पति-पत्नी की विवाह संबध-विच्छेद पर सहमति एक [illegible]ार्थना पत्र मे व्यक्त होती है।

[illegible]रिक पंजीकरण ऑफिस तलाक हेतु लिखित प्रार्थनापत्र प्राप्त कर लेती [illegible] है और 3 माह के पश्चात् पति-पत्नी को उनके विवाह संबंध विच्छेद [illegible] देता है। 3 माह के इन्तजार का समय उन्हें अपने निर्णय पर पुनर्वि-[illegible] के लिए होता है।

[illegible]

बाजी में काम करने से रोके। यदि तलाक अपरिहार्य हो तब न्यायालय ही निर्णय लेता है कि माँ-बाप में कौन बच्चे का लालन-पालन करे और कौन निर्वाह-व्यय दे। यह तब भी निर्णय लेता है जब पति-पत्नी में एक तलाक के लिए तैयार न हो या जब सम्पत्ति के विभाजन पर असहमति हो। अत में, वह मामला भी न्यायालय में लिया जाता है जब पति-पत्नी में एक यद्यपि तलाक के विरुद्ध म नहीं है फिर भी किसी कारण से नागरिक पंजीकरण ऑफिस में इसे विधिसम्मत बनाने के लिए *आने में असमर्थ होता है।*

पत्नी की गर्भावस्था के दौरान व बच्चे के जन्म के पहले वर्ष तक पति को तलाक के लिए आवेदन देने का अधिकार नहीं है। हालाँकि प्रसूता या बच्चे को पालने वाली स्त्री किसी भी समय तलाक के लिए आवेदन कर सकती है। यह कानून माँ व बच्चे के स्वास्थ्य की सुरक्षा का यत्न करता है।

विवाह-सबंध-विच्छेद तब होता है जब न्यायालय यह साबित कर दे कि पति-पत्नी साथ-साथ नहीं रह सकते हैं और कि विवाह को बचाना असभव है। परिवार में अस्थायी असहमति, कभी-कभी झगडे व बिना किसी गम्भीर कारण के पति-पत्नी में एक या दोनों की विवाह-सबध-विच्छेद करने की इच्छा तलाक के लिए पर्याप्त आधार नहीं माने जाते हैं।

न्यायालय पति-पत्नी के पुन मिलन का सदैव यत्न करता है। लेकिन समाज केवल उन्हीं पारिवारिक सबधो को अक्षुण्ण रखने मे रुचि रखता है, जो नैतिक रूप में स्वस्थ रिश्तो पर और बच्चो के लालन-पालन व अनुकूल विकास पर आधारित हैं। *कुछ मामलो मे परिवार के कल्याण के कारण तलाक की सलाह दी जाती है।*

हालाँकि बढ़ती हुई तलाक-दर एक सामाजिक समस्या है, विशेषकर जब बच्चे बिना पिता के रह जाते हैं।

तलाक की बढ़ती हुई सख्या गिरते हुए जन्म-दर का भी द्योतक है परिवार के टूटने का पूर्वानुमान करके अनेक पति-पत्नी जान-बूझकर बच्चो की सख्या कम रखते हैं। और तलाक, चाहे बच्चे हों इसके बावजूद, सामान्यत एक दुखद अनुभव है, कम-से-कम पति-पत्नी मे किसी एक के लिए।

इसीलिए, परिवार की मजबूती राज्य के लिए महत्वपूर्ण है और इस उद्देश्य हेतु सोवियत सघ मे अब गम्भीर सगठनात्मक उपाय लागू किए जा रहे हैं।

उदाहरण के लिए, कई वर्ष पूर्व मास्को सोवियत कार्यकारी समिति में विवाह व परिवार के प्रश्नों को देखने वाले एक विभाग की स्थापना की जिसका काम था:

—परिवार को मजबूत करने मे स्थानीय सोवियतों, सस्थाओं व संगठनों के

स्टब्रोपोल की ल्युड्मिला पोला आकोवा हमें बताती है :

"दो बच्चो की माँ बनने के पश्चात् मैं द्वितीय सभ्या से अलग होकर स्वतन्त्र संगीतकार के संघ में शामिल हुई। मैं रचनात्मक विचारों से [illegible] जिसे मैंने अपनी इच्छा शक्ति से दूसरी ओर को अपनी गतिविधि [illegible] सिलाई करती थी, पकवान बनाती थी, गाना गाती व कविताएँ [illegible] इसी समय मैंने अपने पति को खो दिया।

"हालाँकि हम पारिवारिक जीवन का ढोंग करते रहे लेकिन प्रेम [illegible] खो चुकी थी। मैंने स्त्री के एकाकीपन को पूर्ण गहराई से अनुभव किया।

"अब जबकि मैंने एक व्यक्ति को खोज लिया है, जो मेरी रचना [illegible] को सहायता देता है और मेरे पास अपने अकेलेपन को खत्म करता [illegible] मैं हिचकिचाती हूँ : मैं दो में बँटना नहीं चाहती, मैं एक व्यक्ति के [illegible] गुणों को नहीं चाहती, जो घरेलू स्त्री के गुणों का, जिसे पति अधिक [illegible] महज पूरक हो।

"प्रेम व पारिवारिक रिश्ते, जिसमें आध्यात्मिक एकता, [illegible] मदद की कमी होती है, तेजी से नष्ट होते हैं। वे एक स्त्री के रोष व [illegible] नष्ट हो जाते हैं।"

नयी स्त्री। वह एक अच्छे परिवार को छोड़ती है क्योंकि वह [illegible] प्रेम में पड़ गयी है और पति के साथ अपने शेष जीवन को [illegible] वह एक प्रेमी व्यक्ति को छोड़ देती है, अब वह समझती है कि प्रेम के प्रति [illegible] विचार और इसलिए सामान्य रूप में जीवन के प्रति विचार भिन्न हैं। [illegible] पति के साथ रहती है यह सोचकर कि उसका बच्चा पिता के प्यार से [illegible] हो।...

चरित्रगत रूप में, युवा स्त्रियाँ विवाह संबंध तोड़ने में अधिक [illegible] तलाक के लिए आवेदन देने वालों में दो-तिहाई स्त्रियों की उम्र 25 वर्ष से [illegible]

समान रहते हों। अकसर समझ की कमी के कारण एक भावनात्मक बाड़ आ खड़ी होती है। यदि जोड़े परस्पर समझने का प्रयत्न करते हैं तो भावनात्मक बाड़ को हटाया जा सकता है। जब दो व्यक्ति भावना व विचारों को परस्पर बाँटकर चलते हैं तब अनेक यौन समस्याएँ टाली जा सकती हैं।

कीव में एल० चुई को व अन्य समाजशास्त्री रिपोर्ट करते हैं कि पति की शराबखोरी तलाक का एक गंभीर कारण है। पत्नियों द्वारा पेश की गयी तलाक की अधिकांश दरख्वास्तों में प्रधान कारण के रूप में नशाखोरी व शराबखोरी का उल्लेख किया गया है। यद्यपि अलकोहल निस्संदेह अनेक तलाकों का कारण है लेकिन यह भी सच है कि अत्यधिक शराब कई बार बुरे पारिवारिक संबंधों के कारण भी होती है। किसी भी मामले में यह बुराई व्यक्ति के आध्यात्मिक कमी में जड़ बनाये बैठी है, जो बुरे पारिवारिक संबंधों को जन्म देता है। इसलिए समूची शिक्षा प्रणाली, सोवियत समाज का वातावरण ही इस बुराई को नष्ट करने में प्रवृत्त है। साथ ही, सार्वजनिक नैतिक व प्रशासनिक उपायों के अलावा, चिकित्सा उपचार भी प्रदान किए जाते हैं।

सोवियत राष्ट्र व सार्वजनिक संगठनों ने नशाखोरी के विरुद्ध एक गम्भीर युद्ध छेड़ रखा है। व्यक्ति को शराबखोरी से सुधारने के लिए प्रभावशाली उपाय किए जाते हैं (यदि आवश्यक हो तो अनिवार्य)। इसको अनेक व्यक्ति को सामान्य जीवन में लौटाने और परिवार को मजबूत करने में मदद मिली है।

कुछ मामलों में पारिवारिक संबंधों में गिरावट भौतिक साधनों की कमी, रहने की बदतर स्थितियाँ व दैनिक जीवन की अनेक कठिनाइयों, जिन्हें विवाह के आरम्भिक काल के दौरान युवा परिवार अनुभव करते हैं, के कारण उत्पन्न होती है। तलाक के कारणों के रूप में ये कारण लगातार उल्लेखित हुए हैं। छठे दशक में, जब आवास समस्या काफी गम्भीर थी, बुरा जीवन स्तर कभी-कभी तलाक का कारण बतलाया जाता था (जनमत का 0.5 से 3%)। सातवें दशक में तलाक के लिए दरख्वास्त देने वाले अनेक जोड़ों ने सामान्य आवास की कमी को उल्लेखित किया (लगभग 8 से 14%, विशेषकर युवा जोड़े)। यह विरोधाभासी स्थिति निम्न प्रकार से उत्पन्न होती है: जैसे-जैसे जीवन-स्तर में सुधार आने लगा सोवियत जन अधिक माँग करने लगे। यह बात युवजनों के लिए विशेष रूप से सच है, जिन्हें यह याद नहीं कि 20-30 वर्ष पूर्व लोग किस प्रकार रहते, जब न सिर्फ एक ही परिवार की दो-तीन पीढ़ियाँ साथ-साथ रहती थीं बल्कि एक (सामुदायिक) फ्लैट में कई असबद्ध परिवारों का रहना भी सामान्य बात थी। क्रांतिपूर्व अतीत से विरासत में प्राप्त खराब आवासीय कमी को दूर करने के सोवियत राज्य के प्रयत्न द्वितीय विश्व युद्ध में रुक गये जब नाजियों ने क्रांति पश्चात् के 20 वर्षों में निर्मित आवासों के पर्याप्त भाग को नष्ट कर दिया। सोवियत जनों के गुरुतर

स्टव्रोपोल की ल्युड्मिला पोला आकोवा हमें बताती हैं :

"दो बच्चो की माँ बनने के पश्चात् मैं द्वितीय सस्था से स्नातक
स्वतन्त्र सगीतकार के सघ मे शामिल हुई। मैं रचनात्मक विचारो से भर
जिसे मैंने अपनी इच्छा शक्ति से दूसरी ओर को अपनी गतिविधि मे मो
सिलाई करती थी, पकवान बनाती थी, गाना गाती व कविताएँ करती थी,
इसी समय मैंने अपने पति को खो दिया।

"हालाँकि हम पारिवारिक जीवन का ढोंग करते रहे लेकिन प्रेम की गरमा
खो चुकी थी। मैंने स्त्री के एकाकीपन को पूर्ण गहराई से अनुभव किया।

"अब जबकि मैंने एक व्यक्ति को खोज लिया है, जो मेरी रचनात्मक योग्य
को सहायता देना है और मेरे पास अपने अकेलेपन को खत्म करने का अवसर है,
मैं झिचकिचाती हूँ मैं दो मे बँटना नही चाहती, मैं एक व्यक्ति के रूप मे अपने
गुणो को नही चाहती जो घरेलू स्त्री के गुणो का, जिसे पति अधिक चाहता है,
महज पूरक हो।

"प्रेम व पारिवारिक रिश्ते, जिसमे आध्यात्मिक एकता, परस्पर समझ व
मदद की कमी होती है, तेजी से नष्ट होते है। वे एक स्त्री के रोष व असतुष्टि से
नष्ट हो जाते हैं।"

नयी स्त्री। वह एक अच्छे परिवार को छोडती है क्योकि वह किसी और के
प्रेम मे पड गयी है और पति के साथ अपने शेष जीवन को अनैतिक मानती है।
वह एक प्रेमी व्यक्ति को छोड देती है, जब वह समझती है कि प्रेम के प्रति उनके
विचार और इसलिए सामान्य रूप मे जीवन के प्रति विचार भिन्न हैं। वह अपने
पति के साथ रहती है यह सोचकर कि उसका बच्चा पिता के प्यार से महरूम न
हो।

वस्तिगत रूप मे, युवा स्त्रियाँ विवाह सबध तोडने मे अधिक सक्रिय हैं,
साथ के लिए आवेदन देने वालो मे दो-तिहाई स्त्रियो की उम्र 25 वर्ष से कम
है।

कुछ समाजशास्त्रियो का विश्वास है कि तलाक का कारण भौतिक असतुष्टि
इससे स्वतन्त्र रूप मे उत्पन्न नही हो सकते है, लेकिन परिवार की मजबूरी को
मे वैवाहिक सबधो के इस स्वरूप को नकारा नही जा सकता है। लेनिनग्राद मे
गया समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण दर्शाता है कि 6% लोगो ने शारीरिक कारणो
तलाक के लिए कारण बतलाया है।

[illegible]

समान रहने हो। अकसर समझ की कमी के कारण एक भावनात्मक बाड आ खड़ी होती है। यदि जोड़े परस्पर *समझने का प्रयत्न करते हैं तो भावनात्मक बाड* को हटाया जा सकता है। जब दो व्यक्ति भावना व विचारो को परस्पर बाँटकर चलने है तब अनेक यौन समस्याएँ टाली जा सकती हैं।

कीव से एल० चुई को व अन्य समाजशास्त्री रिपोर्ट करते हैं कि पति की शराबखोरी तलाक का एक गम्भीर कारण है। पत्नियो द्वारा पेश की गयी तलाक की अधिकांश दरखास्तों मे प्रधान कारण के रूप मे नशाखोरी व शराबखोरी का उल्लेख किया गया है। यद्यपि अलकोहल निस्सदेह अनेक तलाकों का कारण है लेकिन यह भी सच है कि अत्यधिक शराब कई बार बुरे पारिवारिक सबधो के कारण भी होती है। किसी भी मामले मे यह बुराई व्यक्ति के आध्यात्मिक कमी मे जड बनाये बैठी है, जो बुरे पारिवारिक सबधो को जन्म देता है। इसलिए समूची शिक्षा प्रणाली, सोवियत समाज का वातावरण ही इस बुराई को नष्ट करने मे प्रवृत्त है। साथ ही, सार्वजनिक नैतिक व प्रशासनिक उपायों के अलावा, चिकित्सा उपचार भी प्रदान किए जाते हैं।

सोवियत राष्ट्र व सार्वजनिक सगठनों ने नशाखोरी के विरुद्ध एक गम्भीर युद्ध छेड रखा है। व्यक्ति को शराबखोरी से सुधारने के लिए प्रभावशाली उपाय किए जाते हैं (यदि आवश्यक हो तो अनिवार्य)। इसको अनेक व्यक्ति को सामान्य जीवन मे लौटाने और परिवार को मजबूत करने मे मदद मिली है।

कुछ मामलो मे पारिवारिक सबधो मे गिरावट भौतिक साधनो की कमी, रहने की बदतर स्थितियाँ व दैनिक जीवन की अनेक कठिनाइयो, जिन्हें विवाह के आरम्भिक काल के दौरान युवा परिवार अनुभव करते हैं, के कारण उत्पन्न होती है। तलाक के कारणो के रूप मे ये कारण लगातार उल्लेखित हुए हैं। छठे दशक मे, *जब आवास समस्या काफी गम्भीर थी, बुरा जीवन स्तर कभी-कभी तलाक* का कारण बतलाया जाता था (जनमत का 0 5 से 3%)। सातवें दशक मे तलाक के लिए दरखास्त देने वाले अनेक जोडो ने सामान्य आवास की कमी को उल्लेखित किया (लगभग 8 से 14%, विशेषकर युवा जोडे)। यह विरोधाभासी स्थिति निम्न प्रकार से उत्पन्न होती है· जैसे-जैसे जीवन-स्तर मे सुधार आने लगा सोवियत जन अधिक माँग करने लगे। यह बात युवजनो के लिए विशेष रूप मे सच है, जिन्हे यह याद नहीं कि 20-30 वर्ष पूर्व लोग किस प्रकार रहते, जब न सिर्फ एक ही परिवार की दो-तीन पीढ़ियाँ साथ-साथ रहती थीं बल्कि एक (सामुदायिक) फ्लैट मे कई असंबद्ध परिवारों का रहना भी सामान्य बात थी। क्रांतिपूर्व अतीत से विरासत मे प्राप्त खराब आवासीय कमी को दूर करने के सोवियत राज्य के प्रयत्न द्वितीय विश्व युद्ध मे रुक गये जब नाजियों ने क्रांति पश्चात् के 20 वर्षों मे निर्मित आवासो के पर्याप्त भाग को नष्ट कर दिया। सोवियत जनों के गुरुतर

द्वारा भग होना चाहिए क्योकि यह राज्य व समाज के हित मे है कि जोड़ो को जल्दबाज़ी मे काम करने से रोके। यदि तलाक अपरिहार्य हो तब न्यायालय ही निर्णय लेता है कि माँ-बाप मे कौन बच्चे का लालन-पालन करे और कौन निर्वाह-व्यय दे। यह तब भी निर्णय लेता है जब पति-पत्नी मे एक तलाक के लिए तैयार न हो या अब सम्पत्ति के विभाजन पर असहमति हो। अत मे, वह मामला भी न्यायालय मे लिया जाता है जब पति-पत्नी मे एक यद्यपि तलाक के विरुद्ध मे नही है फिर भी किसी कारण से नागरिक पजीकरण ऑफिस मे इसे विधिसम्मत बनाने के लिए आने मे असमर्थ होता है।

पत्नी की गर्भावस्था के दौरान व बच्चे के जन्म के पहले वर्ष तक पति को तलाक के लिए आवेदन देने का अधिकार नही है। हालांकि प्रसूता या बच्चे को पालने वाली स्त्री किसी भी समय तलाक के लिए आवेदन कर सकती है। यह कानून माँ व बच्चे के स्वास्थ्य की सुरक्षा का यत्न करता है।

विवाह-संबध-विच्छेद तब होता है जब न्यायालय यह साबित कर दे कि पति-पत्नी साथ-साथ नहीं रह सकते हैं और कि विवाह को बचाना असभव है। परिवार मे अस्थायी असहमति, कभी-कभी झगड़े व बिना किसी गम्भीर कारण के पति-पत्नी मे एक या दोनो की विवाह-सबध-विच्छेद करने की इच्छा तलाक के लिए पर्याप्त आधार नहीं माने जाते हैं।

न्यायालय पति-पत्नी के पुन मिलन का सदैव यत्न करता है। लेकिन समाज केवल उन्हीं पारिवारिक सबधों को अक्षुण्ण रखने मे रुचि रखता है, जो नैतिक रूप मे स्वस्थ रिश्तो पर और बच्चो के लालन-पालन व अनुकूल विकास पर आधारित हैं। कुछ मामलो में परिवार के कल्याण के कारण तलाक की सलाह दी जाती है।

हालांकि बढ़ती हुई तलाक-दर एक सामाजिक समस्या है, विशेषकर जब बच्चे बिना पिता के रह जाते हैं।

तलाक की बढ़ती हुई सख्या गिरते हुए जन्म-दर का भी द्योतक है परिवार के टूटने का पूर्वानुमान करके अनेक पति-पत्नी जान-बूझकर बच्चो की सख्या कम रखते हैं। और तलाक, चाहे बच्चे हों इसके बावजूद, सामान्यत एक दुखद अनुभव है, कम-से-कम पति-पत्नी मे किसी एक के लिए।

इसीलिए, परिवार की मजबूती राज्य के लिए महत्वपूर्ण है और इस उद्देश्य हेतु सोवियत सघ मे अब गम्भीर सगठनात्मक उपाय लागू किए जा रहे हैं।

उदाहरण के लिए, कई वर्ष पूर्व मास्को सोवियत कार्यकारी समिति ने विवाह व परिवार के प्रश्नों को देखने वाले एक विभाग की स्थापना की जिसका काम था·

—परिवार को मजबूत करने में स्थानीय सोवियतों, सस्थानो व संस्थाओं के
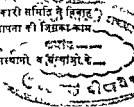
विद्यालय के छात्र, जो सीखा है और साथ मे उनकी पसद की समस्याओ पर विचार-विमर्श करते हैं।

नागरिक पंजीकरण ऑफ़िस से उनके विवाह के प्रमाणपत्र के साथ नव-विवाहितो को विश्वविद्यालय पर लगने वाली कक्षाओ पर उपस्थित होने का प्रवेशपत्र भी मिलता है। नागरिक पजीकरण ऑफिस की डायरेक्टर, एन्टोनीना स्टेपनेन्को ने हमे बतलाया "विवाह का पजीकरण करने और नव-विवाहित को सलाह देने के अलावा हम यह भी देखने का प्रयत्न करते है कि जोडा सही अर्थों मे पारिवारिक जीवन की ओर उन्मुख हो। इसमे हमे विश्वविद्यालय मदद देता है।"

ऐसे विश्वविद्यालय व स्कूल देश के अधिकाश शहरो व क्षेत्रो मे खोले गये हैं।

परिवार सुझाव केन्द्र युवा जोडो के प्रश्नो का समाधान करते हैं। ऐसे केन्द्र मास्को, विलनिअस, लेनिनग्राद, काऊनास व कुछ अन्य शहरो मे हैं, जहाँ ये हाल ही मे आरम्भ हुए हैं। मनोवैज्ञानिकों, डॉक्टरों व वकीलो की सलाह वैवाहिक जोडो को झगडो, यदि हो तो, के कारण को समझने मे और इसे सुलझाने के तरीक़ो मे मदद देती है। परिवार मे आने वाले तथाकथित तीन सक्टकालो पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

पहला सकट विवाह के तुरन्त बाद आता है। इन सेवाओं मे सलग्न विशेषज्ञो ने निर्धारित किया है कि युवा पति व पत्नी के मध्य झगडा तब उठ सकता है, जब वे पाते हैं कि जीवन की वास्तविकता वह नही है, जो वे सोचा करते थे। कैसा परिवार होना चाहिए इस पर दोनो का पूर्वानुमान जिस परिवार मे वे पले, बढे हुए उस पर आधारित होता है। पर परिवार भिन्न-भिन्न होते हैं और इसीलिए आदर्श परिवार कैसा होना चाहिए इस पर विभिन्न राय होती है। फिर, अब समय बदल गया है। परिणामत युवा जोडो व उनके माँ-बाप दोनो को अपने दृष्टिकोणों पर पुन विचार करना चाहिए और एक-दूसरे से समझौता करना चाहिए। दुर्भाग्यवश, यह कभी-कभी असम्भव या यहाँ तक कि मुश्किल होता है।

पहले बच्चे का जन्म विवाह मे दूसरा सकट लाता है। इस समय कई समस्याएँ उठ खडी हो सकती हैं। कभी-कभी स्त्री अपने पति को भूल जाती है और अपना सारा ध्यान बच्चे पर लगा देती है। कुछ पुरुष इस पर रोष करते हैं। 'पारिवारिक सेवा' स्त्री व पुरुष की विभिन्न मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओ को बतलाता है और पति-पत्नी के मध्य प्रेम मजबूत रहे इसे सुनिश्चित करने का प्रयास करता है।

अन्त मे, बच्चों के बड़े हो जाने व परिवार छोडने के बाद तीसरा सकट उठता है। इस काल पर पर्याप्त सख्या मे तलाक होते हैं। पति व पत्नी एक-दूसरे के साथ अकेले रह जाते हैं। जब एक समान रुचि के रूप मे बच्चे न रहे, तब कभी-कभी पति-पत्नी पाते हैं कि वे काफ़ी दूर हो गये हैं और उनके मध्य कोई सम्बंध नही रह

क्या अधिक बच्चे पैदा हो रहे है ?

कितने बच्चे होने चाहिए ? यह प्रश्न न सिर्फ जनता के छोटे से समूह, जो परिवार बना रहा है, के लिए बल्कि समूचे समाज के लिए अत्यधिक महत्व का है। इसका कोई सरल उत्तर नहीं है। बच्चो की सख्या पर युगल का निर्णय अनेक घटको पर, जो कभी-कभी परस्पर विरोधी होते हैं, निर्भर है। जन्म-दर देश के आर्थिक विकास के साथ जुडी हुई है। यह जनता के जीवन-स्तर व स्वास्थ्य-परिचर्या की स्थितियों, उत्पादन व सामाजिक गतिविधि मे स्त्रियो की भागीदारी की मात्रा, जनता के शैक्षणिक स्तर व युवा पीढी की शैक्षणिक अभिरुचि के अनुसार बदलती रहती है।

एक नियोजित समाजवादी अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार को बरकरार रखते हुए तकनीकी की प्रगति को द्रुतगति प्रदान करना सम्भव बनाती है। इसलिए समाजवादी समाज मे कोई भी 'निरर्थक व्यक्ति' नही है और न हो सकता है। परिणामत· समाजवादी समाज का आधारभुत स्वरूप वस्तुगत रूप मे जन्म-दर को बढाने मे प्रवृत्त होता है। साथ ही, आर्थिक विकास की बढती हुई श्रमशक्ति पर पूर्णतया निर्भर नही रहता है।

समाजवाद के अतर्गत जनता के ज्ञान, व्यावसायिक प्रशिक्षण व सस्कृति के स्तर को बढाना, वैज्ञानिक व तकनीकी क्राति के दौरान उत्पादन की क्षमता को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। सक्षेप मे, उत्पादन मे वृद्धि बढते हुए जन्म-दर की तुलना मे जनता के व्यवसायिक व सास्कृतिक विकास के लिए समाजवाद द्वारा प्रदत्त स्थितियो पर अधिक निर्भर है।

लेकिन, यहाँ एक विरोधाभास है। समाजवाद के अतर्गत पूर्ण रोजगार को अधिक जन्म-दर सुनिश्चित करना चाहिए क्योकि माँ-बाप को अपने बच्चो के भविष्य के प्रति चिंतित नही होना है। लेकिन पूर्ण रोजगार सामाजिक उत्पादन में स्त्रियों की सक्रिय भागेदारी की पूर्व कल्पना करता है और यह जन्म-दर को कम करने मे प्रवृत्त होता है। क्योकि समाजवाद के अतर्गत समाज व व्यक्ति के मूल हित समान है, अत: परिवार व समाज के जनसाख्यिकी लक्ष्य सिद्धान्तत मेल खाते हैं, इस प्रकार विरोधाभास को हटाने मे मदद मिलती है।

सोवियत संघ में जन्म दर को क्या प्रभावित करता है?

महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति के पूर्व रूस में जन्म-दर बहुत ऊंची [illegible] के प्रति 1000 में 40 से 50। इस शताब्दी के [illegible] [illegible] सोवियत काल में — देश के सामाजिक आर्थिक विकास व औद्योगीकरण में — जन्म-दर में धीरे धीरे गिरावट आयी। [illegible] द्वितीय विश्व युद्ध दौरान यह दरें में नीचे आयी और युद्ध के बाद यह [illegible] अधिक ऊंचे स्तर तक नहीं पहुंच पायी। इसके बाद से जन्म-दर 1.7% [illegible] अर्थात् [illegible] प्रति 1000 व्यक्ति में 17 बच्चे पैदा हुए। इसे [illegible] युद्धोपरान्त स्थिति के कारण थी। [illegible] के [illegible] थे। युद्ध-वर्षों के दौरान पैदा हुए बच्चे शादी की उम्र में पहुंचे परन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं थी इसलिए जन्म-दर में पर्याप्त गिरावट है [illegible] शादियों की संख्या में [illegible] गिरावट आयी।

1970 के आरम्भ के साथ फिर से वृद्धि आरम्भ हुई है। 1975 [illegible] 1000 में 18.2 का जन्म हुआ और 1980 में 18.3। रूसी, यूक्रेनी, [illegible] मोल्डाविया में काफी अधिक बच्चे पैदा हुए। दूसरी ओर, परम्परागत [illegible] एशिया व कुछ ट्रांस-काकेशियाई गणराज्यों की उच्च जन्म-दर में निरन्तर गिरावट आती रही। देश के सभी हिस्सों में आर्थिक व सामाजिक स्थिति को सुधारने [illegible] नीति, अधिक जन्म-दर वाले मध्य एशियाई गणराज्यों व अन्य क्षेत्रों में उद्योग [illegible] विकास, ग्रामीणों द्वारा 'शहरी जीवन के तौर-तरीके' को निरन्तर अपनाने [illegible] कारण परिवार नियोजन व जन्म-दर कम है।

इस पर भी ज़ोर देना चाहिए कि जन्म-दर के अलावा कितने शिशु जीवित रहते हैं, यह सोचना भी आवश्यक है। सोवियत संघ में शिशु-मृत्यु में तेज़ी से कमी हुई है। जारशाही रूस में 100 में से 27 शिशु एक वर्ष की आयु के पूर्व मर जाते थे। सोवियत काल में सारी मृत्यु-दर लगभग 3½ गुणा घट गयी और शिशु-मृत्यु 11 गुणा से ज्यादा घटी।

स्त्री व पुरुष की जीवन-आशा का औसत भी तेज़ी से बढ़ रहा है। 1897 [illegible] यह 32 वर्ष का था, 1960 में यह 70 वर्ष हो गया और आज तक इस स्तर पर कायम है।

सोवियत परिवारों में लगभग सभी पैदा हुए शिशु आज भी जीवित हैं। इस लिए जनसंख्या वृद्धि के मामले में अतीत के 5 या 7 बच्चों का जन्म आज के 2 या 3 बच्चों के बराबर है।

निरक्षरता उन्मूलन, बेहतर शिक्षा व उच्च सांस्कृतिक स्तर, पुराने रीति रिवाज और परिवार व विवाह पर धर्म के प्रभाव में क्षीणता, इन सबने परिवार नियोजन को प्रोत्साहित किया है।

इसे ध्यान में रखना चाहिए कि सोवियत संघ मे जन्म-दर को कम करने का कोई भी उपाय नहीं किया है। जैसा पहले कहा जा चुका है, समाजवादी समाज में अधिक जनसख्या का प्रश्न ही नहीं होता है। सोवियत राज्य मे माल्थस के विचार विदेशी हैं। राज्य द्वारा मातृत्व को सदैव सुरक्षित व प्रोत्साहित किया गया है।

साथ ही, राज्य परिवार नियोजन के लिए परिस्थितियाँ निर्मित करता है। गर्भ-निरोधक नि शुल्क बेचे जाते हैं और चिकित्सा संस्थानो मे गर्भपात कराने की इजाजत है। और फिर, स्त्रियों के सलाह केन्द्र उन्हे गर्भ-निरोधकों के उपयोग की सलाह देते हैं, जो परिवार को नियोजित करना चाहते है।

इस प्रकार, विवाहित जोड़े ही, हर हालत मे कितने बच्चे उन्हे चाहिए, निश्चित करते हैं। अनेक घटक (सामाजिक परिस्थितियो से उत्पन्न होने वाले उपरोक्त वर्णित के अलावा) जैसे विवाह होने की आयु, स्वास्थ्य, जीवन मूल्यो पर विचार, मजदूरी आदि, परिवार के आकार को निर्धारित करते हैं।

जनसख्या वृद्धि की प्राप्ति हेतु प्रति परिवार 3 बच्चे कम-से-कम आवश्यक हैं। प्रति परिवार 2 बच्चे से जनसख्या सतत घटेगी, क्योंकि कुछ व्यक्ति कभी भी विवाह नहीं करेंगे और कुछ जोड़े बच्चे रहित होंगे।

1979 की जनसख्या गणना के अनुसार, शून्यात सख्या मे 660 लाख परिवारों में से 420 लाख परिवारो के पास 18 वर्ष से ऊपर बच्चे हैं, एक बच्चे वाले परिवार लगभग 220 लाख, दो बच्चों वाले परिवार लगभग 135 लाख से ऊपर हैं और तीन या अधिक बच्चों वाले 70 लाख के लगभग हैं।

केन्द्रीय सांख्यिकी ब्यूरो द्वारा आयोजित सर्वेक्षण ने और देश के विभिन्न क्षेत्रो मे अनेक समाजशास्त्रीय अध्ययनो ने स्पष्ट किया है कि अनेक व्यक्ति अधिक बच्चे रखना चाहेगे। 1981 मे मास्को क्षेत्र में हुए एक जनमत संग्रह ने दर्शाया कि अधिकतर परिवार (60%) दो बच्चे चाहेंगे, 19% परिवार तीन बच्चे और 8 5% परिवार चार बच्चे चाहेंगे। स्त्रियो की तुलना मे पुरुष दूसरे, तीसरे या चौथे बच्चे को अधिक पसन्द करते हैं। जोड़ो ने स्पष्टत एक से उत्तर दिए, चाहे वे शहर मे रहें या ग्रामीण क्षेत्रो मे रह रहे हों।

1979 की जनगणना ने दर्शाया कि मास्को के निकट रह रहे बच्चों के साथ के परिवारो में लगभग 50% के पास एक बच्चा है, 20% के पास दो और 20% से थोड़े अधिक परिवारो के पास तीन हैं, जबकि शेष के चार या अधिक बच्चे हैं।

विवाहित जोड़ो की इच्छाओं व वास्तविकताओं मे अंतर का क्या कारण है?

पति व पत्नी भिन्न उत्तर देते हैं। अनेक कारण बतलाए गये हैं: समाजशास्त्रियों द्वारा आयोजित जनमत पर अधिकतर ने कहा कि एक बच्चे को सभी प्रकार की शिक्षा (सगीत, कलात्मक, विदेशी भाषाओं का ज्ञान) देना और उसे सामाजिक बनाना आसान है। उन्होंने राय जाहिर की कि अनेक बच्चों के लिए

उनके पास न ही समय है और न शक्ति। कुछ स्त्री-पुरुषों का विश्वास था।
अनेक बच्चे उनके स्वय की रुचियो हेतु आवश्यक समय को ले लेंगे। इनमे से कु
कम ने भौतिक कठिनाइयो का उदाहरण दिया।

मास्को के निकट सुकोव्स्की नगर मे सामाजिक स्वास्थ्य सस्था और स्वा
परिचर्या सगठन द्वारा 7वें दशक मे किये गये एक सर्वेक्षण ने बतलाया कि परि
की आय जितनी अधिक है, उतना अधिक अच्छा उनका जीवन-स्तर है और उ
ही कम बच्चे हैं।

यह तथ्य कि अनेक परिवार आसानी से तीन या अधिक बच्चे पाल सकं..
परन्तु उन्हे रखने से मना करते हैं, दर्शाता है कि यह आवश्यक नही है कि जीवन
स्तर की वृद्धि से अधिक जन्म-दर हो। बल्कि, अधिक आय व अधिक शैक्षणिक
स्तर वाले परिवार, विशेषकर सोवियत सघ के योरोपीय भाग व साइबेरिया के
बडे शहरो में रहने वाले परिवार, अकसर तीसरे या चौथे बच्चे के अच्छी शिक्षा
या छुट्टियो मे आनन्द मनाना पसन्द करते हैं।

समाजशास्त्रियो ने पाया है कि विशेषकर विवाहित स्त्रियाँ अधिक स्वतन्त्रता
के लिए प्रयत्नशील हैं। वे व्यवसायिक कार्य व सामाजिक गतिविधि मे अधिक
रुचि ले रही हैं।

स्वय अपने व्यक्तित्व के विकास हेतु शक्ति व समय को बचाने की स्त्रियो की
इच्छा गिरते हुए जन्म-दर का अन्य कारण है।

न सिर्फ कितने बच्चे उन्हे चाहिए बल्कि कब चाहिए विवाह के तुरन्त बाद
या काफी बाद मे, इसका भी निर्णय हर जोडा लेता है। कुछ युवा जोडे पहले पहल
के लिए जीना' पसद करते हैं। सामान्यत: पहला बच्चा विवाह के एक वर्ष पश्चात्
आता है और अतिम 3 या 4 वर्ष पश्चात्।

श्रम-शक्ति से जुडने के साथ स्त्रियो ने कम उम्र मे बच्चे पैदा करना बद कर
दिया। शहरो में वह उम्र जिसमें एक स्त्री अपना आखिरी बच्चा पैदा करे वह
36 5 से 32 7 हो गया है, और ग्रामीण क्षेत्र में 39.9 से 34.6 वर्ष हो गया है।

अधिक-से-अधिक लोग यह विश्वास करने लगे हैं कि एक शिशु परिवार इसके
मूल शैक्षणिक कार्य को सही प्रकार से पूरा करने मे असमर्थ है। एकमात्र बच्चे को
खो देने के भय से बच्चे व उसके माँ-बाप दोनों पर कुछ मनोविज्ञानी तनाव पैदा
होता है। यह इस तथ्य से कि एकमात्र बच्चा न सिर्फ प्रेम की वस्तु, बल्कि पूरे
परिवार का, माँ-बाप, दादा-दादी के अनुरागयुक्त, अनावश्यक उपासना की वस्तु भी
बन जाता है, और अधिक दुरूह हो जाता है। हर प्रकार से चापलूसी करके और
उसकी इच्छा पर अधिकार करके हर कोई बच्चे के स्नेह को जीतने का प्रयत्न
करता है। परिणामत, उसकी आँखों का तारा एक आश्रित व दब्बू या इसके वि
रीत उद्दंड या सर्वाधिकार माँग करने वाला बन जाता है।

हर प्रकार से, निम्नलिखित परिस्थितियों के कारण आने वाले वर्षों में देश की जन-सांख्यिकी परिस्थिति सुधरेगी . युवा पुरुष व स्त्रियों की संख्या में बेहतर सह-संबंध, जो सभी लड़कियों के लिए विवाह के अवसरों को बढ़ाएगी, कम उम्र में विवाह, परिणामत बच्चे पैदा करने योग्य समय में बढ़ोतरी, शिक्षा प्रणाली में और बच्चों के लालन-पालन में सुधार तथा परिवारों को बढ़ती हुई सामाजिक सहायता।

प्रत्येक वर्ष जन-शिक्षा व बच्चों की परिचर्या की प्रणाली, जिसके अन्तर्गत नर्सरी, संगीत विद्यालय, कला की कक्षाएँ, द्वितीय विदेशी भाषा (स्कूली पाठ्यक्रम के अलावा) की पढ़ाई, और खेल-कूद गुट आते हैं, बच्चों के सर्वांगिक विकास में एक वृहत्तर भूमिका निर्वाह करती है।

यह अपने बच्चों पर खर्च होने वाले माँ-बाप के समय को कम करती है ताकि वे अपनी स्वयं की नैतिक व आचारिक शिक्षा के या अपने बच्चों के साथ सिर्फ अपने खाली समय का आनन्द उठाने के योग्य हो सकें। इस पारस्परिक क्रिया से माँ-बाप को मिलने वाली सन्तुष्टि नि.सन्देह अधिक बच्चे रखने के लिए एक प्रलोभन का काम करेगी।

उच्च जन्म-दर को प्रोत्साहित करने के लिए उपायों के निर्धारण व जाँच करने में सोवियत समाज इस तथ्य से आगे बढ़ता है कि जनसंख्या के पुन उत्पादन का महज अर्थ 'बच्चों का उत्पादन' नहीं है बल्कि एक स्वस्थ, जीवंत नवीन पीढ़ी का लालन-पालन करना है।

सोवियत राज्य ने समाजवादी निर्माण की हर अवस्था में माँ और बच्चे के लिए चिन्ता की है।

परिवारों को सहायता देने, माँ व अबोध शिशुओं को सुरक्षा प्रदान करने, बच्चों के लालन-पालन व शिक्षा में और स्त्रियों व बच्चों को सामाजिक व चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करने में सोवियत उपलब्धियाँ सम्पूर्ण संसार में सर्वज्ञात हैं। शहरी व ग्रामीण मातृत्व अस्पतालों में प्रसूताओं के लिए 230,000 से अधिक शैयाएँ हैं, जो क्रांतिपूर्व समय से 30 गुणा अधिक हैं। सम्बद्ध गणराज्यों में, जो क्रांतिपूर्व पिछड़े सीमावर्ती क्षेत्र थे, यह परिवर्तन अधिक महत्त्वपूर्ण है। जैसे किरघिज़िया व तुर्कमेनिया की समूची जनसंख्या में प्रसूताओं के लिए क्रमश 12 व 13 शैयाएँ थीं, और कज़ाखस्तान के विराट क्षेत्र के निवासियों के लिए सिर्फ 29 शैयाएँ थी। अब प्रसूति-गृहों में शैयाओं की संख्या तुर्कमेनिया सो० सा० ग० में 209 गुणा, किरघिज़ सो० सा० ग० में 336 गुणा व कज़ाखस्तान में 555 गुणा बढ़ गयी है।

हृदय व रक्त संचार सम्बन्धी विकारों, यकृत समस्या, सूजन या रक्तदूषक व्याधियों और डाइबिटीज तथा अन्य व्याधियों से ग्रस्त, स्त्रियों के लिए, जिन्हें ... देने का खतरा रहता है, विशेष प्रसूति-गृह हैं।

क्रांतिपूर्व काल में समूचे देश में स्त्रियों व बच्चों के लिए सिर्फ 9 सौ [illegible] थे। आज प्रसूति के 24000 केन्द्रों में लगभग [illegible] हैं, [illegible] को प्रसव के दौरान चिकित्सा सहायता सुनिश्चित है। 1913 में [illegible] सिर्फ 5 प्र० प्रसूताओं को मिलती थी। और इस दिन से आज देश भर में सोवियत संघ में व्यापक चिकित्सा सुविधा निःशुल्क है।

प्रसूति व स्त्री रोग सम्बन्धी चिकित्सा सुविधा को विकसित व सुधारने का विराट स्तर पर काम चल रहा है। इस प्रकार की चिकित्सा व बीमारी-सुरक्षा संस्थाओं के जाल विकसित किये जा रहे हैं और अनेक डॉक्टरों, प्रसूतिका विशेषज्ञों और स्त्री-रोग विशेषज्ञों की संख्या, उनके व्यावसायिक स्तर में वृद्धि के साथ, बढ़ाई जा रही है। इस सम्बन्ध में, बच्चों के पोली-क्लीनिक, बच्चों के अस्पताल तथा चिकित्सा संस्थाओं के बाल-चिकित्सा सकायों पर क्लीनिक, बच्चों के सेनेटोरियमों, प्रसूति-गृहों व प्रसूति-स्त्रीरोग विषयक केन्द्रों के निर्माण के लिए राष्ट्रव्यापी कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक[1] के दौरान सोवियत जनों के स्वेच्छा से किये श्रम से अर्जित कोष के हस्तांतरण का पार्टी व सरकार का निर्णय अत्यन्त महत्व का है।

ग्रामीण व अस्थाई क्षेत्रों, स्वोत्र क्षेत्र व अन्य क्षेत्रों में प्रत्येक में माँ-बाप व बच्चों के लिए 500 शैयाओं वाले और उन्नत साज-सामान के नये सेनेटोरियम बनाने में इन कोषों का उपयोग विशेष रूप से किया गया।

माँ व बच्चे की सुरक्षा और प्रसूति व स्त्री रोग विषयक के लिए वैज्ञानिक शोध संस्थाओं का समूचा जाल माँओं के काम करने की परिस्थितियों के अध्ययन में व्यस्त है। इन व अन्य वैज्ञानिक संस्थाओं की सिफारिशों पर स्त्रियों के श्रम व उनके स्वास्थ्य की सुरक्षा को नियमित करने वाले विधेयकों में सुधार लाया जा रहा है।

माँ व बच्चे के स्वास्थ्य को सुरक्षित करने के लिए और परिवार व समाज की युवा पीढ़ी का लालन-पालन करने हेतु राज्य प्रति वर्ष अधिक धन निर्धारित करता है।

11वें पंचवर्षीय काल के दौरान व आने वाले वर्षों में भावी पीढ़ी के सही लालन-पालन और माँओं के जीवन को सुधारने हेतु निश्चित उपायों की नवीन प्रणाली लागू की जायेगी। क्योंकि बच्चे के लालन-पालन में परिवार की सहायता

---

1 कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक समाज की भलाई हेतु सोवियत जन द्वारा स्वेच्छा से किया, अवैतनिक श्रम, श्रम पर एक कम्युनिस्ट दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति। ये सोवियत सत्ता के आरम्भिक वर्षों में आरम्भ किये गये थे। वी० आई० लेनिन ने इनमें से एक में भाग लिया था—सम्पादक

करना सोवियत समाज के सामाजिक कार्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण अंग देखा जाता है इसलिए सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति व सोवियत संघ के मंत्रिमण्डल ने 'बच्चों वाले परिवारों को राजकीय सहायता बढ़ाने के उपाय' पर एक प्रस्ताव स्वीकार किया है। इसका लक्ष्य बच्चों की सार्वजनिक व पारिवारिक सुरक्षा के तार्किक मेल को सुनिश्चित करना है, श्रमरत माँओं की स्थिति को सुधारना है, और बच्चों वाले व बच्चों रहित परिवारों के जीवन-स्तरों में अन्तर को कम करना है।

112 दिन के सवैतनिक प्रसूति अवकाश, जो कई दशकों पूर्व आरम्भ हुआ था, के अलावा 1981 में (देश के विभिन्न क्षेत्रों में, चरणों में) एक वर्ष की आयु तक बच्चे की देखभाल के लिए आंशिक वैतनिक अवकाश देना आरम्भ हुआ। सुदूर पूर्व में, साइबेरिया में, उत्तर में और कुछ अन्य क्षेत्रों में, बच्चे के जन्म के पश्चात स्त्रियाँ 50 रूबल प्रति माह पाती हैं, देश के अन्य स्थान पर 35 रूबल प्रति माह का भत्ता मिलता है। जब तक बच्चा डेढ़ वर्ष की उम्र तक पहुँचता है, तब तक बिना वेतन के अतिरिक्त अवकाश भी दिया जाता है।

बच्चे की देखभाल के कारण अवकाश पर रह रही माँ को उसके काम की गारंटी दी जाती है। यदि वह आवश्यक समझे तो अपनी छुट्टी कम करके किसी भी समय पर अपने काम पर वापस आ सकती है। यदि बच्चे का स्वास्थ्य या परिवार की स्थिति किसी स्त्री को पहले की तरह लगनपूर्वक काम न करने दे, तब वह एक हल्का काम ले सकती है और एक समजनीय (लचीली) समय-सारिणी के अनुसार काम के छोटे सप्ताह या दिन में काम करने का या घर पर काम करने का अधिकार रखती है।

1981 से, 12 वर्ष की आयु से कम वाले दो या तीन बच्चों की माँ को तीन दिन का सवैतनिक अतिरिक्त अवकाश, गरमी के महीनों के दौरान या उसकी सुविधा के किसी भी समय के दौरान अवकाश लेने का अधिकार है।

11वें पंचवर्षीय काल में बीमार बच्चे की तीमारदारी के लिए सवैतनिक अवकाश 14 दिनों का, अर्थात् 7 दिन बढ़ जायेगा। इस अतिरिक्त 7 दिनों के लिए तनख्वाह आय की 50% होगी। एक बच्चे की माँ को राजकीय भत्ता 1981 में बढ़ाया गया था और अब तब तक दिया जायेगा जब तक बच्चा 16 वर्ष की आयु का हो (पहले यह 12 वर्ष था) या 18 वर्ष का, यदि वह स्कूली छात्र हो, जिसे छात्रवृत्ति नहीं मिलती हो।

माँ को अपने पहले शिशु के जन्म पर 50 रूबल, दूसरे या तीसरे बच्चे के जन्म पर 100 रूबल मिलते हैं। पाँच या अधिक बच्चों या अपंग बच्चे की माँ को, जिसने अनिवार्य समय तक काम नहीं किया हो, वृद्धावस्था पेंशन[1] में अतिरिक्त

1. सोवियत संघ में पेंशन आयु स्त्रियों की 55 और पुरुषों की 60 है—सम्पादक

सुविधाएँ आरम्भ की गयी है।

भावी जनसांख्यिक परिस्थिति को भावी बच्चों के लालन-पालन के साथ सही प्रकार से जोड़ने में सफल स्त्रियों को योग्य बनाने वाली परिस्थितियों के निर्माण हेतु विभिन्न उपायों के समूचे समुच्चय की कार्यान्विति बच्चों वाले 40 लाख 50 हजार से ज्यादा परिवारों की भौतिक स्थिति को सुधारेगी।

राज्य के बजट से बच्चों वाले परिवारों को राजकीय सहायता बढ़ाने के लिए करीबन 100 अरब रूबल के निर्धारण का प्रस्ताव किया गया है। परन्तु सोवियत स्त्रियों के जीवन को, और परिणामतः समूचे सोवियत परिवार को सुधारने के एक दुरूह कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु राज्य द्वारा प्रदत्त कोष का सिर्फ एक हिस्सा ही है।

'बच्चों वाले परिवार की राजकीय सहायता की वृद्धि के उपाय' द्वारा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सोवियत संघ के मंत्रि-मण्डल का प्रस्ताव निम्नलिखित की भी परिकल्पना करता है :

—विद्यालय पूर्व संस्थाओं, प्रवर्धित-दिन स्कूल व समूह तथा युवा पायोनियर कैम्पों में जाल का द्रुत प्रसारण,

—इन संस्थाओं में चिकित्सा-नर्सों के काम की स्थितियों का सुधार;

—स्कूल-पूर्व संस्थाओं में भोजन के लिए अधिक व्यय,

—बच्चों वाले परिवार व नवविवाहितों को राजकीय आवास की प्राप्ति और व्यक्तिगत सहकारी गृहों के निर्माण में अतिरिक्त सुविधाएँ;

—बच्चों के सामानों पर कम राजकीय खुदरा मूल्य की नीति को बरकरार रखना,

—व्यापार, सार्वजनिक सेवाओं व सेवा-संस्थानों के कार्य का सुधार;

—युवा पायोनियर कैम्पों के व्यय-पत्रों हेतु भुगतान में अधिक सुविधाएँ, परिवार के अवकाश हेतु बोर्डिंग-गृहों व अन्य स्वास्थ्य परिचर्या संस्थानों के जाल का प्रसारण,

—जन-सांख्यिकी, पारिवारिक जीवन, वैवाहिक संबंधों, बच्चों की परिचर्या, स्वास्थ्य सुरक्षा, जनता के आराम व अवकाश का आयोजन जैसे विषयों पर साहित्य के प्रकाशन में वृद्धि और युवा पीढ़ी में शैक्षणिक कार्य को बढ़ाना।

11वीं पंचवर्षीय काल में विराट सामाजिक कार्यक्रम के लागू होने के साथ अधिकांश लक्ष्य प्राप्त हो जाएँगे।

सोवियत राज्य की ज़ ... न या चार बच्चों वाले मध्यम-आकार के परिवार के चारों ... माजिक वातावरण' निर्मित करने की ओर अग्रसर है। सोवियत संघ में बड़े परिवार को काफी आदर से देखा जाता

है। जिन माँओं ने 10 बच्चों को जन्म दिया व पाला-पोसा है, उन्हें सम्मानजनक पदवी व हीरोइन माँ का आर्डर मिला है (1944 से 1979 तक 304 000 स्त्रियों को यह आर्डर मिला है)। जिन माँओं ने सात से नौ बच्चों का पालन किया है, उनके लिए मातृत्वश्री का आर्डर रखा गया है (26 लाख प्राप्तकर्त्री)। पाँच या छह बच्चों वाली माँ को मातृत्व-पदक (98 लाख प्राप्तकर्त्री) पाती है। ऐसी स्त्रियाँ, जिन्होंने पाँच या अधिक बच्चों को जन्म दिया और आठ वर्ष की आयु तक पाला-पोसा है उन्हें 50 वर्ष की आयु तक सेवा-निवृत्त होने का अधिकार है, यदि उन्होंने कम-से-कम पाँच वर्षों तक काम किया हो।

नर्सरी व किंडरगार्टेन, युवा पायोनियर कैम्पों व प्रवर्धित-दिन समूहों में उनके बच्चों के लिए जगह के लिए भुगतान बड़े परिवारों हेतु 50% कम है और कुछ परिवार, उनकी आय के मुताबिक भुगतान से पूर्णतया मुक्त हैं।

हम यह पाते हैं कि जन्म-दर को प्रोत्साहित करने में भौतिक घटकों के महत्त्व को घटाये बिना महज आर्थिक उपाय स्वयमेव पारिवारिक समस्याओं को सुलझा नहीं सकते हैं। युवजन की भौतिक व आध्यात्मिक आवश्यकताओं को प्रदान करने वाली समूची प्रणाली का निर्माण युवा जोड़ों की नजरों में अनेक बच्चों वाले परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए हुआ है, कि अपने पर्याप्त सामाजिक मूल्य के अलावा ऐसा परिवार अत्यधिक मानवीय सन्तोष प्रदान करता है इस पर माँ-बाप को विश्वास दिलाने के लिए हुआ है।

सुरक्षा का अधिकार, आवास, भोजन, चिकित्सा परिचर्या और मनोरंजन का अधिकार। सोवियत संघ में प्रत्येक बच्चे को उसके भौतिक व मानसिक विकास के लिए अनुकूल स्थितियाँ प्रदान की जाती हैं।

बच्चों के सर्वांगिक समरूप विकास के लिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे स्वस्थ व शिक्षित, उद्यमी व ईमानदार, अच्छे आचरण वाले हँसमुख, संक्षेप में सुखी हों, परिस्थितियों के बनाने में सोवियत राज्य हरसम्भव काम करता है। सोवियत लड़के व लड़कियों को बेरोजगारी, बॉस द्वारा निरादर, विधिहीनता, और अन्याय के भय की जरूरत नहीं होती है। उन्हें अपने भविष्य पर विश्वास है। समाजवादी समाज एक संगठित मानव व्यक्तित्व के आदर्श की ओर युवा पीढ़ी के विकास को प्रोन्नत करता है, जो हर प्रकार से विकसित है और अपनी अभिव्यक्तियों में मानवीय है।

बच्चे के व्यक्तित्व का समरूप विकास स्कूल, परिवार और समाज द्वारा सम्मिलित गतिविधि का परिणाम है। सोवियत संघ में शिक्षण-शास्त्रीय विज्ञान सार्वजनिक शिक्षा व पारिवारिक लालन-पालन को संगठित करने का प्रयत्न करता है।

पारिवारिक लालन-पालन व सार्वजनिक शिक्षा की प्रणाली, जो अपने में एक सम्पूर्ण है, मानवता, सामूहिकवाद, व्यक्ति विशेष के लिए आदर और अन्य उच्च नैतिक सिद्धांत जो सार्वभौम व समाजवादी हैं, पर आधारित है।

सोवियत संघ में समाजवादी जीवन-पद्धति, इसका नैतिक वातावरण युवजन में गरिमा व आत्म-विश्वास की उच्च भावना के साथ जनता के लिए गहरा आदर, जो न सिर्फ अपने स्वय के देश के नागरिकों के लिए हो बल्कि उन सबके लिए भी हो जो नैतिक व प्रगतिशील आदर्शों को अपनाते हैं, जैसे श्रेष्ठ गुणों को विकसित करने में मदद करता है। देश में महत्त्वपूर्ण घटनाएँ भी एक शैक्षणिक प्रभाव डालती हैं, इन घटनाओं का प्रभाव युवाओं पर श्रम सामूहिक, स्कूल की कक्षाओं और परिवार में दिखता है।

समस्त शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षा और लालन-पालन की प्रक्रियाएँ एकमात्र पूर्ण होती हैं। बच्चों व किशोरों के लिए ग्रीष्मकालीन मनोरंजन मजा व शिक्षा दोनों हैं, क्योंकि युवा पायोनियर और स्पोर्ट क्लब में, पर्यटक आधारों व ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा में बच्चे और बड़े, लड़के व लड़कियाँ न सिर्फ आवश्यक भौतिक व्यायाम में सम्मत होते हैं, बल्कि प्रकृति को समझते व प्रशंसा करते हैं, पुरानी पीढ़ी के कामों से परिचित होते हैं, और अपनी मातृभूमि में गर्व व देशभक्ति की उच्च भावना में विकसित होते हैं।

और, वास्तव में परिवार, जहाँ अध्ययन, काम, मनोरंजन व पालन-पोषण सब कुछ मिला-जुला है, बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में अत्यन्त आवश्यक भूमिका

अदा करता है। यह परिवार है जिसमें बच्चे मोटे तौर पर समुदाय में रहने की आवश्यकताएँ सीखते हैं। वे जीवन के सिद्धांतों को इन लोगों से सीखते हैं जिन्हें वे सबसे अधिक प्यार व आदर करते हैं। परिवार बच्चे के भावी स्वतंत्र जीवन के लिए आधार बनाता है। यह उसके चरित्र, रुचियों, भावनाओं व आदर्शों को आकार देता है। बच्चे के विकास की आरम्भिक अवस्था में परिवार का लालन-पालन विशेष रूप में महत्त्वपूर्ण होता है। इस काल के दौरान अपने माँ व बाप और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अपने सम्पर्क से वह स्वयं और अपने आसपास के वातावरण के बारे में जानना सीखता है। शीघ्र ही बच्चा अपने चारों ओर के संसार से अधिक सम्पर्क करता है और सार्वजनिक शिशु-परिचर्या संस्थाएँ अपना प्रभाव डालना आरम्भ करती हैं। शिक्षकों व समकक्षों के सामूहिक बच्चे के चरित्र के निर्माण में सहायता देंगे। अन्य संस्थाओं के शैक्षणिक प्रभाव पर एक किशोर किस प्रकार प्रतिक्रिया जाहिर करता है इसका निर्धारण परिवार में निर्मित नैतिक सिद्धांत करते हैं।

माँ-बाप और दादा-दादी अपनी जीवन-पद्धति से और कुछ नैतिक सिद्धांतों, विचारों व श्रम आदतों को उनमें पोषित करने के उद्यम से बच्चों को प्रभावित करते हैं। इस प्रभाव की प्रकृति अधिकतर माँ-बाप के नैतिक और विशेषकर वैचारिक विकास पर तथा जनता के साथ परिवार के हित कितने निकट से जुड़े हैं, इस पर निर्भर करती है। इस मामले में, शैक्षणिक तरीकों, बच्चों के विकास की मनोविज्ञानी विशिष्टता का माँ-बाप को ज्ञान और जनता के प्रभाव के साथ सुर परिवार के प्रभाव को संयुक्त करने की उनकी क्षमता महत्त्वपूर्ण घटक है।

बच्चे की गतिविधि भी उसके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्त्वपूर्ण है। पारिवारिक प्रभाव का शैक्षणिक प्रभाव तब अधिक होता है जब बच्चा पारिवारिक जीवन में एक सक्रिय भूमिका अदा करता है। बच्चे के लालन-पालन के लिए अत्यन्त अनुकूल परिस्थितियाँ उन परिवारों में निर्मित होती हैं जिनमें समाजवादी जीवन-पद्धति के सिद्धांतों का अनुसरण होता है।

ऐसे परिवारों में माँ-बाप अक्सर विवेकपूर्वक अपने व्यवसाय में लगे रहते हैं और सार्वजनिक गतिविधि में भाग लेते हैं। घरेलू कामकाज और पारिवारिक दायित्व पारिवारिक सदस्यों में सही ढंग से वितरित होते हैं और सांस्कृतिक विकास के लिए खाली समय का उपयोग होता है। माँ और पिता तथा माँ-बाप व बच्चों के सम्बन्धों में प्रेम, परस्पर आदर, सहानुभूति, संवेदनशीलता इन परिवारों के वातावरण को निर्धारित करती है। संक्षेप में, यह एक ऐसा परिवार है जिसने वयस्कों व बच्चों दोनों के लिए सुन्दर व सुखी जीवन के निर्माण के लिए समाजवाद के साथ का अच्छा उपयोग किया है।

जैसा ऊपर कहा गया है, सोवियत जन का जीवन-स्तर प्रतिवर्ष सुधर रहा है।

। बच्चे व जवान अपनी क्षमताओं को विकसित करने के बेहतर अवसर पाते हैं
: अपने माँ और पिता की तुलना मे अधिक शिक्षा पाते हैं, पिछली पीढ़ियो की
बात ही छोड़िए।

परन्तु इन अवसरो के अधिकतम उपयोग कराने मे बच्चों के लिए स्थितियाँ
न करने मे माँ-बाप कभी-कभी बच्चो को घर का काम न देने की भूल कर जाते

लेकिन घर के काम मे मदद करना, खुद का काम करना, जानवरो व पेड़-
ो की देखभाल करना और अन्य गतिविधियाँ बच्चे में व्यवहारिक दक्षता को
ती हैं और काम करने की आदतो को प्रोत्साहित करती हैं। अपने श्रम की उप-
गता पर जागरूकता बच्चो को सन्तोष देती हैं और वे स्वय नये कामो को
च्छा से करने की एक नियमित गतिविधि बनाते हैं, यही जीवन को रुचिकर
ाता है।

अनेक परिवारो मे बच्चे परिवार के बजट की ओर किस प्रकार से पैसा खर्च
ा जाता है, जानते हैं और यह उनके माँ-बाप के विवेकपूर्ण काम पर आधारित
।

दो बच्चों (दस वर्षीय बेटा और छ -वर्षीय बेटी) की माँ ने एक समाजशास्त्री
बतलाया कि बेटा पहले से ही परिवार के 'आर्थिक समिति' का एक सदस्य है
म साथ-साथ निर्णय लेते हैं कि अगली तनख्वाह के दिन क्या खरीदेंगे। मेरा बेटा
झता है कि यदि हम उसे किसी चीज़ के लिए मना करते हैं तब इसका अर्थ है
' उस वक्त इसे नही खरीद सकते हैं।"

पाँच बच्चो की माँ ने कहा : "हम अकसर इस तरह करते हैं वेतन के दिन
पहले हम बच्चों से पूछते हैं कि उन्हे क्या चाहिए और फिर हम उनकी जरूरतो

[illegible] बच्चों के काम के लिए [illegible] और [illegible] कई [illegible] हो गये हैं। [illegible] अपनी [illegible] के [illegible] को [illegible] रहे हैं और [illegible] काम कर रहे हैं। [illegible] बच्चों में [illegible] के प्रति, जो उन्हें [illegible] महत्वपूर्ण हो रहा है, [illegible] का प्रयास करते हैं।

और यह आश्चर्य नहीं है कि समाजवादी समाज में अक्सर [illegible] मिलता है। यह शब्द [illegible] के रूप में [illegible] या राजा के परिवार के लिए [illegible] होता है। यह [illegible] में भी प्रयुक्त होता है जहाँ [illegible] स्थायी है पर एक भिन्न अर्थ में। इसका अर्थ शासन करने का उत्तराधिकार नहीं है बल्कि पिता द्वारा अपने बच्चों को अपने व्यवसाय व कौशल को सिखाना है। अक्सर समूचा परिवार अर्थात् माँ-बाप व वयस्क बच्चे एक ही क्षेत्र यथा शिक्षा या स्वास्थ्य परिचर्या, विज्ञान या कला में काम करता है। धातु क्षेत्र कर्मियों, पशु उगाने वालों, डॉक्टरों, शिक्षकों आदि के वंश हैं। हालांकि एक ही क्षेत्र में काम करते हुए विभिन्न परिवार के सदस्य जरूरी नहीं है कि एक ही कार्य समूह में हों। एक परिवार में दादा धातुशोधन का इंजीनियर और बेटा इस क्षेत्र का विद्वान हो सकता है। माँ-बाप के श्रम सामूहिक के साथ परिवार के घनिष्ठ सम्पर्क के कारण अक्सर बच्चे अपने माँ व पिता के व्यवसायों को चुनते हैं।

ऐसे भी परिवार है जो पीढ़ियों से फ़ैक्टरी में काम कर रहे हैं। श्रमिक वर्ग का अनुभव व कौशल, उच्च नैतिक गुण जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रेषित होता है, युवजनों को जो सामूहिक में शामिल होते हैं, प्रभावित करता है। अपने काम के प्रति प्रेम, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रेषित होता है, परिवार व सामूहिक के लिए विशेष गर्व की बात है। यदि कोई व्यक्ति इस बात पर गर्व करे कि उसके परिवार में कोई भी निठल्ला नहीं है, कि उनमें से हरेक अपने काम में माहिर है, कि उसके दादा और पिता दोनों फैक्टरी के श्रेष्ठ कामगार रहे, तब यह स्वाभाविक है कि वह परिवार के सम्मान को बनाए रखना चाहेगा।

जब समाजवादी श्रम की हीरो और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं कांग्रेस की प्रतिनिधि ल्युद्मिला र्याज़नोवा अपनी माँ एलेक्जेंड्रा लियोन्त्येव्ना के बारे में कहती हैं, अपने काम के लिए उसके भावावेश, जहाँ तक सम्भव हो हर चीज के लिए उसकी ललक के बारे में बतलाती हैं तब उसका गर्व स्वाभाविक है। ल्युद्मिला ने अपनी माँ से बहुत कुछ सीखा, बचपन से ही काम के प्रति लगाव और व्यक्ति को इससे कितनी सन्तुष्टि मिलती है इस विचार को समझा जाना। अब इस परिवार में एक नयी पीढ़ी पहले से ही बढ़ गयी है। ल्युद्मिला की पुत्री नताशा अपने जन्म-स्थान इवान्टेयेव्का में डॉक्टर बन गयी है। एक प्रसिद्ध परिवार का नाम रखना गर्व के स्रोत के साथ-साथ अत्यधिक उत्तरदायित्व है।

आज उरालमाश प्लाट में एक हजार सात सौ श्रमिक वश है। इसका अर्थ विभिन्न व्यवसायो व विभिन्न पीढ़ियो के आठ हजार से अधिक श्रमिक न रक्त व पारिवारिक सम्बन्ध से बल्कि समान लक्ष्य व समान उद्देश्य से साथ-बँधे हुए है।

येव्गेनी मोर्बुनोव पीसने की मशीन के ऑपरेटरों के वश के प्रमुख हैं। उसने उसकी पत्नी लीडिया ने, जो प्लाट पर काम भी करती है, पाँच बेटों व एक को पाला-पोसा और श्रमिको के सामूहिक को 'सौंपा', बेटे अपने पिता का करते हैं और बेटी प्लाट की प्रयोगशाला मे काम करती है।

सोवियत परिवार पारिवारिक सदस्यो व अन्यो के सदर्भ मे नैतिकता व न्याय भावना के महत्त्व पर जोर देते हैं।

कम्युनिज्म के ध्येय पर स्वामिभक्ति, समाजवादी मातृभूमि के लिए प्रेम, ज की भलाई के लिए विवेकपूर्ण कार्य, सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा व वृद्धि जनता के सामने नहीं हैं बल्कि ये प्रत्येक सोवियत नागरिक की व्यक्तिगत ता के सामने हैं। और परिवार बच्चों को इन सिद्धातो को लागू करने मे, समाज भलाई के लिए काम मे भाग लेने मे प्रोत्साहित करता है। अपने बचपन से ही युवक यह सीखता है पुराने अखबार या धातु की एक पुरानी वस्तु जैसी छोटी जें भी एकत्रित की जा सकती हैं और अपने कक्षा के साथियो के साथ इकट्ठा ये गये अखबारो के ढेर और रद्दी धातु के कई किलोग्राम का उपयोग राष्ट्रीय व्यवस्था मे हो सकता है। ऐसे युवक, जो इस प्रकार की रद्दी के 'शिकार' मे ते हैं, का हर फ्लैट मे स्वागत होता है और अक्सर वे ढेरो रद्दी कागज आदि ते हैं। कुछ उपयोगी करने की युवको की ललक को सहायता देने के महत्त्व को ग समझते हैं। बच्चे बुड्ढों की मदद करते हैं, पर्यावरण की सुरक्षा मे भाग लेते चिकित्सा में काम आने वाले जड़ी-बूटी व पौधों को एकत्रित करते हैं। किशोर ाल के रेंजर को जगलों की सुरक्षा व पुन स्थापना मे, अपक्षारित ढलानों व ाइयों पर ओक, मैपिल और बबूल के पौधों के बीज, कलम लगाकर, सुरक्षा बाड़ ाकर, आग से जगल को बचाकर मदद करते हैं। कई युवक आविष्कार करने प्रयास करते हैं। युवा आविष्कारकों के लिए प्रतियोगिता, जो पाइयोनेर्स्कया ख्वा समाचारपत्र द्वारा नियमित रूप मे आयोजित होती हैं, का आदर्श वाक्य निर्माण, खोज, प्रयत्न' है। हम अनेक उपयोगी और आकर्षक गतिविधियों का दाहरण दे सकते हैं, जो बच्चो व किशोरों मे नागरिक कर्त्तव्य की उच्च भावना विकास मे मदद देती हैं।

युवा पायोनियरों व स्कूली छात्रो में सोवियत देशभक्ति, क्रांति और समाज-वाद के प्रति स्वामिभक्ति की भावना मे शिक्षित करने मे मदद देती, मातृभूमि प्रेम के लिए उनमें प्रेम को प्रोत्साहित करना व उच्च नैतिक ...

[illegible]
है। युवा पायोनियर बच्चों को [illegible] ... [illegible]
[illegible]
[illegible] 'अंतर्राष्ट्रीय' [illegible]—[illegible]
युवा पायोनियर संगठन में 14 वर्ष की उम्र के [illegible]
1922 में यह दल बनाया गया था, 15 [illegible]
[illegible] 1924 में संगठन का नाम वी॰ आई॰ लेनिन पर रखा गया [illegible]
[illegible] में युवा लेनिनवादियों ने [illegible] को नया जीवन [illegible]
में [illegible] उन्होंने लोगों को लिखना-पढ़ना सिखाया, उस दल ने [illegible]
के लिए [illegible] उन्होंने [illegible] पर काम करके [illegible]
और अस्पतालों व गांवों के लिए पुस्तकालयों की स्थापना की।

महान सोवियत लेखक मैक्सिम गोर्की ने युवा पायोनियरों को लि[illegible]
"तुम भावी स्वर्ग के जीवन में उतने ही मजबूर व योग्य स्वामी बन रहे हो जि[illegible]
वर्ग-विहीन समाजवादी समाज के निर्माता हैं तुम्हारे तेजी से हो रहे विकास [illegible]
सिर्फ इस तथ्य द्वारा समझाया जा सकता है कि तुम न सिर्फ स्कूल में बल्कि [illegible]
पिता, माँ, बड़े भाई व बहिन के प्रतिदिन के मेहनतकश जीवन में रहना सीख र[illegible]
हो ..."

आज युवा पायोनियर संगठन अपने सदस्यों को स्कूल में प्राप्त ज्ञान को आत्मसात करते हुए, रचनात्मक कार्य के लिए तैयार होते हुए और अपने खाली समय को उपयोगी गतिविधियों में लगाते हुए देखना चाहता है।

देश में युवकों में रचनात्मकता व पहल लेने की प्रवृत्ति के विकास को मदद हेतु और उनके स्वस्थ आमोद-प्रमोद को सुनिश्चित करने हेतु बच्चों की अतिरिक्त स्कूल संस्थाएँ स्थापित की गयी हैं; करीबन 40 लाख युवा पायोनियर महलों व गृहों, युवा प्रविधिज्ञों व युवा प्रकृतिवादियों के लगभग एक हजार संगठन, इतने ही घूमने वालों के आधार, और 30 लाख के आस-पास बच्चों के स्पोर्ट स्कूलों की स्थापना की गयी है। पाठ्य-पुस्तकों के अलावा, बच्चों के लिए 20 करोड़ से अधिक पुस्तकों की प्रतियाँ प्रति वर्ष प्रकाशित होती हैं। बच्चों की पत्रिकाएँ व समाचार-पत्र भी छापे जाते हैं। पाइयोनेर्स्काया प्राव्दा की खपत 90 से 100 लाख की है।

चार वर्षों तक बच्चे लाल रंग की युवा पायोनियर टाई पहनते हैं। बुजुर्ग कामरेड फिर इनमें से श्रेष्ठ को कोम्सोमोल—अखिल-संघीय लेनिन युवा कम्युनिस्ट लीग—के सदस्य बनने का प्रस्ताव करते हैं।

कोम्सोमोल की स्थापना 1918 में हुई।
युवा कम्युनिस्ट लीग ने [illegible]

ओं का सदैव पालन करने तथा कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति स्वामिभक्त होने व
रने की शपथ ली।

ोमसोमोल का प्रमुख कार्य युवाओं को कम्युनिस्ट विचारों, देशभक्ति व
ष्ट्रवाद की भावना में शिक्षित करना, हर युवजन को नये समाज के एक
निर्माता बनाने का प्रयत्न करना और युवा पायोनियर सगठन को निर्देशित
है।

स काम में कोमसोमोल और परिवार कंधे-से-कंधा मिलाकर काम करता

र सोवियत माँ-बाप अपने बच्चे को ईमानदार, शालीन, दम्भहीन और
, आलस्य व लोभ के कट्टर विरोधी के रूप में बड़ा होता हुआ देखना चाहते
अपने बच्चों के मनोहर व्यक्तित्व वाला बनते हुआ भी देखना चाहते हैं।
निर्णय इस बात से होगा कि उनके साथ सम्बन्ध रखकर अन्य लोग खुश
ा नाखुश होंगे और क्या वे अन्य के साथ सम्बन्ध करके खुश होते हैं।

क वैचारिक पारिवारिक जीवन के वातावरण का स्थान कोई और नहीं
ता है। माँ और पिता अपने बच्चों के बारे में क्या बात करते हैं, वे अपने
समय पर कहाँ जाते हैं, वे उनके लिए कौन-सी पुस्तकें पढ़ते हैं, क्या विचार-
करते हैं, किन प्रश्नों के वे उत्तर देते हैं और कैसे देते हैं—यह सब कुछ माँ-
ा अपने बच्चों पर प्रभाव को निर्धारित करता है और इस प्रभाव का परि-
च्चों में विकसित होने वाली रुचियों में दिखता है।

ास्को के निकट कई स्थानों पर किये गये समाजशास्त्रीय अध्ययनों ने स्पष्ट
कि 60% परिवारों में बच्चों के लालन-पालन व परिचर्या का दायित्व पति
त्नी के मध्य समान रूप में बँटा हुआ है। फिर माँ-बाप और बच्चों के मध्य
क आदान-प्रदान की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इन परिवारों में 50% से अधिक
प अपने बच्चों के साथ अपने व्यवसाय व सामाजिक कार्य के बारे में, 60%
ताब वे पढ़ते हैं, जो फिल्म या नाटक वे देखते हैं उसके बारे में और 70%
ारिक मामलों पर विचार-विमर्श करते हैं।

स्त्रियों की बदलती सामाजिक स्थिति—उनकी स्वतंत्रता व पुरुषों के साथ
री परिवार में नैतिक वातावरण सुधारती है और इसके शैक्षणिक कार्यों में
करती है। सिर्फ स्त्री की सामाजिक-राजनीतिक व श्रम की गतिविधि और
ी आर्थिक स्वतन्त्रता ही उसके विकास व उसकी क्षमताओं की पूर्ति को प्रोत्सा-
कर सकती है। और बच्चों पर इसका लाभदायक प्रभाव पड़ता है।

बच्चों के लालन-पालन के भार के कुछ भाग से स्त्री को मुक्त करके समाज
अपने आध्यात्मिक विकास के लिए अधिक समय लगाने का एक अवसर प्रदान
ा है। यह परिवार के लालन-पालन के गुण की वृद्धि करता है। सोवियत

स्त्रियों को शिक्षा व विकास का अवसर बच्चों के लालन-पालन के
निभाने में उन्हें मदद करता है। एक अच्छी पढ़ी-लिखी स्त्री अपने बच्चे
समझाने लायक होती है। और ऐसी स्त्री जो जीवन में सन्तुष्ट है एक
वारिक वातावरण को निर्मित करने में, जो बच्चों के विकास के लिए
महत्त्वपूर्ण है, अधिक सहायक हो सकती है।

बच्चे के विकास हेतु यह आवश्यक है कि माँ शारीरिक व आध्या
में अपने बेटे या बेटी के नजदीक रहे, अपने बच्चों को नैतिक मूल्यों
विचारों को दे। लेकिन पिता की सत्ता और बच्चे के लालन-पालन में
का भी महत्त्व काफी अधिक होता है। हालांकि, समाजशास्त्रियों ने
किया है कि बच्चों के लालन-पालन में पिता कम समय खर्च करते हैं
भागीदारी कम परिवर्तित होती है। स्कूल व घर दोनों स्थानों पर स्त्री
करती हैं – घर पर माँ या दादी, किन्डरगार्टेन व स्कूलों में स्त्री शि
यह किशोर के चरित्र के निर्माण पर अपना प्रभाव रखता है।

सोवियत परिवार का अनुभव दर्शाता है कि माँ और पिता की सत्ता
या पिता—स्त्री या पुरुष—होने के कारण नहीं होती है बल्कि जिस प्र
बच्चों पर वे क्या प्रभाव डालते हैं, अपने बच्चों पर वे किन नैतिक
पोषित करते हैं इस पर निर्भर करती है।

वर्तमान में बच्चे का लालन-पालन अधिक कठिन है। बढ़ते हुए सू
(रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि) ने संसार में होने वाली घटनाओं
लोगों को सीखने के लिए एक अवसर का निर्माण करके, पढ़ने व पढ़ाने
के विश्व दृष्टिकोण को महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ाकर परिवार के क्षितिज को
दिया है।

सोवियत जन का उच्च शैक्षणिक स्तर बच्चों के लालन-पालन के लि
विशेष ज्ञान व कौशल को प्राप्त करने हेतु एक पर्याप्त आधार प्रदान
समाजवादी समाज माँ-बाप को इन कौशल को सिखाने का प्रयत्न करता
दिशा में स्त्रियों व बच्चों के सुझाव केन्द्रों, स्कूलों, वैज्ञानिक संस्थाओं व
स्कूलों पर काफी काम किया जा रहा है। स्त्रियों के सुझाव केन्द्रों में 'भा
के लिए स्कूलों' की स्थापना की जा रही है। स्वास्थ्य विश्वविद्यालय, पा
सम्बन्ध सभाएं, बाल शिक्षण विश्वविद्यालय व भाषण-कक्ष संस्थानों,
स्कूलों पर आयोजित किए जाते हैं, जो हरेक की पहुँच में हैं। सार्वजनिक
लय माँ-बाप को शिक्षण, चिकित्सा व मनोविज्ञान पर लोकप्रिय साहित्य के
चुनाव को प्रदान करते हैं।

पत्रिकाएँ, जो देश के चारों ओर विस्तृत रूप में प्रसारित होती हैं, और विशेष टेलीविज़न और रेडियो कार्यक्रम होते हैं। लेकिन हमारा यह आशय नहीं है कि बच्चों के लालन-पालन की प्रक्रिया सभी परिवारों में समान है। इसके विपरीत, शिक्षित परिवार बाल-शिक्षण के रोचक परीक्षण करते हैं और कभी-कभी आश्चर्य-जनक खोज कर बैठते हैं।

निकितिन परिवार (पिता शिक्षक है, माँ पुस्तकालयाध्यक्षिका है) मास्को के निकट बोल्शेवो बस्ती में एक बड़े लकड़ी के घर में रहता है। सारे देश से इस युगल के पास पत्र व मेहमान आते हैं, क्योंकि इस आश्चर्यजनक परिवार के बारे में अकसर समाचार-पत्रों में लिखा जाता है। इसका कारण यह है कि बोरिस व लेना ने अपने सात बच्चों के लालन-पालन में आधारभूत रूप में नये तरीके अपनाए हैं। सबसे पहले, प्रत्यक्ष, बच्चे के पहले दिन से ही वे उस गतिविधि को प्रोत्साहित करते हैं जो बच्चे को भौतिक व मानसिक क्षमताओं के पूर्ण विकास की ओर ले जाती है।

निकितिन परिवार में बहुत कुछ आश्चर्यजनक है। दूसरे बच्चे गर्मी में जूते व धूप की टोपी पहनते हैं, जबकि उनके बच्चे नंगे पाँव व नंगे सिर जाते हैं और शीत-काल में भी कोई खास अन्तर नहीं होता है बच्चे नंगे पाँव बर्फ में दौड़ने से डरते नहीं हैं। घर में हॉरिजॉन्टल बार, गोले, रस्सियाँ, सीढ़ियाँ हैं, कुर्सियाँ व हत्थेदार कुर्सियाँ 'महलों' व 'अंतरिक्ष यान' के निर्माण के लिए उपयोग में लायी जाती हैं। छत के नीचे एक 'घोंसला' है जिसे पुराने कैम्प की खाट से बनाया गया है।

जन्म के पश्चात ही बच्चे से व्यायाम कराया जाता है। सबसे पहले लेना नव-जात शिशु की हर मुट्ठी में अपनी उँगली रखती है और अपनी ओर खींचती है, या, बच्चे के सिर को अपने कंधे पर रखकर उसे अपनी हथेली पर रखती है। तीन महीनों में बड़ों की उँगलियों को पकड़ कर नवजात शिशु हवा पर लटकना शुरू कर देता है। बच्चे को इसमें काफी आनन्द आता है और वह ऐसा अधिक बार करने की माँग करता है। तब बोरिस बिस्तरे पर एक लकड़ी की छड़ी को जोड़ देता है ताकि बच्चा इस तक पहुँच सके। इस प्रकार तीन माहों में वह एक 'हॉरिजॉन्टल बार' का उपयोग करने लगता है। माँ-बाप बच्चों के शारीरिक विकास का एक विस्तृत चार्ट बनाते हैं जिसमें उनके प्रत्येक चरण और उनकी सभी उपलब्धियों का ब्योरा होता है।

वे बच्चों को डेढ़ से दो वर्ष की आयु से पढ़ना सिखाना आरम्भ करते हैं। जन्म से ही बच्चा न सिर्फ खिलौनों से बल्कि अक्षरों व चित्रों से लिखे घनों (क्यूब्स) से घिरा रहता है, दीवाल पर वर्णमाला, श्याम-पट्ट टँगे रहते हैं, साथ में चॉक, पेन्सिल कागज़, रंग रहते हैं। अक्षर व चित्र बच्चों के जीवन का एक अंग बन जाते हैं। सामान्यतः वे तीन या चार वर्ष की उम्र में पढ़ना आरम्भ कर देते हैं। और एक चार वर्ष की आयु के बच्चे को मोटी किताब पढ़ते हुए देखना, या एक पाँच वर्ष की

आयु के बच्चे का मेन्डेलेयेव की गारनी का अध्ययन करना परिवार के लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं समझी जाती है।

परिवार के गैर-रूढ़ियानुगामी तरीकों के अच्छे परिणाम निकले: उनके अन्तोन ने 13 वर्ष की उम्र में माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई गणित में, विशिष्ट अपनाते हुए, पूरी की, और लगभग सभी बच्चे स्वतन्त्र जीवन जी रहे हैं। सबसे बड़े लड़के अलेक्सी ने लेनिन राज्य बाल-शिक्षा संस्था की भौतिकी शाखा से स्नातक करके विवाह किया। उसकी अब एक लड़की, निकितिन परिवार की पहली पोती, हुई है। ओल्गा ने भी विवाह कर लिया, पर माँ बनने की जल्दी नहीं है। उसने मास्को विश्वविद्यालय के विधि संकाय में प्रवेश लिया है और अपना समय अध्ययन में लगाना चाहती है। बच्चे सामान्यत: सभी विषयों में उत्तम अंक पाते हैं। अन्ना ने सर्वोत्तम अंक के साथ नर्सिंग स्कूल में स्नातक किया है। वह आसानी से विश्वविद्यालय में प्रवेश पा सकती थी, परन्तु उसने सबसे पहले काम पर खुद की जाँच करनी चाही। वह मोरोशोव के बच्चों के अस्पताल में एक चिकित्सा नर्स है। युल्या ने भी पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए एक तकनीकी स्कूल से सर्वोत्तम अंक लाकर पढ़ाई पूरी की, और हालाँकि वह अपने अध्ययनों को जारी रखने के पूर्व काम करना चाहती है लेकिन उसे सोवियत कानून द्वारा इजाजत नहीं है क्योंकि वह अभी भी 16 वर्ष से कम की है। उसने एक संस्था में प्रवेश लेने का निर्णय किया है।

जैसा अन्तोन का मामला था, जिसे मास्को विश्वविद्यालय की रसायन संकाय से सर्वोत्तम अंक लेकर स्नातक करने के पश्चात् वैज्ञानिक कार्य करने हेतु विश्वविद्यालय में रहने के लिए राजी किया गया वैसा ही निकितिन परिवार की सबसे छोटी बेटी ल्यूबा ने छोटी उम्र में ही अपनी योग्यता का प्रदर्शन किया। उसने सातवीं कक्षा को अपने 13 वर्षीय भाई वान्या के साथ पूरी की, हालाँकि वह ग्यारह वर्ष की भी नहीं हुई थी।

निकितिन परिवार के बच्चों ने परिवार के कड़े नियमों को सीखा है जब और काम कर रहे हो तब कभी भी खाली मत बैठो, पहले मैं, पहले मैं मत कहो, कमज़ोर की सुरक्षा करो, दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को सुनो; और जैसा तुमने ...न में कभी भी कोई जगह मत छोड़ो।

ने अपने बच्चों को यह [illegible] है कि कभी भी किसी भी ...रिक हो [illegible] रो। इस प्रकार यह वह निति [illegible] में 'कार्य ... 'बच्चि, यह ... जिसे हम ... कामनाओं

पर अटल विश्वास।'

बच्चे बड़े हो गये हैं, और निकितिन परिवार अब सेवा-निवृत हो चुका है, परन्तु उन्होंने अपनी शैक्षणिक गतिविधि को बरकरार रखा है। कई युवा माँ-बाप और शिक्षक उनके पास सलाह के लिए आते है और प्रकाशक उनसे बच्चों को पालने में अनेक अनुभव के बारे में लिखने को कहते हैं। इसलिए वे लिख रहे हैं। बोरिस का मुख्य विषय है जन्म से बच्चे के स्वास्थ्य की सुरक्षा व विकास। लेना एक माँ की शैक्षणिक समस्याओं पर एक पुस्तक लिख रही है।

किसी भी देश की सामाजिक व्यवस्था, राज्य प्रणाली का मानवतावाद बच्चों के प्रति उसकी चिंता से जाँचा जा सकता है। सोवियत संघ को सुखी बच्चों का देश किन्हीं कारणों से ही कहा जाता है। राज्य, संस्थान और सार्वजनिक संगठनों ने युवा पीढ़ी की परिचर्या व शिक्षा के लिए समान परिस्थितियों को निर्मित करने में समूचे सार्वजनिक उपभोग कोष का लगभग एक-तिहाई हिस्सा रख छोड़ा है।

प्रतिदिन 125 हजार राजकीय व सामूहिक फार्म के किन्डरगार्टेन और नर्सरी स्कूल बच्चों के लिए अपने द्वार खोलते हैं। राज्य एक बच्चे की परिचर्या हेतु प्रति वर्ष किन्डरगार्टेन में 300 रूबल और नर्सरी स्कूलों में लगभग 400 रूबल व्यय करता है। माँ-बाप नर्सरी स्कूल में रह रहे बच्चे के लिए प्रतिमाह 10 रूबल और किन्डरगार्टेन में एक बच्चे के लिए 50 कोपेक देता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल पूर्व संस्थाओं का शुल्क और कम है। संस्थान, राज्य और सामूहिक फार्म कुछ परिवारों को अपने बच्चों को नर्सरी या किन्डरगार्टेन को नि शुल्क भेजने की इजाजत देता है।

किन्डरगार्टेन में लालन-पालन परिवार के लालन-पालन का पूरक है। प्रत्येक परिवार ऐसी *शासन-पद्धति की स्थापना के योग्य नहीं होता है जो बच्चों के उन्नत* स्वास्थ्य हेतु आवश्यक हो। और बच्चे का समकक्ष साथी के साथ जुड़ने की आवश्यकता सबसे महत्वपूर्ण है। बच्चे के नैतिक गुणों की स्वीकृति बच्चों के सामूहिक में मिलती है। एक मित्र की मदद करके, दया दिखाकर व गलत काम का विरोध करके अपनी योग्यता को बतलाने के कई अवसर आते है।

सोवियत बच्चों की संस्थाएँ पूर्ववर्ती संस्थाओं से मूलत भिन्न हैं। वे अनाथाश्रम या सिर्फ बच्चों की देखभाल करने के लिए माँ-बाप की सुविधा हेतु स्थापित संस्थाएँ नहीं हैं। वे बच्चों को खुशनुमा और ध्यान के वातावरण में बच्चे का स्वागत करते हैं, ज्ञान देते हैं और उन्हें संसार के सौंदर्य से परिचित कराते हैं।

स्कूल पूर्व संस्थाओं के कमरे रोशनीयुक्त व आरामदायक होते हैं, साथ में बच्चों के लिए विशेष रूप से निर्मित फर्नीचर होते हैं। खिलौने, वाद्य यन्त्र व खेल-कूद के उपकरण काफी मात्रा में रहते हैं।

अनेक किन्डरगार्टेन में पेड़ों के साथ बरामदे होते हैं और बच्चे अपना काफी

समय बाहर खेलकर व्यतीत करते हैं। उनमें निपुण शिक्षक हैं जिन्होंने कनकों और बाल-शिक्षण संस्थाओं के विशेष संकाय में स्कूल-पूर्व शिक्षा और शारीरिक बचपन के मनोविज्ञान का अध्ययन किया है।

हर सुबह ये शिक्षक बच्चों का स्वागत करते हैं, जो किन्डरगार्टन में ऐसे आते हैं जैसे यह उनके खुद का घर हो। यह वह स्थान है जो बच्चों के लिए मन-पसन्द व मनोरंजन से भरपूर है। यहाँ उनकी कल्पना को प्रोत्साहन मिलता है, जिससे रचनात्मकता विकसित होती है।

लेनिनग्राद में वोलोडस्की द्राम डिपो का किन्डरगार्टेन इसलिए उल्लेखनीय है क्योंकि वहाँ के सभी बच्चे चित्र बना सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता में जीते लगभग चार सौ पुरस्कार, डिप्लोमा आदि के साथ चार स्वर्ण व चार रजत पदक एक प्रभावशाली उपलब्धि है। एक बार यूनेस्को के प्रकाशक का पोस्टकार्ड पर 6-वर्षीय जाना टट के चित्र को छापने की इजाजत माँगने का पत्र आया। पत्र से कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि इस प्रकार की इजाजत के पत्र प्रकाशन ने किन्डरगार्टेन को कई अवसरों पर भेजे हैं। किन्डरगार्टेन के शिक्षक इस मूल नियम से निर्देशित होते हैं कि कोई भी बच्चा अयोग्य नहीं होता है, कि वे सभी रंग के लिए एक अद्भुत भावना व विचार के साथ जन्म लेते हैं। जो सबसे अधिक आवश्यक है वह है इन बहुमूल्य मानवीय गुणों के अविकसित रहने की इजाजत न देना।

किन्डरगार्टेन का अपने खुद का छोटा आर्केस्ट्रा है। इसके पाठ जब बच्चा तीन वर्ष का होता है तब से शुरू होते हैं। बच्चे संगीत सुनते हैं और चित्र द्वारा अपनी भावना को व्यक्त करते हैं। संगीत उनमें करुणा की भावना को जगाता है और उनकी कल्पना को उत्तेजित करता है।

किन्डरगार्टेन एक महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य सम्पादित करते हैं। वे चाहे बच्चे का परिवार किसी भी सामाजिक स्तर का हो, आरम्भिक अवस्था से ही व्यक्तित्व के निर्माण हेतु समान स्थितियों की ओर प्रवृत्त हैं।

हालाँकि, स्कूल पूर्व लालन-पालन में अन्तर अभी भी रहते हैं। सबसे पहले, शहरों व गाँवों में किन्डरगार्टेन की संख्या में असमानता है। कुछ हद तक यह असमानता ग्रामीण स्त्रियों के काम की प्रकृति द्वारा समझी जा सकती है। क्योंकि सामान्यतः यह मौसमी होता है इसलिए उन्हें अपने बच्चों की देखभाल के बेहतर अवसर मिलते हैं। फिर दादा-दादी भी पास में रहते हैं और बच्चों की देखभाल में मदद देते हैं। ऐसा प्रतीत होगा कि गाँव में किन्डरगार्टेन पूर्णतया आवश्यक नहीं है। लेकिन स्कूल-पूर्व संस्थाएँ, हम फिर से दोहराएँगे, सिर्फ बच्चों की महज देखभाल के लिए नहीं होती हैं, बल्कि वे ग्रामीण व शहरी बच्चों के विकास के लिए समान स्थितियों के निर्माण में एक वृहत भूमिका अदा करती हैं। इसलिए

ग्रामीण क्षेत्रों में किण्डरगार्टेन के जाल की वृद्धि सोवियत समाज के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य है और 11वें व कालान्तर के पंचवर्षीय काल के कार्यक्रम इसके तेज़ी से समाधान करने की कल्पना करते हैं, जो शहरी व ग्रामीण परिवारों के जीवन के मध्य पर्याप्त अन्तरों को खत्म करने हेतु अनिवार्य हैं।

'बच्चों वाले परिवार को राजकीय सहायता में वृद्धि करने के उपाय' पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सोवियत संघ के मन्त्रि-मण्डल का प्रस्ताव कहता है कि अगले कुछ वर्षों के अन्दर कमियों को खत्म करने के उद्देश्य से सामाजिक-आर्थिक विकास की योजनाओं को स्कूल-पूर्व संस्थाओं, स्थायी और मौसमी दोनों में जनता की आवश्यकताओं की पूर्ण सन्तुष्टि के उद्देश्य को प्रतिबिम्बित करना चाहिए। यही सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की मई 1982 की प्लेनरी बैठक में कहा गया है।

निपुण व्यक्तियों के साथ किण्डरगार्टेन, नर्सरी व शिशु-गृह प्रदान करने के लिए 11वें पंचवर्षीय काल में इन संस्थाओं में नियुक्त चिकित्सा नर्सों के लिए 6 घंटे का काम का दिन और 36 दिन की छुट्टी को लागू करने का निर्णय लिया गया, जो पहले किण्डरगार्टेन के शिक्षकों के लिए थी।

वर्तमान पंचवर्षीय काल के दौरान स्कूल-पूर्व संस्थाओं में भोजन पर व्यय को औसतन 10-15% की वृद्धि की और 60 रूबल प्रति व्यक्ति प्रति माह या इससे कम की औसत आय वाले परिवार को नर्सरी स्कूलों, किण्डरगार्टेन व बोर्डिंग स्कूलों को निःशुल्क करने की कल्पना की गयी है।

बच्चों की संस्थाओं के काम के विभिन्न स्वरूप यह दर्शाते हैं कि सोवियत संघ में बच्चों व किशोरों का सार्वजनिक लालन-पालन निरंतर महत्वपूर्ण हो रहा है। यह परिवार के शैक्षणिक प्रभाव को कम नहीं करता है बल्कि इसके विपरीत इसे एक उच्चतर स्तर पर उठाता है।

'जुयेव जुड़वे बच्चे—तात्याना और अनस्तासिया—इक्कीसवीं सदी से मिलने और अक्तूबर समाजवादी क्रांति की 100वीं वर्षगाँठ मनाने वाले हैं। उनकी माँ ओरेखोवो-जुयेवो सूती संस्थान में श्रमिक वेलेन्टीना जुयेवा को अभी भी कानूनन काम में वापस नहीं जाना है (अर्थात्, अपनी इच्छा के अनुसार वह बच्चों के साथ घर पर एक या डेढ़ साल रह सकती है) या वह एक दिन में चार घंटे काम कर सकती है—एक माँ को कम घंटे काम करने का अधिकार है। जब वे थोड़े बड़े हो जाएँगे वह उन्हें नर्सरी और फिर किण्डरगार्टेन ले जाएगी।

मिल ने अनेक नर्सरी व किण्डरगार्टेन बनाये हैं इसलिए बच्चों के लिए पर्याप्त संख्या में जगह है, और नयी इमारतें अब बन रही हैं।

आज संस्थान में 5000 युवकों के साथ तीस बच्चों की संस्थाएँ हैं। जैसा ज्ञात है, किण्डरगार्टेन व नर्सरी स्कूलों की व्यवस्था के लिए व्यय का 80% से

एक सगठित शैक्षणिक प्रणाली को अपनाया है ।

1919 मे कम्युनिस्ट पार्टी की 8वी काग्रेस द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम ने शिक्षा की सोवियत प्रणाली के सिद्धातो को परिभाषित किया है सभी बच्चो के लिए अनिवार्य नि शुल्क शिक्षा, जिसमे उनकी मातृभाषा में और किसी भी धार्मिक प्रभाव से युक्त कक्षाएँ हों, शिक्षा व सामाजिक रूप मे उपयोगी काम के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध, युवा पीढी का सर्वांगिक विकास, व्यवसायिक प्रशिक्षण का आयोजन, स्कूल-पूर्व सस्थाओ के एक जाल का निर्माण, स्वय-पाठ और स्वय-विकास के लिए राजकीय सहायता, जो भी अध्ययन करना चाहे उसके लिए उच्चतर शिक्षा तक आसान पहुँच, छात्रों को आर्थिक सुरक्षा ।

ये सभी सिद्धात क्रियान्वित किए गये हैं ।

सोवियत स्कूल मे बच्चे को सिर्फ पढ़ना, लिखना और विज्ञान के आधारभूतो को सिखाना भर नही है । व्यक्ति-विशेष में सस्कृति के उच्च स्तर को विकसित करना, सामाजिक जागरूकता और नागरिक वयस्कता सोवियत शिक्षा का मूल लक्ष्य है । और यह महज पढ़ाई से अधिक दुरूह कार्य है ।

समाजवादी समाज के निर्माण की प्रक्रिया मे सोवियत राज्य ने पोली-टेक्निकल स्वतत्र सामान्य शैक्षणिक स्कूलो की प्रणाली की स्थापना की है । ये स्कूल सभी बच्चों की पहुँच में हैं चाहे वे किसी भी सामाजिक पृष्ठभूमि या राष्ट्रीय उत्पत्ति के हो। एक सगठित स्कूल प्रणाली सामाजिक रूप मे समरूप समाज के विकास को प्रोत्साहित करती है । सामाजिक स्तर नही बल्कि व्यक्तिगत गुण और ज्ञान श्रमिको, किसानो और बुद्धिजीवियो के बच्चो के व्यवसाय के चुनाव का निर्धारण करता है ।

कई वर्षों पूर्व सोवियत संघ में अनिवार्य सार्वभौम माध्यमिक शिक्षा लागू की गयी है ।

स्कूल प्रणाली के लचीलेपन ने सभी युवजन के लिए शिक्षा की प्राप्ति को सभव बनाया है । एक लडका या लडकी सामान्य माध्यमिक स्कूल मे या एक माध्यमिक विशेष स्कूल (तकनीकी स्कूल) में शिक्षा प्राप्त कर सकता है । वे माध्यमिक व्यवसायिक स्कूल मे प्रवेश पा सकते हैं, या काम करते हुए माध्यमिक सायकालीन स्कूलो मे अध्ययन कर सकते हैं। इन स्कूलों में से किसी से भी अध्ययन पूरा करके वे उच्चतर शिक्षा की एक सस्था मे प्रवेश पा सकते हैं । सोवियत सघ मे कोई भी 'आखिरी' स्कूल नही है, जो पूँजीवादी विश्व में श्रमिकों के बच्चों को कालेजों व विश्वविद्यालयो मे प्रवेश लेने से रोकते हैं ।

सार्वभौम माध्यमिक शिक्षा, जो प्रत्येक के लिए अनिवार्य है और उच्च रूप मे दक्ष शिक्षकों का प्रशिक्षण—ये वे शर्तें हैं, जो सोवियत स्कूल को इसके प्राथमिक कार्य, यथा एक सर्वांगिक विकसित व्यक्ति का निर्माण करना, को पूरा करने मे

[वि]कसित करते हैं।

बच्चे के दैनिक जीवन का अधिकांश भाग स्कूल में बसता है, यह इस तथ्य [...]तों में उसकी गतिविधि का केंद्र है। और, वास्तव में, शिक्षक का ज्ञान व [...]पक दक्षता, अपने विषय के लिए उत्साह और बच्चों को प्यार करने की [...] निर्माण को निर्धारित करता है। सोवियत समाज काम-शिक्षण शिक्षा और [...]क्षणिक प्रक्रिया के संगठन को सुधारने में निहित है। बच्चों की शिक्षा व लालन-[पाल]न में साथ-साथ काम करते हुए लाखों सोवियत शिक्षकों व माँ-बाप ने बहुत [अनु]भव एकत्रित कर लिये हैं। यह अनुभव थोड़ा-थोड़ा करके एकत्रित हुआ है और [पू]रे देश में लोकप्रिय बनाया जाता है।

'एम० अब्दुरसुलोव प्रथम चार कक्षाओं के शिक्षक, स्कूल संख्या 41, [...]को ज़िला, अन्दीजान क्षेत्र के सफलतापूर्ण कार्य अनुभव को लोकप्रिय बनाने' यह उज़बेक शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव का शीर्षक है।

यूँ दिखने में शिक्षक समरूखान अब्दुरसुलोव की पद्धति काफ़ी प्राथमिक [लग]ती है। बच्चे की घर की परिस्थिति को अच्छी प्रकार से जानना पहली आव-[श्यक]ता है। दूसरा सिद्धांत है लालन-पालन व पढ़ाना-लिखाना अविभाज्य हैं [...]ा लालन-पालन के ज्ञान नहीं दिया जा सकता है और दूसरी ओर ज्ञान के [...]य का सभ्य प्रभाव होता है। अन्त में, बच्चे के आत्म-विश्वास, अपनी क्षमताओं [...] विश्वास को बढ़ावा देना आवश्यक है। शिक्षक सामान्य रूप से यह कुछ-न-कुछ [...]तक करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु अब्दुरसुलोव शिक्षा और लालन-पालन [...] तत्वों को एकमात्र सम्पूर्ण में, एक कार्य प्रणाली में संगठित करने में सफल [...]।

इस गाँव के शिक्षक का विश्वास है कि सभी बच्चे सीखने लायक हैं और [अच्छे] या सर्वोत्तम अंक ला सकते हैं। उसने श्रेष्ठ पद्धति की खोज में अपने जीवन [के] 6 वर्ष लगा दिए और पिछले कुछ वर्षों में उसकी कक्षा के एक या दो शिष्य [...]र अंक प्राप्त किए हैं, बाकी सभी को सर्वोत्तम अंक मिले हैं।[1]

अब्दुरसुलोव के शिष्य माध्यमिक स्कूल में अन्य छात्रों (पाँचवीं कक्षा से [आर]म्भ करके) की तुलना में बेहतर हैं, और उनमें से अधिकांश सभी [विष]यों में सर्वोत्तम अंक लाते हैं। और यह उल्लेखनीय है कि ज़िले में अन्य स्कूलों [की तु]लना में स्कूल संख्या 41 से काफ़ी अधिक छात्र उच्चतर स्कूलों में प्रवेश [पाते] हैं।

एम० अब्दुरसुलोव अपने काम में इतने सफल इसलिए हैं क्योंकि वे युवकों के

---

[1] सोवियत स्कूल प्रणाली पाँच-बिन्दु प्रणाली का उपयोग करता है। उच्चतम अंक 5, या 'सर्वोत्तम' है। फिर आता है 4, या 'अच्छा' आदि—सम्पादक।

प्रति सद्भावना प्रदर्शित करते हैं उनमें विश्वास करते हैं और उनके नैतिक विकास के लिए दायित्व की गहरी भावना का अनुभव करते हैं।

"परन्तु यदि आपको नालायक शिष्य मिलें, तो क्या होगा ? ऐसा होता होगा, क्या ऐसा नही होता ?" हमने उनसे पूछा।

"ऐसे मामले आते हैं", उन्होंने जवाब दिया। "जैसे इस बच्चे को लें। पहली कक्षा में यह सभी विषयो को निबाह न सका। पहले तीन महीनो मे तो यह एक सीधी रेखा या एक वृत नही खीच सकता था।"

"तो फिर क्या हुआ ?"

"मैंने इसकी काफ़ी प्रशसा की। हरेक के सामने प्रशसा की। जब सिर्फ हम दोनो अकेले रहे तब भी प्रशसा की। अब वह काफी पहले से एक 'सर्वोत्तम' शिष्य हो गया है। और एक दृढ निश्चयी' '"

अपने छात्रों की प्रशसा करने में शिक्षक बच्चो के लिए अपने स्वाभाविक प्रेम को दिखलाता है।

"जिस प्रकार से इन्होंने इसे आरम्भ किया था उसी प्रकार से विश्वासपूर्वक, आनन्दपूर्वक व सफलतापूर्वक स्कूल की शिक्षा पूरी करते हुए, और समाज मे योगदान करते हुए, जीवन मे सफलतापूर्वक जीते हुए मैं इन्हें देखना चाहता हूँ।" शिक्षक ने कहा।

सोवियत बाल-शिक्षण की मानवतावादी विषय-वस्तु पर जोर देते हुए, एक असाधारण सोवियत शिक्षक वी॰ ए॰ सुखोम्लिन्स्की ने लिखा' 'शिक्षक व बच्चे के मध्य निरन्तर सबध के बिना, दूसरे के विचारो, भावनाओ व अनुभवो के जगत मे परस्पर प्रवेश के बिना शिक्षा के शरीर के रूप में भावनात्मक आधार अविचार्य है। एक सगठित, दोस्ताने सामूहिक, जिसमे शिक्षक न सिर्फ निर्देश देने वाला है बल्कि एक मित्र और एक साथी है, में बच्चो के साथ बहु-पक्षीय भावनात्मक सबध शिक्षा की सवेदनशीलता के विकास के लिए एक प्रमुख स्रोत है।"[1]

सोवियत बाल-शिक्षणशास्त्री हर व्यक्ति मे दया व सवेदना को स्कूल के लिए महत्त्वपूर्ण मानते हैं।

प्राथमिक मानवता के बिना कम्युनिस्ट नैतिकता नहीं हो सकती है। हृदयहीन, सवेदनाशून्य व्यक्ति में उच्च आदर्श अविचार्य हैं।

सुखोम्लिन्स्की ने सिद्ध किया कि बच्चो को प्यार करना ही तात्पर्य नही है, उनके प्रति चिन्ता दर्शाना, यह देखना कि वे स्कूल मे आराम व आनन्द महसूस करें, भी आवश्यक है। वसेली सुखोम्लिन्स्की ने अपना सम्पूर्ण जीवन इस प्यारे

---

1. वसेली सुखोम्लिन्स्की, 'टू चिल्ड्रेन आई गिव माई हार्ट' प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1981, पृ॰ 23

उद्देश्य, यथा बच्चे, स्कूल, सार्वजनिक शिक्षा, में लगा दिया। वह 17 वर्ष की उम्र में शिक्षक बने और बाद में 20 वर्ष से अधिक समय तक अब प्रसिद्ध पव्लीश्की गाँव माध्यमिक स्कूल के डायरेक्टर के रूप में काम किया।

उन्होंने लालन-पालन व शिक्षा पर 30 से अधिक पुस्तकें लिखीं। उनके बाल-शिक्षण संबंधी ग्रंथों को न सिर्फ शिक्षक पढ़ते हैं, बल्कि ऐसे लोग भी पढ़ते हैं, जो व्यावसायिक रूप में विषय के साथ बहुत कम सामान्यता रखते हैं।

सुखोम्लिन्स्की के ग्रंथ को जनता व राज्य द्वारा काफी सराहना मिली वह बाल-शिक्षण विज्ञान की एकेडमी के करेस्पोण्डिंग सदस्य रहे और समाजवादी श्रम के हीरो थे।

सुखोम्लिन्स्की का विश्वास था कि एक व्यक्ति सृजन की क्रिया से नहीं बल्कि यह देखकर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है कि किस प्रकार उसकी सृजनता का उपयोग सत्य, दया व सौंदर्य में हो रहा है। उन्होंने अपने जीवन के 35 वर्ष बच्चों की शिक्षा में लगाए। और उन्होंने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का शीर्षक रखा: "बच्चों को मैं अपना दिल देता हूँ।"

"बच्चों को भली-भाँति जानने के लिए उनके परिवार को—पिता, माँ, भाई, बहिन, दादा और दादी—को जानना चाहिए।" सुखोम्लिन्स्की ने लिखा : "बच्चा परिवार का दर्पण है, जिस प्रकार पानी की एक बूंद में सूर्य का प्रतिबिम्ब दिखता है उसी प्रकार बच्चे में माँ और पिता की नैतिक पवित्रता प्रतिबिम्बित होती है। यह स्कूल व माँ-बाप का काम है कि हर बच्चे को खुशी—बहुपक्षीय खुशी—दे ताकि बच्चा अपनी क्षमताओं को खोज सके, श्रम से प्रेम करना, और रचनात्मक रूप में काम करना सीख सके, अपने चारों ओर के संसार के सौंदर्य का आनन्द उठाने योग्य हो सके और दूसरे के लिए सौंदर्य निर्मित करने योग्य हो सके, दूसरे लोगों को प्रेम करना, प्रेम के योग्य बनाना, बच्चों को वास्तविक मानव बनाने की शिक्षा देना। सिर्फ माँ-बाप और शिक्षकों के सामान्य प्रयास बच्चों को महान खुशी प्रदान कर सकते हैं।"[1]

1973 में स्वीकृत शिक्षा पर सोवियत संघ व संघीय गणराज्यों के विधेयक के आधारभूत' माँ-बाप को स्कूली काम में भाग लेने का अधिकार देता है। माँ-बाप बच्चे के स्कूली जीवन और लालन-पालन पर विचार-विमर्श करते हैं, पाठ्य-क्रम के अतिरिक्त गतिविधियों और स्वास्थ्य-निर्माण कार्य के आयोजन में भाग लेते हैं, स्कूलों व संस्थाओं पर माँ-बाप की कमेटी व कौंसिल में चुनाव करते हैं या चुने जा सकते हैं।

---

1. वसीली सुखोम्लिन्स्की, 'टू चिल्ड्रेन आई गिव माई हार्ट', प्रोग्रेस पब्लिशर्स,

शिक्षित व सुसंस्कृत माँ-बाप स्कूल पर पर्याप्त प्रभाव डालते हैं। वे सोवियत परिवार में निर्मित सकारात्मक प्रवृत्तियों को यथा, भावनात्मक व नैतिक-मनोविज्ञानी सम्बन्धों की समृद्धता, प्रत्येक बच्चे पर एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण, एक वयस्क के व्यक्तिगत उदाहरण का सकारात्मक प्रभाव, स्कूली शिक्षा प्रक्रिया में लागू करते हैं। यह स्कूल सामूहिकों के वातावरण को खुशनुमा बना देता है और बच्चों के वैचारिक व नैतिक विशेषताओं के निर्माण में तथा उनकी भावनाओं के विकास में उनकी भूमिका में वृद्धि करता है।

तमारा शखरोवा, मास्को के निकट ओडिन्त्सोवो माध्यमिक स्कूल संख्या 10 पर कक्षा-साक्षात्कार और इतिहास व सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका, चौथी कक्षा में आरम्भ होने वाले युवाओं की मार्गदर्शिका है। वह हर छात्र के पारिवारिक जीवन में रुचि रखना अपना कर्तव्य समझती है। इस प्रकार बच्चों पर माँ-बाप के प्रभाव को निश्चित करती है, कौन सबसे अधिक अधिकार जमाता है, क्या उनके गृह-कार्य करने हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित की गयी हैं, क्या घर पर अखबार व पत्रिकाएँ आती हैं, परिवार का पुस्तकों के प्रति दृष्टिकोण, क्या बच्चे घरेलू काम-काज में मदद देते हैं, उनका स्वास्थ्य, आदि सिर्फ़ छात्र के व्यक्तित्व और उसके घर के वातावरण को भली-भाँति जानकर ही एक कक्षा-साक्षात्कार माँ-बाप को आवश्यक सिफ़ारिशें दे सकता है। इसीलिए तमारा सदैव माँ-बाप की बैठक की योजना पर विचार करती है, जिसमें अक्सर माँ-बाप अपने अनुभव बतलाते हैं।

80% छात्र अपने खाली समय पर विभिन्न वृत्तों, यथा साहित्य, इतिहास, गणित आदि, में भाग लेते हैं। अधिकांश वृत्त माँ-बाप के नेतृत्व में चलते हैं, जो किसी विशेष क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं। स्कूल अक्सर "पिता, माँ और मैं—एक खिलाड़ी परिवार" नामक खेल-कूद प्रतियोगिताएँ आयोजित करता है। पिछले तीन वर्षों के दौरान स्कूल संख्या 10 पर कोई भी न्यून योग्यता वाला कोई नहीं है। न ही कोई नियमों का उल्लंघन हुआ है।

अनेक युवाओं के लिए स्कूल शब्दतः घर बन जाता है। ऐसे परिवार, जिनमें स्कूल के पश्चात् उनके बच्चों की देखरेख करने वाला कोई नहीं होता है, उनके लिए प्रवर्धित-दिन समूह में रकने की व्यवस्था हो सकती है, जहाँ काम से घर को जब तक माँ-बाप न आ जाएँ तब तक वे शिक्षकों के संरक्षण में रह सकते हैं। यहाँ वे अपने आराम के समय का अधिकांश भाग बिताते हैं, विश्राम करते हैं, अपना भोजन लेते हैं और अपना गृहकार्य करते हैं।

उदाहरण के लिए मास्को में लगभग एक हज़ार स्कूल हैं, जिसमें प्रत्येक में प्रवर्धित-दिन समूह हैं। सामान्यतः इनमें पहली से आठवीं कक्षा के छात्र रहते हैं।

शहर के स्कूलों में एक हज़ार से अधिक खेल-कक्ष और भोजन के पश्चात्

सोने के करीबन 600 कमरे निर्मित किए गये हैं। युवाओ के पास
के कमरे, आधुनिक मशीन के औजारो, उपकरणो व तकनीकी उप
लगभग 3,000 वर्कशाप, 950 से अधिक जिमनेजियम, 1,50
भवन और लगभग 1,000 पुस्तकालय है। प्रवधिन-दिन समूह
शिक्षक है।

स्कूल सख्या 146 मे बच्चे स्वचलित वाहनो को चला या मु
या शौकिया कला, गुट, वृत, समूह और पसदीदा क्लब मे अपने बचे हु
भाग ले सकते है। शिक्षकों के सामूहिक ने बाल-शिक्षण निर्देशन
पायोनियर व कोम्सोमोल स्वय-व्यवस्था को जोडकर एक आराम के
बनाने मे सफलता पायी है। छात्र का समय लगभग इस प्रकार विभाजि
आयुवर्ग पर आधारित-स्कूल का काम 4 से 6 घटे, खाने के लिए सम
लगभग 2 घटा टहलने व खेलने-कूदने का और एक या दो घटा विभिन्न
गतिविधियो मे खर्च होता है।

सोवियत सघ मे युवा पीढ़ी की शिक्षा व लालन-पालन मे जनता क
हिस्सा सक्रिय रूप मे लगा हुआ है।

1921 से ही पार्टी सगठनो ने स्कूल को सस्थान से सम्बद्ध करने
आरम्भ की। उनके मध्य समझौते किए गये सस्थान छात्रो के लिए व्यव
प्रशिक्षण आयोजित करे और स्कूल श्रमिको के मध्य सास्कृतिक व शैक्षणि
आयोजित करे। 1922 मे स्कूलो की सहायता हेतु पहली समितियो की स्
हुई। ये समितियाँ माँ-बाप, सरकारी सस्थाओ व ट्रेड यूनियन एव कोम्सो
सगठनो के प्रतिनिधियो को सगठित करती है। समिति के कार्य मे छात्रो का
मे प्रवेश पर सहायता प्रदान करना, माँ-बाप और जनता से स्कूल की जरूरत
लिए कोष बनाने की याचना करना और माँ-बाप को शिक्षा के तरीके समझा
आते है।

आज युवा पीढ़ी की शिक्षा मे श्रम सामूहिक की भागेदारी एक स्वीकृत मा
दृढ बन चुका है।

सामूहिक समझौते को सम्पन्न करने के नियम, जो अखिल-सघीय केन्द्रीय ट्रे
यूनियन समिति और श्रम व सामाजिक प्रश्नों पर सोवियत सघ राज्य कमेटी द्वारा
अनुमोदित है, अनुबन्ध करते है कि प्रत्येक समझौते मे सस्थानों और श्रमिको के
रिश्तेदारी क्षेत्रों पर शैक्षणिक, सास्कृतिक व शारीरिक सस्कृति पर काम आयोजित
करने मे सस्थान के प्रशासन और ट्रेड यूनियन कमेटी द्वारा वायदा शामिल होना
चाहिए। उनके स्थायी समय को व्यवस्थित कर [illegible]

लगभग सभी बड़े संस्थानों ने बच्चों व किशोरों के लालन-पालन में परिवार व स्कूल को मदद देने को कमीशन नियुक्त कर रखे हैं। इनमें अनुभवी श्रमिक और इंजीनियरिंग व तकनीकी व्यक्ति भी हैं, जो बच्चों के साथ काम करना पसंद करते हैं। कमीशन फ़ैक्टरी ट्रेड यूनियन कमेटी पर बना है। ट्रेड यूनियन कमेटी और इसके कमीशन संस्थान के श्रमिकों के बच्चों के स्कूलों से नियमित रूप से जुड़े हैं। कमीशन लालन-पालन से संबंधित प्रश्नों को कमेटी और श्रमिकों की बैठक में विचार-विमर्श के लिए तैयार और पेश करता है, तथा परिवार के लालन-पालन के अच्छे उदाहरणों को सामूहिक में प्रचारित करता है। बड़े परिवार और जहाँ अकेले माँ बच्चे को पाल रही है, उन पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

कमीशन छात्रों की श्रम शिक्षा और व्यवसायिक रुझान को आसान बनाने में संस्थान पर एक प्रशिक्षण आधार के निर्माण का, छात्रों की कक्षाओं पर दुकानों व प्रभागों के संरक्षण के आयोजन का प्रयास करता है और बच्चों व किशोरों के खाली समय को संगठित करने के लिए सही स्थितियों के निर्माण का उद्यम करता है।

बिरोबिद्जान (यहूदी स्वायत्तशासी क्षेत्र) परिधान फैक्टरी का माध्यमिक स्कूल संख्या 9 के छात्रों के साथ काफी पुराना मैत्री-संबंध है। फ़ैक्टरी के श्रमिक व ऑफ़िस के कर्मचारी स्कूल के प्रशिक्षण-भौतिक आधार को सुदृढ़ करने के लिए काफ़ी कुछ कर रहे हैं। उन्होंने आधुनिक उपकरण के साथ इसके प्रशिक्षण-कक्ष को ठीक-ठाक करने, बनाने व पूर्ति करने में सहायता दी। इसके लिए कोष की व्यवस्था संस्थान द्वारा की गयी है।

श्रमिकों के क्लब पर बच्चों का प्रभाग निर्मित किया गया है। युवा विभिन्न वृत्तों—नृत्य, नाटक, शतरंज, कविता पाठ और शौकिया कला प्रदर्शनी—में भाग लेते हैं। युवा कलाकारों का संस्थान पर सदैव स्वागत होता है। युवा फैक्टरी श्रमिकों के साथ वरिष्ठ शिष्य सामाजिक समारोह व भाषण-माला का आयोजन करते हैं।

छात्र फ़ैक्टरी के प्रशिक्षण-उत्पादन कक्षाओं पर व्यावहारिक कुशलता प्राप्त करते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष 150 वरिष्ठ छात्र तक प्रशिक्षित होते हैं। फोरमैन छात्रों को संस्थान के इतिहास व इसकी परम्पराओं से परिचित कराता है। फ़ैक्टरी के ... न को बढ़ाती है।

... की एक युवा व्यक्ति की इच्छा न सिर्फ उसके ... हित ... भी है। यह महत्वपूर्ण है कि हर ... जनता के लिए अधिकतम लाभ

... व्यवसायों से परिचित कराने के लिए

अनेक सगठन अपने प्रयासों को एकत्रित करते हैं। वे व्यवसायिक ज्ञान हेतु अन्त विभागीय समितियों द्वारा समन्वित होते हैं, जिसमे ट्रेड यूनियन और कोम्सोमोल, व्यवसायिक-तकनीकी प्रशिक्षण सस्थाओं और श्रम सामूहिक के प्रतिनिधि भाग लेते हैं।

किशोरो को व्यवसाय के चुनाव में सहायता देने हेतु स्कूलों पर व्यवसाय-सुझाव दिये जाते हैं। शहरो मे फैक्टरियो पर प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित है और ग्रामीण क्षेत्रो पर छात्र फार्म व श्रम ब्रिगेड व स्कूली जगलात दल का निर्माण किया गया है। हम टिप्पणी करना चाहेगे कि किशोरो के लिए प्रशिक्षण केन्द्र का निरीक्षण चिकित्सक करते हैं।

अनेक श्रम सामूहिक महसूस करते हैं कि युवजन को उनके व्यवसाय चुनने और आवश्यक प्रशिक्षण देने मे मदद करना उनका कर्तव्य है। उदाहरण के लिए ओरेनबर्ग क्षेत्र मे स्कूलो पर हजारो श्रमिक व ऑफिस के कर्मचारी, जो बच्चों के साथ शैक्षणिक कार्य मे भाग लेते हैं, उनके वयस्क मित्र बन जाते हैं, जो बच्चो को रुचिकर व्यवसायो मे निर्देशित करते है और उनके व्यवसाय के काम को निर्धारित करने मे सहायता देते हैं। स्कूल के युवा पायोनियर इकाइयो के नेता के रूप मे काम करते हुए वे युवाओ को अपने प्लाट या फैक्टरी मे ले जाते हैं और अपने व्यवसाय से उन्हे परिचित कराते हैं।

प्रति वर्ष प्लांट, फ़ैक्टरी, निर्माण-स्थल, राजकीय या सामूहिक फार्म पर काम करने नयी पीढ़ी आती है। जब एक युवक या युवती काम करना आरम्भ करते हैं वे (युवक या युवती) 'वयस्क' ससार मे एक नया जीवन आरम्भ करते हैं। काम युवजन को स्वतन्त्रता का, सामाजिक गतिविधि को दर्शाने का अधिकार देता है। सिर्फ काम के द्वारा ही वे सही नागरिक बनते हैं। यह काम है जिसमे एक युवा अपने प्रशिक्षण व ज्ञान का उपयोग करता है, सामूहिक का सदस्य बनता है और अपनी गतिविधि के सामाजिक महत्त्व को जानता है। इसलिए प्रशिक्षक, जो नये श्रमिक को निर्देशन देता है, का व्यक्तित्व व बाल-शिक्षण कुशलता एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

युवा श्रमिक के प्रशिक्षण मे फोरमैन, दल का नेता और उत्पादन के अन्य व्यवस्थापक भाग लेते है। परन्तु वास्तविक प्रशिक्षक वे हैं जिन्हे ट्रेड यूनियन व कोम्सोमोल सगठन युवा श्रमिक की देखभाल हेतु काम सौंपते हैं। वे उसके साथ अनौपचारिक सम्बन्ध स्थापित करने का, उसका विश्वास पाने का, और उसे सहायता प्रदान करने का प्रयास करते हैं। और यह सहायता महज व्यवसायिक काम तक सीमित नही रहती है। एक श्रमिक-प्रशिक्षक विशेष व्यक्तिगत गुणों के साथ अत्यधिक दक्ष व ज्ञानवान व्यक्ति होता है। वह युवा श्रमिक को काम को समझने व प्यार करने का प्रशिक्षण देता है और सिखाता है, उसके चरित्र के निर्माण मे

अनेक सगठन अपने प्रयासो को एकत्रित करते हैं। वे व्यवसायिक
विभागीय समितियों द्वारा समन्वित होते हैं, जिसमें ट्रेड यूनियन
व्यवसायिक-तकनीकी प्रशिक्षण सस्थाओं और श्रम सामूहिक
लेते हैं।

किशोरो को व्यवसाय के चुनाव में सहायता देने हेतु स्कूलों
सुझाव दिये जाते हैं। शहरों में फैक्टरियो पर प्रशिक्षण केन्द्र
ग्रामीण क्षेत्रों पर छात्र फार्म व श्रम ब्रिगेड व स्कूली जगलात दल का
गया है। हम टिप्पणी करना चाहेंगे कि किशोरों के लिए प्रशिक्षण के
क्षण चिकित्सक करते हैं।

अनेक श्रम सामूहिक महसूस करते हैं कि युवजन को उनके
और आवश्यक प्रशिक्षण देने मे मदद करना उनका कर्तव्य है। उदाह
ओरेनबर्ग क्षेत्र में स्कूलो पर हजारों श्रमिक व ऑफिस के कर्मचारी,
साथ शैक्षणिक कार्य में भाग लेते हैं, उनके वयस्क मित्र बन जाते हैं, जो
रुचिकर व्यवसायों में निर्देशित करते हैं और उनके व्यवसाय के काम को
करने में सहायता देते हैं। स्कूल के युवा पायोनियर इकाइयो के नेता
काम करते हुए वे युवाओं को अपने प्लाट या फैक्टरी में ले जाते हैं और अप
साय से उन्हे परिचित कराते हैं।

प्रति वर्ष प्लांट, फैक्टरी, निर्माण-स्थल, राजकीय या सामूहिक फार्म
करने नयी पीढी आती है। जब एक युवक या युवती काम करना आरम्भ क
वे (युवक या युवती) 'वयस्क' ससार में एक नया जीवन आरम्भ कर
काम युवजन को स्वतत्रता का, सामाजिक गतिविधि को दर्शाने का अधिकार
है। सिर्फ काम के द्वारा ही वे सही नागरिक बनते हैं। यह काम है जिसमे
युवा अपने प्रशिक्षण व ज्ञान का उपयोग करता है, सामूहिक का सदस्य बनत
और अपनी गतिविधि के सामाजिक महत्त्व को जानता है। इसलिए प्रशिक्षक,
नये श्रमिक को निर्देशन देता है, का व्यक्तित्व व बाल-शिक्षण कुशलता एक महत्
पूर्ण भूमिका अदा करती है।

युवा श्रमिक के प्रशिक्षण में फोरमैन, दल का नेता और उत्पादन के अग्र
व्यवस्थापक भाग लेते हैं। परन्तु वास्तविक प्रशिक्षक वे हैं जिन्हें ट्रेड यूनियन
कोम्सोमोल सगठन युवा श्रमिक की देखभाल हेतु काम सौंपते हैं। वे उसके साथ
अनौपचारिक सम्बन्ध स्थापित करने का, उसका विश्वास पाने का, और उसे सहा-
यता प्रदान करने का प्रयास करते हैं। और यह सहायता महज व्यवसायिक काम
तक सीमित नहीं रहती है। एक श्रमिक-प्रशिक्षक विशेष व्यक्तिगत गुणों के साथ
अत्यधिक दक्ष व [illegible]

प्रभाव डालता है, उसे विवेकशील व आत्मानुशासन वाला व्यक्ति बनने में प्रोत्साहित करता है, सामूहिक को घर जैसा समझना सिखाता है और सामाजिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए उसे प्रेरित करता है।

सामान्यतः प्रशिक्षक श्रमिकों से चुने जाते हैं, जिन्हें अपने साथियों से आदर मिलता है और जिन्हें जनता के साथ काम करने का अनुभव है।

श्रमिक-प्रशिक्षकों का आरम्भ सातवें दशक में समाजवादी जीवन-पद्धति द्वारा हुआ, और अब देश में करीबन 30 लाख प्रशिक्षक हैं। एक अनुभवी श्रमिक युवा-श्रमिक या कर्मचारी सामूहिक में प्रवेश ले, व्यवसाय सीखे और नवीन सामाजिक वातावरण में घुल-मिल जाए इसके लिए स्वेच्छापूर्वक अपना ज्ञान, शक्ति, अनुभव, व समय लगाता है।

समाजवाद ने युवजन के उत्साह, शक्ति व ज्ञान के विनियोग हेतु उद्यम के विशाल क्षेत्र को सामने कर दिया है। समाजवादी समाज की रुचि इसमें है कि प्रत्येक युवक या युवती यह महसूस करे कि वह अधिकार पाने की स्थिति में है, कि वे देश, संस्थान व सामूहिक के मामलों में लीन हो गये हैं। सोवियत जन की पुरानी पीढ़ी के पास, यथा, अक्तूबर क्रांति, गृह-युद्ध व 1941-45 के महान देशभक्ति युद्ध में भाग लेने वाले और वे जिन्होंने पिछले पचवर्षीय काल के वर्षों के दौरान श्रम पर अपना जीवन न्यौछावर कर दिया, जो वास्तव में एक साहसिक कार्य था, विश्वास करने के पर्याप्त कारण हैं कि भावी पीढ़ी बेहतर, कम्युनिस्ट भविष्य के लिए संघर्ष को जारी रखेगी। युवजन सामान्यतः वह काम करने का प्रयास करते हैं जहाँ उनकी अधिक आवश्यकता होती है जैसे नये कस्बों के निर्माण में; बोने और फसल काटने में, नवीन, व्यावहारिक तकनीकों के निर्माण में और अर्थव्यवस्था में इनको आरम्भ करने में; नवीन, कम्युनिस्ट सामाजिक सम्बन्धों और कम्युनिस्ट नैतिकता के सिद्धांतों का प्रतिदिन के जीवन में स्वीकृति के लिए। उन्हें ये बातें परिवार, स्कूल और श्रम-सामूहिक में सिखाई जाती हैं और यह उनके जीवन का नैतिक नियम बन रहा है।

निष्कर्ष

आठवें दशक मे समाजवादी समाज की सामाजिक प्रगति को सुनिश्चित करने वाले महत्त्वपूर्ण उपायो को परिभाषित करने मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वी काग्रेस ने "एक प्रभावशाली जनसाख्यिकी नीति को अपनाने, समाजवादी समाज के प्रमुख केन्द्र के रूप मे परिवार के दृढीकरण मे विकास करने और मातृत्व के साथ श्रम व सामाजिक गतिविधियो मे सक्रिय भागेदारी को सयुक्त करने मे स्त्रियो के लिए बेहतर स्थितियो को सुनिश्चित करने, समाज के व्यय पर बच्चो व अपग के निर्वाह को सुधारने ..."[1] की आवश्यकता का सकेत किया है।

परिवार सदा से सोवियत राज्य की चिंता का विषय रहा है और अभी भी है, इसलिए पारिवारिक जीवन के गम्भीर, प्रगतिशील परिवर्तन भी चिंता के विषय हैं। विकसित समाजवाद की अवस्था पारिवारिक-विवाहित सम्बन्धो के सभी पहलुओ के अधिक सुधार के लिए नये अवसरो का निर्माण करती है। इस सम्बन्ध मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की पार्टी काग्रेस को रिपोर्ट ने नोट किया "हमारे पास व्यक्ति-विशेष के समूचे विकास के लिए वृहत भौतिक व वैचारिक क्षमताएं है, और हम इन अवसरो को निरतर बढाते जाएंगे। हालांकि यह महत्त्वपूर्ण है कि हरेक व्यक्ति इन्हें बुद्धिमानी से उपयोग के योग्य होना चाहिए। आगे चलकर यह व्यक्ति-विशेष की रुचियो व आवश्यकताओ पर निर्भर रहना है। इस कारण से पार्टी अपनी सामाजिक नीति के प्रमुख लक्ष्य के रूप मे इन रुचियो व आवश्यकताओ को सक्रिय, अर्थपूर्ण आकार देती है।"[2]

जनता परिवार मे रहती है और इसीलिए सोवियत सघ की उपरोक्त सामा-[illegible] नीति के कार्यान्वित परिवार की सक्रिय भागेदारी पर निर्भर रहती है। और सोवियत सघ की वास्तविकता है।

---

[1] ...डॉक्यूमेन्ट्स एण्ड रेसोल्यूशंस, द 26थ काग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ ... सोवियत यूनियन, नोवोस्ती प्रेस एजेंसी पब्लिशिंग हाउस, मास्को, 1981, ...• 164

[2] ...ही, पृ• 82

समाज और परिवार द्वारा भावी पीढ़ी में कौन-सी रुचियाँ व आवश्यकताएँ निर्मित की जाती हैं और किस हद तक उनके प्रयास सफल होते हैं यह प्रश्न ही, हमारे विचार से, समाजवादी व पूंजीवादी प्रणालियों को मानसिक व दो भिन्न प्रकार—सार्वजनिक और व्यक्तिगत—पर आधारित हैं के अन्तर्गत इन दो परिवार के मध्य अन्तर को समझने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अनेक शोधकर्ता और साधारण ढंग से सोचने वाले लोग प्राथमिक रूप से समान घटनाओं व तथ्यों को, जो समाजवाद और पूंजीवाद के अन्तर्गत परिवार के विकास को चित्रित करते हैं, देखने में प्रवृत्त होते हैं। ऐसी समानताएँ, वास्तव में, हैं। दोनों समाजों के परिवार सिर्फ माँ-बाप व बच्चों में सीमित होकर छोटे हो रहे हैं। क्यों? स्पष्ट शहरी अर्थव्यवस्था के विशेषकर आवास-सामुदायिक अर्थ-व्यवस्था के विकास द्वारा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की गयी है। पूंजीवादी और समाजवादी समाजों दोनों में विशिष्ट संस्थानों की सेवाओं के उपयोग द्वारा परिवार ने अपने घरेलू काम को 'कम' कर लिया है। फिर, दोनों प्रणालियों के अन्तर्गत तलाकों की संख्या बढ़ रही है। यह यद्यपि अप्रिय है फिर भी कोई भी समाज इसमें विश्वास नहीं करता है कि इसे परिवार की स्वतन्त्र रचना में हस्तक्षेप करना चाहिए। हम आज के संसार के समस्त विकसित देशों में परिवार की अन्य समानताओं का उदाहरण दे सकते हैं।

परन्तु ध्यान से देखने पर अधिक महत्वपूर्ण घटनाएँ दिखती हैं - भिन्न सामाजिक अभिमुखता, मूल्य, आचरण के प्रतिमान, जीवन-पद्धति आ एवं आधारभूत तथ्य—सामाजिक प्रणालियों में भिन्नता—से उत्पन्न हुई है। बुर्जुआ समाज में एक परिवार व्यक्ति को प्रतिस्पर्द्धा के दुरूह संसार में अस्तित्व हेतु इसके सदस्यों की स्थायी सामाजिक स्थिति की प्राथमिक गारंटी के रूप में पारिवारिक सम्पत्ति का संचय सिखाता है। एक समाजवादी समाज, जैसा हम देख चुके हैं, ऐसी चिन्ता से बचा हुआ है। समाजवाद के अन्तर्गत सामाजिक स्थिति की प्रमुख गारंटी व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सार्वजनिक सम्पत्ति है। अतः समाजवादी परिवार की प्रमुख चिन्ता सामाजिक रूप से लाभदायक उद्यमों में, सामाजिक रूप से संगठित श्रम में सक्रिय भागेदारी की भावना से इसके बच्चों का लालन-पालन करना है। इस मूल विवाद से नैतिक आदर्शों में, समाज और परिवार में स्त्रियों की भूमिका की समझ में, परिवार और बच्चों के सार्वजनिक लालन-पालन के प्रति दृष्टिकोण में, और विवाह के प्रति दृष्टिकोण आदि में अन्य अन्तर उत्पन्न होते हैं।

एक समाजवादी परिवार राजकीय नीति में, व्यक्ति-विशेष और समाज के हितों में व्यक्ति की विशिष्टताओं व आवश्यकताओं के उद्देश्योन्मुख निर्माण में एक सक्रिय भागीदार है। यह बच्चों में निर्भरता, लोभ, व्यवसायवाद आदि की ओर किसी भी प्रवृत्ति को निरुत्साहित करने का प्रयास करता है। यह मानवतावाद

श्रम के प्रति प्रेम, ईमानदारी, कर्तव्य की भावना, देशभक्ति, अन्तर्राष्ट्रवाद
प्रोत्साहित करता है। समाजवाद के अन्तर्गत परिवार को सुदृढ करने का अर्थ
मानव सम्बन्धो की संस्कृति को बढाना, उनकी आध्यात्मिकता की वृद्धि करना
अर्थात् शोषण, दमन व असमानता से स्वतन्त्र समाज का दशको से अधिक के
अस्तित्व से सोवियत परिवार मे बनी स्वस्थ, अच्छी परम्पराओं का विकास
करना।

परिवार की मजबूती के कार्य के बारे मे कहते हुए हमारा आशय इसके टूटने
को रोकने से कही अधिक है। हम परिवार के विकास, मानवीय गतिविधि के
विराट क्षेत्रो मे एक मे प्रगतिशील रूपान्तरणो को सामान्य प्रक्रिया से सरोकार
रखते हैं। इस क्षेत्र मे अनेक उपलब्धियाँ हुई हैं, जिन्हे बरकरार रखना व मजबूत
करना है, और साथ मे कई समस्याएँ भी हैं, जो समाधान का इतजार कर रही हैं।
सोवियत सघ मे जीवन के कई विशिष्ट लक्षण है, जो समाजवादी जीवन-पद्धति
की बृहत् अवधारणा मे एकाकार हो गये है। 1917 से, जब महान अक्तूबर
समाजवादी क्रान्ति हुई थी, व्यतीत होने वाला समय दर्शाता है कि विकास की
कठिनाइयो व दुरूहताओ के बावजूद इस प्रकार की जीवन-पद्धति परिवार, बच्चो व
जनता के हितो के अनुरूप है।

□□